वाणी

वर्ष : 39 अंक 145 जून 2025

सेनाओं को समर्पित अंक

पत्रिका पढ़ने के लिए, क्यूआर कोड स्कैन करें

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
तिमाही गृह पत्रिका

गतिविधियाँ

26 जून 2025 को **"राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह"** के दौरान बैंक द्वारा प्रकाशित **"साहित्यकार महाकुंभ"** पुस्तक का विमोचन करते हुए केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री **माननीय अमित शाह जी** एवं साथ में उपस्थित हैं बैंक के एमडी व सीईओ **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव**

मदुरै में आयोजित एफ़पीओ कॉन्क्लेव के दौरान अमूल डेयरी इंडिया के कार्यपालक **श्री गोपाल शुक्ला** को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए बैंक के एमडी व सीईओ **श्री अजय कुमार श्रीवास्तव**

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक की तिमाही गृह पत्रिका

वाणी

वर्ष : 39 अंक 145 जून 2025

संदेश

प्रबन्ध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश 3
कार्यपालक निदेशक का संदेश 4
कार्यपालक निदेशक का संदेश 5
महा प्रबन्धक का संदेश 6

संपादकीय

वैश्विक मंच और भारत 7

विशेष आलेख

राणा सांगा का बलिदान 8
भारतीय वायु सेना की शौर्य गाथा 12
हिंदी भाषा और ब्रज भाषा: एक सांस्कृतिक और भाषायी समन्वय 14
योग: आध्यात्मिकता की ओर एक कदम 15
ऑपरेशन सिंदूर 18
परमवीर चक्र 24
राजभाषा हिंदी के 50 वर्ष 35
सौभाग्य का प्रतीक सिंदूर और ऑपरेशन सिंदूर: संबंध और महत्व 38
वर्तनी और व्याकरण 41
सहकारिता से सशक्तिकरण 44
अग्निवीर (देश सेवा की नई पहल) 47
विटामिन डी की कमी और कैंसर 49
भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) सफलता और रिश्तों की कुंजी 50
बीएसएफ: भारत की रक्षा करने वाली अदृश्य दीवार 54
एल्बर्ट एक्का: वीरता और बलिदान की अमर गाथा 56

बैंकिंग व अन्य लेख

विदेशी मुद्रा –परिभाषा एवं बाजार 10
खेती को बचाइए, भविष्य को संवारिए: हरित भारत की ओर कदम 22
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर: राष्ट्र निर्माण के सच्चे सारथी 33
घरों और कार्यालयों के लिए सौर रूफटॉप 45
बैंकिंग में अनुपालन की भूमिका 52

ग़ज़ल

इबादत 9

फोटो फ़ीचर

नराकास से प्राप्त पुरस्कार 29
"राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह" के उपलक्ष्य में बैंक द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी की झलकियां 30-31
विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित आइओबी प्रवीण परीक्षा की झलकियाँ 32

विविधा

हंसी की फुलझड़ियाँ 23
ज्ञान के मोती 40
शब्द-शब्दांतर 57
राजभाषा प्रश्नोत्तरी 58
प्रतिस्पन्दन 59-60

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
की तिमाही गृह पत्रिका

वाणी

वर्ष : 39 अंक 145 जून 2025

मुख्य संरक्षक
अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक
जयदीप दत्ता रॉय
कार्यपालक निदेशक

संरक्षक
धनराज टी
कार्यपालक निदेशक

परामर्शदाता
नितेश कुमार सिन्हा
महा प्रबन्धक

संपादक
कृष्ण कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक

तुम वहन कर सको जन-मन में मेरे विचार !
वाणी मेरी चाहिए तुम्हें क्या अलंकार ?

संपादन सहयोग
नगेन्द्र कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

संपादन सहयोग
शुभम दीक्षित
प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

मुद्रक
कृष्णराज प्रिंटर्स
36 देवराजन स्ट्रीट, रॉयपेट्टा
चेन्नै 600 014, तमिलनाडु
दूरभाष : 044-28481125

वाणी में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं ।
बैंक का इससे सहमत होना ज़रूरी नहीं है ।

पत्र व्यवहार का पता
इण्डियन ओवरसीज़ बैंक
राजभाषा विभाग, केंद्रीय कार्यालय,
763 अण्णा सालै, चेन्नै 600002
फैक्स : 044-28551618
दूरभाष : 044-28519572
ई-मेल : official@iobnet.co.in

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश

प्रिय आइओबियन्स,

'वाणी' के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए मुझे हमेशा हर्ष की अनुभूति होती है । इस पत्रिका के जरिए राजभाषा विभाग की गतिविधियों सहित बैंकिंग क्षेत्र में हो रहे नित्य नए परिवर्तन विषयक आलेखों को पढ़ना एक सुखद एहसास है । मुझे खुशी है कि हमारी गृह पत्रिका रचनाकारों को अपनी भावनाओं एवं संवेदनाओं को हिंदी में अभिव्यक्त करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान कर रही है ।

हिंदी सिर्फ संघ की राजभाषा ही नहीं, बल्कि वह हमारे राष्ट्र की आत्मा भी है । हमारी जड़ें, परंपराएं, इतिहास, पहचान और संस्कृति, भाषा से अलग होकर पनप ही नहीं सकती । हर विकसित राष्ट्र अपनी भाषा में समृद्धि के सभी आयाम को समेटे हुए है । इसके जीवंत उदाहरण हैं - फ्रांस, जर्मनी और जापान । देश के प्रशासनिक कार्य को सुचारू रूप से चलाने और भाषागत कठिनायों को दूर करने के लिए 26 जून 1975 को गृह मंत्रालय के अधीन राजभाषा विभाग का गठन किया गया । कई उतार-चढ़ावों और उपलब्धियों को हासिल करते हुए इस वर्ष राजभाषा विभाग ने अपनी अनवरत गौरवशाली यात्रा के 50 वर्ष पूरे कर लिये। 26 जून 2025 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने अपने स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया । इस आयोजन में देश भर से लगभग 8500 हिंदी सेवियों और विद्वानों ने प्रतिभागिता की । यह समारोह हमारे बैंक के लिए भी बेहद खास रहा । मुझे यह उल्लेख करते हुए बहुत खुशी हो रही है कि इस स्मरणीय अवसर पर हमारे बैंक द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'साहित्यकार महाकुंभ' का विमोचन केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह जी के कर कमलों से किया गया । वह क्षण मेरे लिए बेहद रोमांचित करने वाला था । इस पुस्तक में विभिन्न राज्यों से कुल 52 भारतीय साहित्यकारों के योगदान को संकलित किया गया है । पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों को ढेर सारी बधाईयाँ ! साथ ही मेरी शुभकामना है कि आप हिंदी भाषा की समृद्धि और साहित्य रचना में इसी तरह अपना योगदान देते रहें ।

जून माह पर्यावरण की दृष्टि से भी काफी विशेष है । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हमने 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया । आज वैश्विक स्तर पर प्राकृतिक आपदा, जलवायु परिवर्तन आदि विषयों पर गंभीर चिंतन-मनन किया जा रहा है । हमारे प्रधानमंत्री ने ग्लासगो, स्कॉटलैंड में आयोजित जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन के दौरान भारत की जलवायु कार्य-योजना के पंचामृत तत्वों को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया, यानी "2030 तक 500 गीगावॉट की गैर-जीवाश्म ईंधन ऊर्जा क्षमता को प्राप्त करना; 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा के माध्यम से अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का कम से कम आधा हिस्सा प्राप्त करना; 2030 तक कार्बन उत्सर्जन को एक बिलियन टन तक कम करना; 2030 तक कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत से कम करना; और अंततः 2070 तक नेट-जीरो उत्सर्जन लक्ष्य प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करना ।" पृथ्वी एवं पर्यावरण की सुरक्षा हम सभी की साझा जिम्मेदारी है । इस दिशा में बैंकर होने के नाते हमें अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है । आप अवगत हैं कि बैंक में ग्रीन डिपॉजिट उत्पाद लाया गया है । यह एक विशेष प्रकार का उत्पाद है, जिसका उद्देश्य ग्रीन डिपॉजिट से प्राप्त फंड को सिर्फ ग्रीन फायनेंस में लगाना है । नवीकरणीय ऊर्जा, अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छ परिवहन आदि से संबंधित परियोजनाओं को ग्रीन फायनेंस के तहत फंडिंग की जानी है । सभी शाखा प्रबंधक / कार्यालय प्रमुख इन उत्पादों का प्रचार-प्रसार करें और जन जागरूकता बढ़ाएं ।

शुभकामनाओं सहित,

अजय कुमार श्रीवास्तव
प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यपालक अधिकारी

एमडी व सीईओ महोदय को सुनने के लिए,
क्यूआर कोड स्कैन करें

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय सहकर्मियो,

"योगः कर्मसु कौशलम्"

भगवदगीता से उद्धृत इस श्लोक का अर्थ है - "कर्मों में कुशलता ही योग है" । योग के अभ्यास से व्यक्ति अपने कार्यों को अधिक कुशाग्रता और दक्षता के साथ करता है । योगाभ्यास मानसिक शांति और शारीरिक नियंत्रण के लिए अनिवार्य है । योग में सूर्य नमस्कार का विशेष महत्व है । सूर्य नमस्कार के सभी 12 आसन हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद हैं। यह शरीर को ऊर्जावान बनाने, तनाव को कम करने और एकाग्रता बढ़ाने में मदद करते हैं। योग के नियमित अभ्यास, जीवन शैली में सुधार, एवं दिनचर्या को संयमित करके, कोई भी व्यक्ति खुशहाल तरीके से जीवन निर्वाह कर सकता है । योग की उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई और आज पूरा विश्व योगमय हो चुका है । योग की महत्ता, व्यापकता, विश्वपटल पर उसकी प्रसिद्धि और उससे होने वाले शारीरिक एवं मानसिक लाभ को देखते हुए यूएन ने पहली बार 21 जून 2015 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया और प्रतिवर्ष 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की । आज सारा विश्व योग दिवस मना रहा है । हम गर्वान्वित हैं कि हमारी संस्कृति एवं परंपरा को विश्व सहर्ष स्वीकार कर रहा है । हर भारतीय को गर्व है कि हमने विश्व को योग दिया । हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी सभी देशवासियों की तरह हमारे बैंक ने भी उत्साह एवं उमंग के साथ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया । इस अवसर पर स्टाफ सदस्यों द्वारा योग के विभिन्न आसनों का अभ्यास किया गया ।

साथियो, आज के दौर में यह आवश्यक है कि समय प्रबंधन किया जाए । समय प्रबंधन के जरिए उत्पादकता व एकाग्रता में वृद्धि, तनाव में कमी, कार्य-जीवन में संतुलन, लक्ष्य की प्राप्ति, निर्णय लेने की क्षमता एवं आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी होती है । वर्क-लाइफ बैलेंस को बनाए रखने के लिए, हमारे पास पूरे दिन की दिनचर्या मौजूद होनी चाहिए । हर कार्य के लिए समुचित समय का आबंटन अनिवार्य है । समय प्रबंधन का सबसे सहज एवं आसान तरीका है - किये जाने वाले दैनंदिन कार्यों को एक पन्ने पर लिखना और उसके मुताबिक कार्य-निष्पादन करने के लिए प्रयास करना । साथ ही, दिन के अंत में किये गये कार्यों की समीक्षा भी की जानी चाहिए । कुछ दिनों के उपरांत यकीनन आपको अपनी कार्यशैली में सुधार दिखेगा ।

जून तिमाही हमारे राजभाषा विभाग के लिए भी अविस्मरणीय रहा । बैंक द्वारा प्रकाशित 'साहित्यकार महाकुंभ' पुस्तक का विमोचन 26 जून 2025 को भारत मंडपम में 'राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह' के अवसर पर हमारे एमडी व सीईओ महोदय की उपस्थिति में केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह जी के कर कमलों से किया गया । निस्संदेह यह बैंक के लिए प्रतिष्ठा की बात है । इस तरह का विमोचन हमारे बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की मजबूत स्थिति को दर्शाता है । इस प्रकाशन में रचनात्मक सहयोग देने वाले सभी स्टाफ सदस्यों को हार्दिक बधाई ! राजभाषा विभाग से आगे भी अपेक्षा रहेगी कि वे इस तरह के उत्कृष्ट प्रकाशन का कार्य अनवरत रूप से जारी रखेंगे ।

शुभकामनाओं सहित,

जयदीप दत्ता राय

जयदीप दत्ता रॉय
कार्यपालक निदेशक

कार्यपालक निदेशक का संदेश

प्रिय साथियो,

विगत तिमाही कई सुखद अनुभूतियों से भरी रही । हमें अपने नियामक वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार से वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु "ग" क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार की प्राप्ति तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा भारत मंडपम में आयोजित 'स्वर्ण जयंती समारोह' के दौरान केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह जी के करकमलों से "साहित्यकार महाकुंभ" पुस्तक का विमोचन, इस बात का प्रमाण है कि हम हर क्षेत्र में और हर मंच पर श्रेष्ठ प्रदर्शन कर सकते हैं, आवश्यकता है तो बस सतत रूप से अपने लक्ष्य साधने के लिए कदमताल करते रहने की ।

विगत माह में पर्यावरण दिवस और योग दिवस दो ऐसे महत्वपूर्ण अवसर थे जो हमें प्रकृति और स्वयं के साथ गहरा संबंध स्थापित करने का संदेश देते हैं । हालाँकि ये दोनों अलग-अलग तिथियों पर मनाए जाते हैं, पर इनके मूल में एक गहरा जुड़ाव है । एक ओर योग, हमें शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहने की प्रेरणा देता है तो वहीं दूसरी ओर, पर्यावरण दिवस हमें अपनी पृथ्वी के स्वास्थ्य और संरक्षण के महत्व को याद दिलाता है । ये दोनों दिवस हमें अपनी जीवन शैली पर विचार करने और ऐसे निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो एक बेहतर कल की संभावनाओं की ओर पहल करते हों । फिर चाहें वे निर्णय हमारे अपने परिवार से संबन्धित हों अथवा हमारे अपने परिवेश से ।

साथियो, स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का वास होता है, आज की तेज़-तर्रार दुनिया में, जहाँ तनाव और व्यस्तता हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गई है, योग शारीरिक और मानसिक कल्याण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है । यह केवल आसनों का एक समूह नहीं है; यह एक समग्र अभ्यास है जो मन, शरीर और आत्मा को एक साथ लाता है । बैंकिंग एक ऐसा पेशा है जहाँ हम लगातार दबाव, लंबी कार्य अवधि और ग्राहकों की अपेक्षाओं का सामना करते हैं । ये कारक अक्सर तनाव, थकान और बर्नआउट का कारण बन सकते हैं । यहीं पर योग का महत्व और भी बढ़ जाता है। बैंकिंग में उच्च दबाव वाले माहौल में तनाव एक आम बात है । योग की श्वास तकनीकें (प्राणायाम) और ध्यान तनाव के स्तर को प्रभावी ढंग से कम करने में मदद करते हैं, जिससे हम शांत और केंद्रित रह पाते हैं जो अंततः वित्तीय निर्णय लेने में स्पष्टता और सटीकता के रूप में परिणामित होता है ।

बैंक में हम अपने कर्मचारियों के स्वास्थ्य और कल्याण को महत्व देते हैं। हमारा मानना है कि एक स्वस्थ कार्यबल अधिक उत्पादक, प्रेरित और संतुष्ट होता है । इसी भावना के साथ, हम आपको योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं । चाहे वह सुबह के कुछ मिनटों का ध्यान हो या शाम का एक पूर्ण योग सत्र, हर छोटा प्रयास मायने रखता है । आइए, इस अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को महज एक दिवसीय औपचारिकता न बनाते हुए इसे अपनी दैनिक दिनचर्या में शामिल करें, इसका नित्य अभ्यास करने का संकल्प लें और इसके अनगिनत लाभों का अनुभव करें । यह हमारी व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता दोनों के लिए महत्वपूर्ण है । कितना तो सटीक ही कहा है आधुनिक योग के जनक कहे जाने वाले श्री बी.के.एस. अयंगर ने "शरीर की लय, मन की धुन और आत्मा का सामंजस्य जीवन की सिम्फनी बनाते हैं।"

सादर,

धनराज

धनराज टी
कार्यपालक निदेशक

महा प्रबंधक का संदेश

साथियो,

वाणी के नवीनतम अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करते हुए बेहद हर्ष की अनुभूति हो रही है । मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमें वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार द्वारा वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा नीति और कार्यों के श्रेष्ठ निष्पादन हेतु "ग" क्षेत्र के अंतर्गत प्रथम पुरस्कार की प्राप्ति हुई जिसके लिए आप सभी बधाई एवं प्रशंसा के पात्र हैं । उपर्युक्त के साथ ही राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित 'स्वर्ण जयंती समारोह' के दौरान बैंक द्वारा प्रकाशित "साहित्यकार महाकुंभ" पुस्तक का विमोचन केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह द्वारा किया गया। उपर्युक्त प्रकाशन के समय बैंक के एमडी व सीईओ महोदय मंच पर उपस्थित थे । यह बैंक के लिए निश्चय ही गर्व की बात है । मैं इस प्रकाशन में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान करने वाले स्टाफ सदस्यों को साधुवाद देता हूँ ।

आज के तेज़ी से बदलते वित्तीय परिदृश्य, जहाँ नवाचार और विनियमन दोनों एक साथ गतिशील हैं, में बैंक की पत्रिका के रूप में वाणी की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है । यह पत्रिका न केवल स्टाफ सदस्यों के बीच सूचना का स्रोत है, बल्कि यह विचारों के आदान-प्रदान, अनुभवों को साझा करने और उद्योग के भविष्य को आकार देने वाले संवादों को बढ़ावा देने का एक महत्वपूर्ण मंच भी है । मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका बैंकिंग क्षेत्र को आगे बढ़ाने और एक मजबूत, अधिक टिकाऊ और समावेशी वित्तीय प्रणाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देती रहेगी ।

हम इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में प्रवेश कर चुके हैं, बैंकिंग क्षेत्र अभूतपूर्व चुनौतियों और अवसरों का सामना कर रहा है । तकनीकी प्रगति, विशेष रूप से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), मशीन लर्निंग (एमएल) और ब्लॉकचेन, वित्तीय सेवाओं के वितरण और उपभोग के तरीके को मौलिक रूप से बदल रही हैं । ये प्रौद्योगिकियाँ न केवल दक्षता और ग्राहक अनुभव को बढ़ा रही हैं, बल्कि वे नए व्यावसायिक मॉडल के द्वार भी खोल रही हैं । लेकिन यह बात भी ध्यान रखने योग्य है कि बदलती तकनीक बढ़ते हुए खतरे भी लेकर आती है । इसी क्रम में तकनीक के साथ ही, नियामक परिदृश्य भी लगातार विकसित हो रहा है । मनी लॉन्ड्रिंग और आतंकवादी वित्तपोषण का मुकाबला करने से लेकर डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा तक, बैंकों को अनुपालन की बढ़ती जटिलताओं का सामना करना पड़ रहा है ।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि धोखाधड़ी करने वाले अपराधी विकसित होती आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से संभावित भेद्यताओं का अनुचित लाभ उठा सकते हैं । ऐसी स्थिति में ऋण देने की प्रक्रिया में, बैंक कर्मचारियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है । उन्हें न केवल ग्राहकों की साख का उचित मूल्यांकन करना होता है, बल्कि आंतरिक नीतियों और नियामक दिशानिर्देशों का भी कड़ाई से अनुपालन करना होता है । यह सुनिश्चित करना भी महत्वपूर्ण है कि ऋण देने की प्रक्रिया में शामिल प्रत्येक कर्मचारी अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों को पूरी तरह समझे और सभी दस्तवाज़ों आदि का आधिकारिक स्त्रोतों से सत्यापन करे ताकि बैंक की सुरक्षित वित्तीय संस्थान के रूप में पहचान को और अधिक पुख़्ता किया जा सके ।

सादर,

एन. के. सिन्हा

नितेश कुमार सिन्हा
महा प्रबन्धक

वैश्विक मंच और भारत

प्रिय पाठको,

वाणी पत्रिका का 145वां अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है । यह अंक हमने अपने पराक्रमी सेनाओं को समर्पित किया है । उनके उत्सर्ग एवं बलिदान के कारण आज हमारी सीमा एवं चौहदी सुरक्षित है । इस निस्वार्थ सेवा के लिए समस्त देशवासियों का सिर गर्व से उनके आगे नतमस्तक है ।

हाल ही के दिनों में हमारे देश ने पहलगाम हमला देखा । आतंकवादियों के नापाक इरादे और बेकसूर लोगों की निर्मम हत्या ने पूरे जनमानस के झकझोर दिया । विश्व स्तर पर इस घटना की जमकर आलोचना की गयी । हमारी सेनाओं ने पहलगाम का प्रतिउत्तर ऑपरेशन सिंदूर के जरिए दिया । यह ऑपरेशन उन महिलाओं के सुहाग का बदला था, जिन्होंने पहलगाम में अपने पति को अपनी आंखों के सामने सिंदूर को उजड़ते हुए देखा । इस ऑपरेशन का समर्थन विश्व के कई शक्तिशाली देशों ने किया । अब हमें वैश्विक मंच पर भारत की सशक्त धमक देखने को मिल रही है । इस वारदात के बाद भारत ने सर्वदलीय समिति का गठन किया । यह समिति विश्व के लगभग सभी देशों में जाकर पहलगाम घटना और पड़ोसी सरजमीं पर पल रही आतंकवादी संगठनों की जानकारी दिया । यह ऑपरेशन विश्व को एक साफ संदेश देता है कि अब भारत किसी भी आतताईयों के हमले को बर्दाश्त नहीं करेगा, जवाबी कार्रवाई अवश्य की जाएगी ।

वाणी के इस अंक में मुख्यत: सेनाओं को समर्पित आलेखों को स्थान दिया गया है । एक ओर 'ऑपरेशन सिंदूर' विषयक आलेख में आतंकी ठिकानों को ध्वसत करने के लिए हमारी सेनाओं की रणनीति को प्रमुखता से जगह दी गयी है, 'परमवीर चक्र' विषयक आलेख आपको इस सम्मान से विभूषित योद्धाओं से परिचित करवाएगा, 'भारतीय वायु सेना की शौर्य गाथा" विषयक आलेख वायु सेना के विभिन्न फाइटर प्लेन को जानने का अवसर प्रदान करेगा, "राणा सांगा का बलिदान" हमें इतिहास में छिपी उनकी वीरता से परिचित करवाता है, 'बीएसएफ: भारत की रक्षा करने वाली अदृश्य दीवार' में बीएसएफ की कार्यशैली को जानने का अवसर मिलेगा तथा 'विटामीन डी की कमी और कैंसर' विषयक आलेख स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों और उसके निदान से संबंधित है, वहीं दूसरी ओर बैंकिंग आलेख में 'विदेशी मुद्रा', 'हरित भारत की ओर कदम', 'कार्यालयों के लिए सौर रूफटॉप' और 'बैंकिंग में अनुपालन की भूमिका' जैसे गंभीर विषयों पर चर्चा की गई है । साथ ही, आपके लिए एमडी व सीईओ महोदय के संदेश का ऑडियो वर्ज़न भी उपलब्ध करवाया गया है, जिसे पृष्ठ सं 4 पर दिये गए क्यूआर कोड स्कैन कर सुन सकते हैं । इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों को हृदय से धन्यवाद !

हमें विश्वास है कि आप सभी को वाणी पत्रिका का ताजा अंक खूब पसंद आएगा । आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा में .....

आपका,

कृष्ण कुमार गुप्ता
मुख्य प्रबंधक सह संपादक

राणा सांगा का बलिदान

सुरेश कुमार रूंगटा, अंशकालिक निदेशक

भारत का इतिहास काफी समृद्ध रहा है। राजा-महाराजाओं से लेकर ऐतिहासिक इमारतों तक हमारे देश के इतिहास में काफी कुछ ऐसा है, जिसे जानना समझना जरूरी है। लेकिन भारतीय इतिहास को पढ़ने से पूर्व इस सत्य को भी जान लें कि भारत में लंबे समय तक विदेशी आक्राताओं का शासन रहा है। विजयी राजा विजित देश का इतिहास अपने ढंग से लिखवाते थे। पूर्व में मुगल वंश और उसके बाद का इतिहास अंग्रेजों ने लिखा। दुर्भाग्य से देश की आजादी के उपरान्त इतिहास लिखने की जिम्मेवारी कतिपय लोगों के पास थी। इन इतिहासकारों ने विदेशी शासकों द्वारा लिखे गये इतिहास को ही दोहराने का काम किया, जिसने भारतीय इतिहास को विकृत कर दिया। फलतः देश के गौरवशाली अतीत और महान परंपराओं की या तो अनदेखी हुई या तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया।

उदाहरण स्वरूप एनसीईआरटी की छठवीं एवं सातवीं की पुस्तकों में तुर्क, खिलजी, तुगलक, लोदी राजाओं के नाम पर स्वतंत्र अध्याय है, लेकिन "मौर्य साम्राज्य" अथवा भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहे जाने वाले "गुप्त काल" के लिए अलग से कोई विशेष विवरण नहीं दिया गया है। इसी तरह से प्राचीन भारतीय गणतंत्र (वैशाली गणराज्य) पर बिलकुल चुप्पी है। हाँ, यह जरूर बताया गया कि 2500 साल पहले यूनान के एथेंस में लोकतंत्र की स्थापना हुई थी। कुछ दशकों पहले तक वर्ष 1857 में हुए हमारे प्रथम स्वाधीनता संग्राम को "सिपाही विद्रोह" कहा जाता था। बाद में वीर सावरकर के लिखे जाने के बाद इसे भारत का प्रथम "स्वाधीनता संग्राम" कहा जाने लगा। भारतीयों की मनोसांस्कृतिक एकता को तोड़ने के लिए विदेशी आक्रांताओं द्वारा इतिहास की किताबों में एक खतरनाक षड्यंत्र के तहत आर्यों को बाहर से आया लिखा गया। हाल ही में हरियाणा के राखीगढ़ी की खुदाई में मिले नरकंकाल अवशेषों के डीएनए अध्ययन में हावर्ड और प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी के अध्येताओं ने इस दावे को पूरी तरह खारिज कर दिया।

भारत के मध्यकाल का इतिहास, जिसे मध्ययुगीन भारत भी कहा जाता है, लगभग 7वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी तक का है, जो गुप्त साम्राज्य के अंत से लेकर मुगल के भारत में आगमन तथा बारूद के प्रयोग से साम्राज्य की स्थापना का काल रहा है। गुप्त वंश के पतन ने भारत को खंडित कर दिया। मध्यकालीन युग में भारतीयों का जीवन युद्धों से ज्यादा प्रभावित रहा। इस हजार साल की अवधि में प्रतिस्पर्धी राजाओं ने आपस में लड़कर अपनी शक्ति का नाश किया। फलतः भारत के पश्चिमी सीमा से विदेशी आक्रांताओं का आक्रमण होने लगा और धीरे-धीरे वे यहां अपना पांव जमाने लगे। 1526 ई० में बाबर ने मुगल सल्तनत की स्थापना की थी। कुछ दिनों पूर्व एक सांसद ने देश की वीरता को लज्जित करते हुए सदन में यह कहा कि "इब्राहिम लोदी को हराने के लिए बाबर को भारत में आने का आमंत्रण मेवाड़ के राजा राणा सांगा ने ही दिया था।" यह भारतीय इतिहास के वीर नायक का घोर अपमान है।

संग्राम सिंह जिन्हें राणा सांगा के नाम से जाना जाता है, ये एक ऐसे योद्धा थे जो अपना एक पांव, एक आँख, एक हाथ खोने के बाद भी अपने पूरे जीवन में बहादुरी के साथ 100 ज्यादा लड़ाईयां लड़ी, जिसमें मात्र एक ही लड़ाई में वे परास्त हुए थे। 1508 में राणा सांगा मेवाड़ के शासक बने और इस साम्राज्य को महान ऊँचाईयों पर ले गए। दिल्ली के लोदी शासक इब्राहिम लोदी को राणा सांगा ने 18 बार युद्ध में हराया था। यह सोचने वाली बात है कि जिसे राणा सांगा हराने में खुद सक्षम थे उसके लिए वे बाबर क्यों बुलाते ?

सांगा के नेतृत्व में मेवाड़ की सीमाएं दूर-दूर तक फैली हुई थी, जो पूर्व में आगरा, दक्षिण में गुजरात की सीमा और मालवा तक फैली थी। मारवाड़ और आमेर जैसे शक्तिशाली शासक उनके अधीन काम करते थे। उनके पास 80 हजार से ज्यादा घुड़सवारों की सेना थी। साथ ही 7 राजाओं, 9 रावो और 104 सरदारों की कमान वे संभालते थे। ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, कालपी, चंदेरी, बुंदी, गागरौन, रामपुरा और आबू के शासक युद्ध में उनके साथ होते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार सतीश चन्द्र ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ मेडिवल इंडिया" में लिखते हैं कि तैमूर और चंगेज खान का वंशज बाबर ने भारत पर शासन करने के लिए काबुल से 1518 और 1519 में आक्रमण किया था। लेकिन पंजाब पर आक्रमण करने के प्रयासों में वह सफल नहीं हो सका। सन् 1523 ई० में बाबर को दिल्ली सल्तनत के प्रमुख लोगों का एक संदेश मिला। सुल्तान सिकंदर लोदी के भाई आलम खान लोदी, पंजाब के गर्वनर दौलत खान लोदी और इब्राहिम लोदी के चाचा अलाउद्दीन ने इब्राहिम के शासन की समाप्ति हेतु भारत आने का न्योता दिया। जीएन शर्मा और गौरीशंकर हीराचंद्र ओझा जैसे अन्य कई इतिहासकारों ने यहां तक लिखा है कि जब बाबर को भारत आने का ऐसा निमंत्रण मिला तो खुद बाबर ने दिल्ली की गद्दी की जीत को पक्का करने के उद्देश्य से इब्राहिम लोदी के खिलाफ राणा सांगा से गठबंधन की पेशकश का संदेश भेजा था।

डा० गोपीनाथ शर्मा ने "मेवाड़ एण्ड दी मुगल एम्परर्स" नामक

शोध प्रबंध में लिखा है कि पंडित अक्षयनाथ के हस्तलिखित पांडुलिपि के आधार पर यह प्रमाणित हो जाता है कि " बाबर ने इब्राहिम पर आकमण करने से पहले राणा सांगा से सहायता मांगी थी और अपने दूत के द्वारा सांगा के पास पत्र भेजा था।" आर०सी० मजुमदार ने अपनी पुस्तक मुगल एम्पायर" में एवं एन० डेविडसन की पुस्तक "द मुगल एम्पायर" में भी दौलत खान के नेतृत्व में ही बाबर को दिल्ली पर हमला करने के लिए आमंत्रण किये जाने का उल्लेख किया गया है।

21 अप्रैल 1526 को जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर ने पानीपत की पहली लड़ाई में इब्राहिम लोदी पर अपनी बहुप्रतीक्षित जीत हासिल की थी। इस युद्ध में न केवल वह सफल हुआ बल्कि उसे अपने पांव जमाने के लिए यहां जमीन भी मिल गयी। पानीपत की विजय बाबर के लिए निर्णायक सिद्ध हुई। बाबर ने पानीपत के विजय के तुरंत बाद हुमायूँ को आगरा पर अधिकार करने के लिए भेजा और स्वयं दिल्ली के तरफ बढ़ा तथा दिल्ली को अपने अधिकार में ले लिया। इसके बाद बाबर ने राजपूतों को पराजित करना आवश्यक समझा और इसके लिए 21 फरवरी 1527 में अब्दुल अजीज के नेतृत्व में बयाना पर आक्रमण कर वहां के किले पर कब्जा कर लिया, जो सांगा के क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण गढ़ था। राणा सांगा को जब इसकी सूचना मिली तो उसने जवाबी कार्रवाई कर मुगलों को वहां से खदेड़ दिया। लेकिन पुनः 16 मार्च 1527 को बाबर की सेना और राणा सांगा के बीच खानवा में युद्ध लड़ा गया। इस युद्ध में बाबर की बड़ी संख्या में सैनिकों की मृत्यु हुई। बाजी राजपूतों के पक्ष में जाते देखकर बाबर की ओर से बारूद का व्यापक इस्तेमाल किया गया। ऐसे में तन बदन पर लगे अनगिनत घावों की अनदेखी कर राणा सांगा ने सीधा बाबर पर प्रहार करने के लिए उस पर टूट पड़े। लेकिन काफी कम दूरी से तोपो द्वारा किये जाने वाले फायर से राणा सांगा घायल हो गए। फलतः अन्य योद्धाओं ने राणा को युद्ध स्थल से दूर ले गये। राणा के जाते ही उसकी सेना की हार हो गई। जख्मों से जूझ रहा राणा, दिल्ली में बैठे बाबर को फिर से ललकारने की योजना तैयार कर रहे थे। लेकिन उनके दरबारियों और अन्य राजाओं को यह बात पसंद नहीं थी। अतः उनलोगों ने उन्हें जहर दे दिया। इस प्रकार भारत माता का वह वीर सपूत 30 जनवरी 1528 को अपना प्राण त्याग दिया।

खानवा का युद्ध भारतीय इतिहास का एक ऐसा युद्ध है, जिसके दूरगामी परिणाम हुए। इस युद्ध में देश की माटी की रक्षा के लिए अपनी जान न्योछावर करने वाले राणा सांगा ने जिस वीरता और देश भक्ति का परिचय दिया उसकी मिसाल इतिहास में शायद और कहीं मिलेगी। इतिहासकार प्रदीप बरूआ लिखते हैं कि "अगर बाबर ने तोपो की मदद न ली होती तो शायद दिल्ली में मेवाड़ का केसरिया ध्वज फहरा रहा होता।"

इबादत

ढलते आफताब में, ये लिखने की आदत कैसी
लग जाए दिल एक दफा, तो फिर ज़मानत कैसी

जज़्बातों की मुफलिसी में, उम्मीद के दिये कहां
जो हर चीज हो हासिल, तो खुदा की इबादत कैसी

है बातें उसूलों की, मगर किरदार झूठे यहां
जो ईमानदारी से रिश्ते निभा लें, तो फ़िर
शिकायत कैसी

फिर वादे वही, बातें वही, बस चेहरा अलग है
हो जाये कल को नफरत अगर, तो फ़िर
चाहत कैसी

तिजारत-ए-अल्फाज़ में, बिक रहा हर शायर यहां
जो लिखना ही छोड़ दे, तो नींद की आफ़त कैसी।

गरिमा जोशी
सहायक प्रबंधक
कोयम्बत्तूर क्षेत्र

विदेशी मुद्रा –परिभाषा एवं बाजार

गोपाल एस, मुख्य महा प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद

विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा), 1999 (धारा 2) में विदेशी मुद्रा को निम्नलिखित रूप में परिभाषित किया गया है:

विदेशी मुद्रा से अभिप्राय है विदेशी करेंसी और उसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

1. विदेशी मुद्रा में देय सभी जमाराशियां, उधार तथा शेष राशियां और भारतीय मुद्रा में व्यक्त अथवा आहरित तथा विदेशी मुद्रा में देय कोई भी ड्राफ्ट, यात्री चेक, साखपत्र एवं विनिमय बिल।
2. आदेशिती या उसके धारक या उसके किसी भी अन्य पक्षकार को उसके विकल्प पर या तो भारतीय मुद्रा में या फिर विदेशी मुद्रा में अथवा अंशत: किसी एक मुद्रा में और अंशत: दूसरी मुद्रा में देय कोई भी लिखत।

इस प्रकार व्यापक रूप से कहा जाए, तो विदेशी मुद्रा विदेशों में देय सभी दावे होते हैं, चाहे उसमें विदेशों में स्थित बैंकों में विदेशी मुद्रा में रखी गई निधियां शामिल हों या फिर विदेशों में देय बिल या चेक। दूसरे शब्दों में, विदेशी मुद्रा लेन-देन एक सहमत दर पर तथा की गई व्यवस्था के आधार पर एक मुद्रा में निधियों का किसी अन्य मुद्रा में विनिमय करने की संविदा होती है। इस प्रकार विनिमय दरें उस कीमत अथवा अनुपात या मूल्य का निरूपण करती हैं जिस पर एक मुद्रा का दूसरी मुद्रा से विनिमय किया जाता है। एक मुद्रा की इकाइयों की वह संख्या, जिसका किसी अन्य मुद्रा की एक निश्चित इकाइयों से विनिमय किया जाता है, मुद्रा की विनिमय दर होती है। उदाहरण के लिए 1 अमरीकी डॉलर 80.10 रुपये के बराबर होता है अथवा 1 यूरो 1.07 अमरीकी डॉलर के बराबर होता है।

विनिमय दर एक गतिशील दर होती है जो विभिन्न कारकों के आधार पर दैनंदिन, मिनट-दर-मिनट तथा सेकंड-दर – सेकंड पर बदलती रहती है।

विदेशी मुद्रा बाजारों में बाजार के सहभागियों के एक ऐसे विस्तृत स्पेक्ट्रम का समावेश होता है, जिसमें विश्व भर के ऐसे व्यक्तियों, व्यावसायिक संस्थाओं, वाणिज्यिक एवं निवेश बैंकों, केंद्रीय बैंकों, सीमा-पार निवेशकों, अंतरपणनकर्ताओं और सट्टेबाजों का समावेश होता है, जो अपनी आवश्यकताओं के लिए मुद्राएं खरीदते अथवा बेचते हैं। यह संचार प्रणाली पर आधारित एक ऐसा बाजार होता है, जिसकी कोई सीमारेखा नहीं होती तथा जो किसी एक देश में अथवा विभिन्न देशों के बीच चौबीसों घंटे परिचालनरत रहता है। यह किसी चार-दीवारी से घिरे बाजार द्वारा सीमित नहीं होता, जो सब्जी बाजार अथवा मछली बाजार जैसे पण्य बाजार की विशेषता होती है। यह हानियों की सहवर्ती संभाव्यता के साथ एक लाभ केंद्र होता है।

2025 तक भारत का विदेशी मुद्रा परिदृश्य: प्रमुख विकास

1. आरक्षित विदेशी मुद्रा- अब तक का सर्वाधिक

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार रिकॉर्ड ऊंचाई के करीब पहुंच गया है। वे जून 2025 के मध्य तक लगभग 699 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है, जो लगातार निधियों का आगमन और सोना तथा विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों में बढ़ती होल्डिंग के कारण है। चाहे भू-राजनीतिक तनाव हो या मुद्रा में अस्थिरता यह आरक्षित संचय केंद्रीय बैंक को मूल्य नियंत्रण के झटके के लिए एक मजबूत बफर प्रदान करता है -

संदर्भ:https://www.indiainfoline.com/blog/weekly-rbi-tracker-forex-reserves-inch-closer-to-all-time-highs

2. रुपये में कमजोरी के बीच आरबीआई का हस्तक्षेप

तेल की बढ़ती कीमतों जैसे वैश्विक दबावों से प्रेरित, रुपया ₹86.7-₹87.0 प्रति अमरीकी डॉलर की ओर फिसल गया है। इसका मुकाबला करने के लिए, भारतीय रिजर्व बैंक ने अपना अब तक का सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा हस्तक्षेप शुरू किया। वित्त वर्ष 2024-25 में, इसने लगभग 34.5 बिलियन अमरीकी डॉलर की बिक्री की, जिसमें सकल बिक्री 399 बिलियन अमरीकी डॉलर के करीब थी – यह पैमाना 2008 के वित्तीय संकट के बाद से नहीं देखा गया। इस तरह के आक्रामक कदमों ने सितंबर 2024 और जनवरी 2025 के बीच लगभग 80 बिलियन अमेरिकी डॉलर भंडार से निकाल लिए।

3. पॉलिसी शिफ्ट

जून 2025 की मौद्रिक नीति समिति की बैठक में,आरबीआई ने मुद्रास्फीति को कम करने का हवाला देते हुए रेपो दर में 50 आधार अंकों की कटौती की (मई में खुदरा दर गिरकर 2.82% हो गई)। इस कदम का उद्देश्य आर्थिक गति को बनाए रखना और मुद्रास्फीति को बढ़ाए बिना विकास क्षेत्रों को ऋण देना है।

4. उदारीकृत विदेशी मुद्रा मानदंड और रुपये का अंतरराष्ट्रीयकरण -

जनवरी 2025 में, आरबीआई ने वैश्विक व्यापार में रुपये के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए कई फेमा (विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम) नियमों को उदार बनाया। मुख्य परिवर्तनों में शामिल हैं:

- अधिकृत डीलरों की अपतटीय शाखाओं को गैर-निवासियों के लिए INR खाते खोलने की अनुमति देना।
- गैर-निवासियों को निवेश, व्यापार और गैर-ऋण एफडीआई के लिए विशेष INR वोस्ट्रो/एसएनआरए खातों में शेष राशि का उपयोग करने की अनुमति देना।
- भारतीय निर्यातकों को विदेशों में विदेशी मुद्रा खाते रखने में सक्षम बनाना, जिससे आय सीधे आयात के वित्तपोषण की अनुमति मिलती है।

इसके अलावा, रुपया अंतरराष्ट्रीयकरण नीति उन्नत हुई है, जो नेपाल, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका और अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय रुपया व्यापार समझौतों पर प्रगति का प्रदर्शन करती है। ये संचयी प्रयास अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता को कम करते हैं, क्षेत्रीय रूप से INR उपयोग को गहरा करते हैं, और द्विपक्षीय व्यापार में विनिमय दर की अस्थिरता को कम करते हैं।

5. अनधिकृत विदेशी मुद्रा प्लेटफार्मों की सख्त निगरानी -

आरबीआई अवैध विदेशी मुद्रा व्यापार प्लेटफार्मों पर नकेल कसना जारी रखा है। बैंकों द्वारा गहन निगरानी और इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय से सहयोग के साथ अद्यतन "अलर्ट सूची" में अब दर्जनों अनधिकृत ऑपरेटर शामिल हैं। मान्यता प्राप्त प्लेटफार्मों को सख्त केवाईसी / एएमएल मानदंडों का पालन करना चाहिए, जबकि उपभोक्ताओं को बार-बार धोखाधड़ी और घोटालों के खिलाफ चेतावनी दी जाती है।

6. वैश्विक जोखिम और तेल मूल्य दबाव -

भू-राजनीतिक फ्लैशपॉइंट्स - विशेष रूप से मध्य पूर्व में - ने तेल की कीमतों (~ USD 77 / बैरल) को बढ़ा दिया है, जो पहले आरबीआई दर में कटौती के लाभों को उलट देता है। तेल आयात की लागत बढ़ने से रुपये पर अतिरिक्त दबाव है। विश्लेषकों का सुझाव है कि अगर रुपया ₹87/USD तक पहुंचता है, तो आरबीआई हस्तक्षेप बढ़ा सकता है।

संदर्भ: https://www.moneycontrol.com/news/currency/rupee-s-fall-near-key-level-to-test-rbi-s-tolerance-for-swings

हितधारकों के लिए इसका क्या मतलब है

- व्यवसाय और आयातक: रुपये के पीछे हटने से आयात लागत बढ़ जाती है। आईआरडी, स्वैप और निर्यातकों के विदेशी मुद्रा खातों की हेजिंग इसे कम कर सकती है।
- निर्यातक: रुपये की कमजोरी से मार्जिन में मदद मिलती है, निर्यातक अब प्राप्तियों/आयातों का बेहतर प्रबंधन कर सकते हैं और यहां तक कि विदेशों में रुपये में व्यापार भी निपटा सकते हैं।
- विदेशी निवेशक: विस्तारित डेरिवेटिव बाज़ार, रुपया-मूल्यवर्गित बाँड और उदारीकृत नियम संस्थागत विश्वास को आकर्षित करते हैं।
- खुदरा व्यापारी और उपभोक्ता: बढ़ी हुई अस्थिरता मध्यस्थता प्रदान करती है, लेकिन घोटाले के जोखिम को भी बढ़ाती है - केवल आरबीआई-मान्यता प्राप्त प्लेटफार्मों को प्राथमिकता दी जाती है।

आइओबी फॉरेक्स: हाल ही में किये गए अद्यतन

1. एनआरआई बचत खाता उत्पाद: बैंक ने उन्नत एनआरआई बचत खाता उत्पाद - एनआरआई एलिवेट, एनआरआई प्रिविलेज और एनआरआई सिग्नेचर पेश किए हैं। प्रत्येक पेशकश को विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, अद्वितीय विशेषताओं का संयोजन किया गया है। वे नवाचार, ग्राहक फोकस और सेवा उत्कृष्टता के लिए हमारे चल रहे समर्पण का प्रतिनिधित्व करते हैं। उत्पाद विशेषताओं का विवरण एनआरई/एनआरओ एसबी स्कीमों के तीन रूपों को लागू करने के संबंध में योजना विभाग द्वारा परिपत्र जारी गया है।

2. एफसीएनआर (बी) और आरएफसी जमा: 15 अप्रैल, 2025 से, बैंक ने FCNR(B) और RFC जमा पर ब्याज दरों में संशोधन किया है, जो प्रमुख विदेशी मुद्राओं में अत्यधिक प्रतिस्पर्धी रिटर्न प्रदान करता है। ये संशोधित दरें वैश्विक बेंचमार्क के साथ संरेखित हैं और एनआरआई और स्थिर, मुद्रा-मूल्यवर्गित निवेश की मांग करने वाले निवासी ग्राहकों के व्यापक स्पेक्ट्रम को आकर्षित करने के लिए संरचित हैं। इस कार्यनीति के अनुरूप, शाखाओं को पात्र ग्राहकों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने और जमाराशियों के नए अंतर्वाह को बढ़ाने के प्रयासों को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया गया है।

3. आई/ईडीपीएमएस उन्मूलन: एडी बैंकों को सूचित किया गया कि वे 02 वर्षों से अधिक समय से अतिदेय बकाया प्रविष्टियों को कम करने के पर्याप्त प्रयासों के साथ-साथ बकाया एसबी/बीओई/आईआरएम/ओआरएम की संख्या को कम करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अत्यधिक महत्व दें। बकाया प्रविष्टियों के मिलान पर प्राधिकृत व्यापारी बैंकों द्वारा की गई प्रगति की भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा नियमित रूप से निगरानी की गई है।

उपरोक्त के मद्देनजर, बकाया ईडीपीएमएस और आईडीपीएमएस प्रविष्टियों को न्यूनतम स्तर तक लाने के लिए उसी उत्साह के साथ शेष बकाया ईडीपीएमएस और आईडीपीएमएस प्रविष्टियों को समाप्त करने में हमारे प्रयास को जारी रखने के लिए, ट्रेजरी विभाग ने अभियान अवधि के दौरान अधिकतम प्रविष्टियों को समाप्त करने के लिए क्षेत्रीय कार्यालयों की निगरानी में एडी शाखाओं को निर्देश के साथ 16.04.2025 से 31.07.2025 तक "ईएफफेस 3.0" के नाम से एक विशेष अभियान शुरू किया है।

4. एफएक्स-रिटेल ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म: सीसीआईएल ने रिटेल प्रतिभागियों अर्थात व्यक्तियों, कॉरपोरेट और एसएमई आदि के लिए एक वेब-आधारित ऑर्डर मैचिंग ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म विकसित किया है। एफएक्स रिटेल प्लेटफॉर्म यूएसडी / आइएनआर मुद्रा जोड़ी में एकमुश्त नकद, टॉम और स्पॉट उपकरणों में व्यापार के लिए प्रदान करेगा। विदेशी मुद्रा व्यापार मंच एक ही स्थान पर सभी बैंकों की सर्वोत्तम उपलब्ध ग्राहक दरों को प्रदर्शित करेगा। ग्राहक सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी दर चुन सकते हैं और विदेशी मुद्रा खरीद / बेच सकते हैं। ग्राहक के पास अपने एक्सपोजर को कवर करने के लिए वांछित विनिमय दर के लिए अपना ऑर्डर देने का विकल्प भी होता है। एफएक्स-रिटेल ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से इंटरबैंक बाजार में खुदरा ग्राहकों की भागीदारी बाजार में तरलता और ग्राहकों के लिए बेहतर कीमत में सुधार करेगी। इससे लेन-देन के पूरे प्रवाह में पारदर्शिता भी आएगी। इस सुविधा में कासा में सुधार की गुंजाइश प्रदान करने के अलावा, हमारे बैंक के लिए गैर-ब्याज आय उत्पन्न करने की अच्छी क्षमता है।

निष्कर्ष :

2025 के मध्य तक, भारत की विदेशी मुद्रा नीति स्पष्ट इरादे को दर्शाती है: अंतरराष्ट्रीय स्तर पर रुपये के उपयोग को रणनीतिक रूप से बढ़ावा देते हुए मजबूत भंडार और सक्रिय हस्तक्षेपों के माध्यम से लचीलापन बनाना। जैसा कि भारत रुपये को क्षेत्रीय व्यापार से बनाता है, डेरिवेटिव मार्केट खोलता है और विनियमन को मजबूत करता है, यह संकेत देता है कि रुपया गहरे वैश्विक एकीकरण के लिए निर्धारित है।

भारतीय वायु सेना की शौर्य गाथा

अनिल कुमार, महा प्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय

भारत भूमि, जो आदिकाल से वीरों की जननी रही है, उसकी सुरक्षा और अखंडता की जिम्मेदारी जिन कंधों पर है, वे हमारी भारतीय सेना के जांबाज जवान हैं । भारतीय सेना केवल एक सैन्य संगठन नहीं, बल्कि यह भारत के शौर्य, साहस, बलिदान और अटूट राष्ट्रनिष्ठा का जीवंत प्रतीक है। यह वह शक्ति है जो हमारी सीमाओं की रक्षा करती है, आपदाओं में राहत पहुँचाती है और विश्व शांति में भी अपना अमूल्य योगदान देती है। भारतीय सेना का पराक्रम केवल युद्ध के मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश के हर संकट में जनता के साथ खड़ी रहने वाली एक ढाल है। भारत की सैन्य शक्ति मुख्य रूप से तीन गौरवशाली अंगों में विभाजित है: भारतीय थल सेना, भारतीय वायु सेना और भारतीय नौ सेना। ये तीनों ही भुजाएँ मिलकर भारत की सुरक्षा को अभेद्य बनाती हैं।

भारतीय वायु सेनाः

आकाश के बाज व आसमान के रखवाले, भारतीय वायु सेना, आधुनिकतम लड़ाकू विमानों, हेलीकॉप्टरों और परिवहन बेड़े से लैस न केवल हवाई रक्षा में सक्षम है, बल्कि दुश्मन के ठिकानों पर सटीक हमले करने, सैन्य साजो-सामान पहुंचाने और आपदा राहत अभियानों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में भी सक्षम है। अपने बुलंद हौसले, अदम्य साहस, पराक्रम व शौर्य के बलबूते सम्पूर्ण विश्व में 'भारतीय वायुसेना' के जांबाजों की अलग ही धाक है । हमारी वायुसेना के जांबाज बेहद विकट से विकट व बेहद विषम परिस्थितियों के बीच एक क्षण में ही दुश्मन को आश्चर्यचकित करके रणभूमि में धूल चटाने में माहिर हैं। आज हमारी 'भारतीय वायुसेना' तेजी से समयानुसार अपना आधुनिकीकरण करके विश्व की सर्वश्रेष्ठ सेनाओं में से एक तथा अपने वीर शौर्यवान महावीर योद्धाओं के बलबूते और देश सेवा एवं देश सुरक्षा का जज्बा लेकर वो सशक्त राष्ट्र प्रहरी बन गयी है । वायुसैनिक, वायुशक्ति के सभी पहलुओं का समर्थन करने के लिए काम करते हैं, जिसमें पांच मुख्य कार्य शामिल हैं जैसे- हवाई श्रेष्ठता; वैश्विक हमला; तीव्र वैश्विक गतिशीलता; खुफिया जानकारी, निगरानी और टोही; तथा कमान और नियंत्रण।

भारतीय वायु सेना की स्थापना:

भारतीय वायु सेना की स्थापना ब्रिटिश साम्राज्य ने 8 अक्टूबर, 1932 को रॉयल एयर फोर्स की सहायक के रूप में की थी । 1 अप्रैल 1933 को भारतीय वायुसेना में पहले स्वाक्ड्रन की नियुक्ति हुई जिसे (वेस्टलैंड वापिटी) हवाई जहाज दिए गए और पाँच भारतीय पायलटों का भी समूह बनाया गया। किंग जॉर्ज षष्ठम् ने वायुसेना के नाम के पूर्व रॉयल शब्द लगाने का सम्मान 1945 में द्वितीय विश्वयुद्ध में की गई सेवा के लिए दिया। 1950 तक भारतीय वायु सेना का नाम रॉयल इंडियन एयरफोर्स ही था परंतु 1950 में गणतंत्र बन जाने पर रॉयल शब्द हटा दिया गया और इसे भारतीय वायु सेना कहा गया । भारतीय वायु सेना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी वायु सेना है, संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत का स्थान है, जो दुनिया की सबसे बड़ी वायु सेनाएँ हैं । 'भारतीय वायुसेना' को देश की सुरक्षा में लगी भारतीय सशस्त्र सेनाओं का सबसे नया अंग माना जाता है ।

वायु सेना दिवस: प्रत्येक वर्ष 08 अक्टूबर को भारतीय वायु सेना दिवस मनाया जाता है, जो वायु सेना के इतिहास और बलिदानों को याद करता है । हवा में गर्जना करते लड़ाकू विमान और जवानों का अदम्य हौसला यह याद दिलाता है कि भारतीय वायुसेना सिर्फ ताकत नहीं, बल्कि भारत के आकाश की ढाल है जो आसमान को अपनी रणभूमि बनाकर देश की रक्षा करती है।

भारतीय वायु सेना का आदर्श वाक्य:

भारतीय वायु सेना का आदर्श वाक्य "नभः स्पृशं दीप्तम्" है, जिसका अर्थ है "गर्व के साथ आकाश को छूना" । यह वाक्य भगवद गीता के ग्यारहवें अध्या य के 24 वें श्लोक, नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं, व्यत्तनानं दीप्तविशालनेत्रम् । दृष्ट्वा हि त्वं प्रविथितान्तरात्मा, धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो । से लिया गया है ।

अपने इस आदर्श वाक्य के जबरदस्त उद्घोष के साथ ही हमारी वायुसेना के साहसी जांबाज दुश्मन पर साक्षात मौत बनकर टूट पड़ते हैं और युद्ध में अदम्य साहस पराक्रम का परिचय देकर विजय की नित नई शौर्यगाथा लिखकर देश के आम जनमानस को बार-बार गर्व करने का मौका प्रदान करते हैं। 'भारतीय वायुसेना' के जांबाज रणबांकुरों ने अपने साहस, शौर्य और पराक्रम के बल पर वीरता पदकों के मामले में भी अपनी शानदार उपस्थिति दर्ज़ करवाई है। आज 'परमवीर चक्र', 'महावीर चक्र', 'वीर चक्र', 'अशोक चक्र', 'कीर्ति चक्र', 'शौर्य चक्र' जैसे वीरता के सर्वोच्च सम्मान वायु सेना की शान को नये आयाम प्रदान कर रहे हैं। इसके अलावा हजारों जाबाज भारतीय वायु सैनिकों को उनकी अनूठी बहादुरी के लिए 'वायुसेना मैडल', 'परम विशिष्ट सेवा मैडल', 'अति विशिष्ट सेवा मैडल', 'विशिष्ट सेवा मैडल', 'सर्वोत्तम युद्ध सेवा मैडल', 'उत्तम सेवा मैडल', 'युद्ध सेवा मैडल' आदि से पुरस्कृत किया जा चुका है।

युद्धों में शौर्य प्रदर्शन :

1. 1947-48 का भारत-पाक युद्ध (कश्मीर युद्ध):

1947-48 का भारत-पाक युद्ध, जिसे प्रथम कश्मीर युद्ध भी कहा जाता है, 1947 में भारत और पाकिस्तान की स्वतंत्रता के तुरंत बाद शुरू हुआ एक सशस्त्र संघर्ष था। यह युद्ध जम्मू और कश्मीर की रियासत को लेकर हुआ था। 1947 में, ब्रिटिश भारत का विभाजन हुआ, और रियासतों को यह चुनने का विकल्प दिया गया कि वे भारत या पाकिस्तान में शामिल हों, या स्वतंत्र रहें ।

जम्मू और कश्मीर रियासत, जिसकी बहुसंख्यक मुस्लिम आबादी थी, पर एक हिंदू महाराजा, हरि सिंह का शासन था । महाराजा हरि सिंह ने शुरुआत में स्वतंत्र रहने का फैसला किया, लेकिन पाकिस्तान समर्थित

कबायली बलों के हमले के बाद, उन्होंने भारत में विलय के दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर दिए।

स्वतंत्रता के तुरंत बाद जब पाकिस्तान समर्थित कबायलियों ने कश्मीर पर आक्रमण किया, तब वायु सेना ने भारत की सेना को श्रीनगर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह सैन्य रणनीति निर्णायक सिद्ध हुई और कश्मीर भारत का हिस्सा बना रहा।

2. द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945):

द्वितीय विश्व युद्ध, 1939 से 1945 तक चलने वाला एक वैश्विक संघर्ष था, जिसमें दुनिया के अधिकांश देश दो विरोधी सैन्य गुटों, मित्र राष्ट्रों और धुरी राष्ट्रों में विभाजित थे। यह इतिहास का सबसे घातक और विनाशकारी युद्ध था, जिसमें 50 मिलियन से अधिक लोग मारे गए थे।

भारतीय वायु सेना ने बर्मा फ्रंट, अफगान सीमा और अन्य एशियाई मोर्चों पर ब्रिटिश सेना के साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके वीरता पूर्ण कार्यों के लिए 1945 में इसे "रॉयल" उपसर्ग से नवाजा गया।

3.1965 का युद्ध:

1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ था, जिसे 1965 का भारत-पाकिस्तान युद्ध या दूसरा कश्मीर युद्ध भी कहा जाता है। यह युद्ध 5 अगस्त से 23 सितंबर 1965 तक चला था। यह युद्ध कश्मीर के मुद्दे पर हुआ था और पाकिस्तान ने भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की थी, जिसके बाद भारत ने जवाबी कार्रवाई की गयी और यह युद्ध 23 सितंबर को संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के बाद समाप्त हो गया। इस युद्ध में दोनों देशों के बीच कई बड़ी लड़ाईयां हुईं, जिनमें टैंक युद्ध भी शामिल थे। 1965 के युद्ध को भारत और पाकिस्तान के बीच एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है।

इस युद्ध में भारतीय वायु सेना ने पाकिस्तान के एयरबेस पर हमले किए और दुश्मन के कई विमानों को नष्ट कर दिया। इस संघर्ष में मिग-21 और हंटर जैसे विमानों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

4.1971 का बांग्लादेश मुक्ति संग्राम:

1971 का बांग्लादेश मुक्ति संग्राम, जिसे बांग्लादेश मुक्ति युद्ध भी कहा जाता है, 25 मार्च से 16 दिसंबर 1971 तक चला था। यह युद्ध पाकिस्तान से बांग्लादेश की स्वतंत्रता के लिए था, जिसमें भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

यह युद्ध भारतीय वायु सेना की इतिहास की सबसे गौरवपूर्ण विजय में से एक था। ऑपरेशन चेंगिज़ खान और ऑपरेशन कैक्टस लिली जैसे अभियानों ने पाकिस्तानी वायुसेना को पंगु बना दिया। महज 13 दिनों में युद्ध समाप्त हुआ और बांग्लादेश का गठन हुआ।

5. कारगिल युद्ध (1999):

1999 का कारगिल युद्ध भारत और पाकिस्तान के बीच मई से जुलाई 1999 तक लद्दाख के कारगिल जिले में हुआ एक सशस्त्र संघर्ष था। इसे "ऑपरेशन विजय" के नाम से भी जाना जाता है। पाकिस्तानी सैनिकों और आतंकवादियों ने नियंत्रण रेखा (एलओसी) पार करके भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की और रणनीतिक स्थानों पर कब्जा कर लिया तथा भारत ने जवाबी कार्रवाई की और पाकिस्तानी सैनिकों को पीछे हटने के लिए मजबूर किया। इस युद्ध में 'ऑपरेशन सफेद सागर' के तहत वायु सेना ने दुर्गम पहाड़ियों पर पाकिस्तानी सेना के ठिकानों को लक्ष्यित किया। मिराज-2000 विमान का सटीक बमवर्षण इस युद्ध में निर्णायक सिद्ध हुआ।

6. पुलवामा हमले के बाद एयर स्ट्राइक (2019):

14 फरवरी 2019 को, जम्मू श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर भारतीय सुरक्षा कर्मियों को ले जाने वाले सीआरपीएफ के वाहनों के काफिले पर आत्मघाती हमला हुआ, जिसमें 40 भारतीय सुरक्षा कर्मियों की जान गयी थी। यह हमला जम्मू और कश्मीर के पुलवामा ज़िले के अवन्तिपुर के निकट लेथपोरा इलाके में हुआ था।

भारतीय वायुसेना ने इसके जवाब में 26 फरवरी को पाकिस्तान के बालाकोट में जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के आतंकी प्रशिक्षण शिविर पर हवाई हमला किया। यह पहली बार था जब भारतीय वायु सेना ने नियंत्रण रेखा पार कर आतंकी अड्डों को सफलतापूर्वक निशाना बनाया।

7. पहलगाम आतंकवादी हमला के बाद "ऑपरेशन सिंदूर" (2025):

कश्मीर घाटी के पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को आतंकियों ने धर्म पूछकर 26 पर्यटकों की हत्या कर दी थी। यह हमला पहलगाम बाज़ार से क़रीब छह किलोमीटर दूर बैसरन में हुआ तथा इस हमले में कुल 26 लोग मारे गए, जिनमें 25 पर्यटक थे और एक स्थानीय युवक। बीते तीन दशक में जम्मू-कश्मीर में यह पहला इतना बड़ा हमला है, जिसमें पर्यटकों को निशाना बनाया गया।

भारतीय वायुसेना ने पहलगाम आतंकवादी हमले (22 अप्रैल 2025) के बाद "ऑपरेशन सिंदूर" नामक सटीक जवाबी कार्रवाई की, जिसमें पाकिस्तान व पीओके (पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर) में आतंकवाद-समर्थित नौ ठिकानों को निशाना बनाया गया। "ऑपरेशन सिंदूर" द्वारा भारतीय वायुसेना ने आतंकवादियों के ठिकानों को बड़े पैमाने पर प्रभावी, सीमित और सटीक हवाई हमलों के माध्यम से निशाना बनाया। यह कार्रवाई एक मापी गई, गैर-आक्रामक अंतरराष्ट्रीय संदेश थी, जो आतंकवाद-समर्थक संरचनाओं को निशाना बनाती है। परंतु सैन्य ढांचे से दूरी बनाए रखती है। वायुसेना ने एयर-टू-सर्फेस गाइडेड म्यूनिशन्स का उपयोग करके केवल आतंकवादी कैंप और ट्रेनिंग ठिकानों को निशाना बनाया और क्षति को सीमित रखा और पाकिस्तानी नागरिक संरचनाओं को नुकसान होने से बचाया।

निष्कर्ष:

भारतीय वायु सेना की शौर्य गाथा केवल लड़ाइयों तक सीमित नहीं है बल्कि यह यह आपदाओं में राहत, वैश्विक मिशनों में भागीदारी और देश की संप्रभुता की रक्षा में अद्वितीय योगदान की कहानी है। इसकी शौर्य गाथा हर भारतीय को गर्व का अनुभव कराती है। निःस्वार्थ सेवा, अनुशासन और पराक्रम के बल पर भारतीय वायु सेना देश के लिए एक दृढ़ आकाश कवच बनी हुई है। "नभः स्पृशं दीप्तम् इसका आदर्श वाक्य है, जो इस संस्था की आत्मा को प्रतिबिंबित करता है। वर्तमान में भारतीय वायु सेना राफेल, सुखोई-30 मार्क-I, तेजस, और ड्रोन जैसी अत्याधुनिक तकनीकों से लैस है। इसके अलावा स्वदेशी उत्पादन के तहत 'एलसीए तेजस', 'एयर डिफेंस सिस्टम' और 'सी-295 एयरक्राफ्ट' जैसी परियोजनाएँ वायु सेना को आत्मनिर्भर बना रही हैं।

हिंदी भाषा और ब्रज भाषा: एक सांस्कृतिक और भाषायी समन्वय

राजेन्द्र सिंह, मुख्य क्षेत्रीय प्रबंधक, एर्णाकुलम क्षेत्र

भारतवर्ष विविधताओं का देश है, जहाँ भाषाओं का समृद्ध भंडार है। यहाँ सैकड़ों भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं, जिनमें से कई प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को समेटे हुए हैं। हिंदी, भारत की राजभाषा, करोड़ों भारतीयों की संपर्क भाषा है और इसके अंतर्गत अनेक बोलियाँ आती हैं। ब्रज भाषा, इन्हीं प्रमुख बोलियों में से एक है, जिसकी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक उपस्थिति अत्यंत गौरवशाली रही है।

यह लेख हिंदी भाषा और ब्रज भाषा की विशेषताओं, उनके इतिहास, परस्पर संबंध, साहित्यिक योगदान और सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालता है।

हिंदी भाषा का विकास संस्कृत → प्राकृत → अपभ्रंश → मध्यकालीन हिंदी की क्रमिक प्रक्रिया के द्वारा हुआ। हिंदी का साहित्यिक इतिहास मोटे तौर पर चार कालों में बाँटा जाता है:

1. आदिकाल (वीरगाथा काल)
1. भक्तिकाल
2. रीतिकाल
3. आधुनिक काल

हिंदी की अनेक उपबोलियाँ हैं — जैसे कि अवधी, मैथिली, भोजपुरी, मारवाड़ी, हरियाणवी, और ब्रज भाषा।

ब्रज भाषा: एक सांस्कृतिक अमृत

ब्रज भाषा, हिंदी की एक समृद्ध और साहित्यिक बोलचाल की भाषा है जो विशेषतः उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र (मथुरा, वृंदावन, आगरा, अलीगढ़, एटा, बुलंदशहर, हाथरस आदि) में बोली जाती है। यह भी हिन्द-आर्य भाषा परिवार की सदस्य है और अपभ्रंश से विकसित हुई है।

ब्रज भाषा की प्रमुख विशेषताएँ

1. भावात्मकता – ब्रज भाषा अत्यधिक भाव-प्रधान है। इसके शब्दों में कोमलता, माधुर्य और भावनात्मक गहराई होती है।

2. कृष्ण भक्ति की भाषा – यह भाषा भगवान श्रीकृष्ण के जीवन, प्रेम और लीलाओं का मुख्य माध्यम रही है।

3. कविता की भाषा – ब्रज भाषा का प्रयोग कवियों ने विशेषकर भक्ति काव्य में किया है, विशेषतः कृष्ण भक्ति में।

4. लोकप्रियता – यह क्षेत्रीय स्तर पर आज भी लोकप्रिय है, विशेषकर धार्मिक आयोजनों, लोकगीतों, रासलीलाओं और कीर्तन में।

ब्रज भाषा का साहित्यिक योगदान

ब्रज भाषा का सबसे बड़ा योगदान भक्ति कालीन साहित्य में है, विशेषकर कृष्ण भक्ति काव्य में। प्रसिद्ध कवि जिन्होंने ब्रज भाषा में रचनाएँ कीं:

1. सूरदास – अष्टछाप कवियों में प्रमुख, जिन्होंने "सूरसागर" में श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का मार्मिक चित्रण किया।

2. रसखान – मुस्लिम भक्त कवि जिन्होंने श्रीकृष्ण की भक्ति में ब्रज भाषा में मनोहर काव्य रचे।

3. मीरा बाई – यद्यपि उनकी रचनाओं में राजस्थानी व हिंदी की छाया है, पर ब्रज भाषा का भी स्थान है।

ब्रज भाषा में लिखे गए पद, सवैया, कवित्त और रास गीतों में भावनाओं का उत्कर्ष और संगीतात्मक सौंदर्य स्पष्ट दृष्टिगत होता है।

हिंदी और ब्रज भाषा का परस्पर संबंध

ब्रज भाषा हिंदी की प्रमुख उप बोलियों में से एक है, परंतु इसकी स्वतंत्र साहित्यिक पहचान है। हिंदी के विकास में ब्रज भाषा की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मध्यकाल में जब हिंदी का स्वरूप परिपक्व हो रहा था, ब्रज ने उसे एक गहरा भावात्मक आधार दिया। खासकर भक्ति आंदोलन के दौरान, ब्रज भाषा ने जनमानस को जोड़ने का काम किया।

संरचनात्मक समानता

ब्रज भाषा और हिंदी दोनों देवनागरी लिपि में लिखी जाती हैं और व्याकरणिक दृष्टि से इनका ढांचा काफी समान है। शब्दों, मुहावरों, व्याकरणिक रचनाओं में भी साम्यता है।

भाषायी भिन्नताएँ

पहलू	हिंदी	ब्रज भाषा
शब्द	बच्चा	ललना
क्रिया	जाता हूँ	जातो हूँ
वाक्य	तुम कहाँ जा रहे हो?	तू कहाँ जातो है?

ब्रज में "हूँ" के स्थान पर "है" या "हो" प्रयोग होता है। लिंग, वचन, काल आदि में भी कुछ विशिष्ट प्रयोग देखने को मिलते हैं।

ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और भाषा

ब्रज भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि ब्रज संस्कृति की आत्मा भी है। जन्माष्टमी, रासलीला, होली, और झूलनोत्सव जैसे त्योहारों में ब्रज भाषा के लोकगीतों और काव्य का विशेष महत्त्व होता है। प्रसिद्ध ब्रज गीत "होरी खेलन चली कुंजबिहारी" या "श्याम तेरी बंसी पुकारे राधा नाम" आज भी हर उम्र के भक्तों को भावविभोर कर देते हैं।

ब्रज भाषा का संरक्षण और वर्तमान स्थिति

ब्रज भाषा की लोकप्रियता और महत्त्व के बावजूद, आज वह भाषायी मुख्यधारा से थोड़ा हट गई है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली और शहरीकरण के प्रभाव से इसका प्रयोग कम हो रहा है। हालांकि, निम्न प्रयास इसके संरक्षण में सहायक हो सकते हैं:

1. ब्रज भाषा को स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल करना
1. लोक साहित्य और नाट्य रूपों को प्रोत्साहन देना
2. रेडियो, टीवी और सोशल मीडिया में ब्रज भाषा के कार्यक्रमों का निर्माण
3. ब्रज भाषा के साहित्य का अनुवाद और प्रचार
4. ब्रजभाषी साहित्यकारों को राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता देना

हिंदी और ब्रज: भविष्य की दिशा

हिंदी के विकास में ब्रज भाषा को विस्मृत नहीं किया जा सकता। दोनों का संबंध शरीर और आत्मा जैसा है। आज जब हिंदी वैश्विक स्तर पर विस्तार पा रही है, तब ब्रज भाषा जैसे क्षेत्रीय भाषायी स्रोतों को भी सशक्त करना होगा।

ब्रज भाषा का भावप्रवण साहित्य आज के संवेदनहीन युग में प्रेम, करुणा, भक्ति और सौंदर्य का संचार कर सकता है। उसकी भाषायी मिठास आज भी करोड़ों हृदयों को मोहती है।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा और ब्रज भाषा दोनों हमारी सांस्कृतिक पहचान और गौरव का प्रतीक हैं। हिंदी ने देश को जोड़ा है तो ब्रज भाषा ने हृदय को। ब्रज की बोली में न केवल श्रीकृष्ण की लीलाएँ बसती हैं, बल्कि भारतीयता की मूल चेतना भी प्रवाहित होती है।

आज जब वैश्वीकरण और तकनीकी युग में भाषाएँ संकट में हैं, तब हमें न केवल हिंदी को, बल्कि उसकी समृद्ध बोलियों जैसे ब्रज भाषा को भी सहेजना होगा। ब्रज भाषा का संरक्षण मात्र एक भाषायी प्रयास नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का भी माध्यम है।

योग: आध्यात्मिकता की ओर एक कदम

प्रवीण कुमार, मुख्य प्रबन्धक, जोखिम प्रबंधन विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

योग भारत की प्राचीनतम और अमूल्य धरोहरों में से एक है, जो न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक और आत्मिक शांति प्रदान करता है। "योग" शब्द संस्कृत के "युज" धातु से बना है, जिसका अर्थ है जोड़ना—अर्थात आत्मा का परमात्मा से मिलन। यह स्वस्थ जीवन - यापन की कला एवं विज्ञान है।

योग: आत्मा और ब्रह्मांड के बीच सामंजस्य की कला

आम तौर पर योग को स्वास्थ्य और फिटनेस के लिए एक व्यायाम पद्धति या थिरेपी के रूप में देखा जाता है। हालांकि यह दृष्टिकोण आंशिक रूप से सही है, लेकिन योग का वास्तविक उद्देश्य इससे कहीं अधिक गहरा और व्यापक है। योग केवल शरीर को स्वस्थ रखने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मा और ब्रह्मांड के बीच सामंजस्य स्थापित करने की एक दिव्य प्रक्रिया है।

योग का शाब्दिक अर्थ है – "जोड़ना"। यह जोड़ आत्मा और परमात्मा के बीच, शरीर और चेतना के बीच, तथा व्यक्ति और ब्रह्मांड के बीच होता है। योग एक ऐसी कला है जो व्यक्ति की आंतरिक ज्यामिति को ब्रह्मांडीय ऊर्जा के साथ संरेखित करती है, जिससे सर्वोच्च अनुभूति और संतुलन प्राप्त होता है।

योग हमारे शरीर, मन, भावना एवं ऊर्जा के स्तर पर काम करता है। योग का सबसे गहरा पक्ष इसकी आध्यात्मिकता है। जब व्यक्ति ध्यान, प्राणायाम और साधना के माध्यम से अपने भीतर झांकता है, तो वह आत्म-चिंतन और आत्म-ज्ञान की ओर अग्रसर होता है। योग हमें यह सिखाता है कि सच्चा सुख बाहरी वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे भीतर है। यह आत्मा की शुद्धि और चेतना की ऊँचाई का मार्ग है।

योग के प्रकार: योग के कई प्रकार हैं, जैसे:

- ✓ राजयोग – ध्यान और समाधि पर केंद्रित।
- ✓ भक्तियोग – ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण।
- ✓ कर्मयोग – निष्काम कर्म की भावना।
- ✓ ज्ञानयोग – आत्मा और ब्रह्म के ज्ञान का मार्ग।

इन सभी मार्गों का अंतिम उद्देश्य आत्म-साक्षात्कार और मोक्ष की प्राप्ति है। योग किसी विशेष धर्म, जाति या संस्कृति से बंधा नहीं है। यह एक विश्वव्यापी पद्धति है, जो हर व्यक्ति के लिए समान रूप से उपयोगी है।

जो कोई भी निष्ठा और समर्पण के साथ योग करता है, वह इसके लाभों को अनुभव कर सकता है, चाहे उसकी धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

शारीरिक स्तर पर, योगासन शरीर को लचीला और मजबूत बनाते हैं, रक्त परिसंचरण में सुधार करते हैं और विभिन्न रोगों से लड़ने की शक्ति प्रदान करते हैं। यह सब एक स्वस्थ शरीर का निर्माण करता है, जो आध्यात्मिक यात्रा के लिए एक मजबूत आधार है। जब शरीर स्वस्थ और ऊर्जावान होता है, तो मन भी अधिक एकाग्र और शांत रहता है।

मानसिक स्तर पर, प्राणायाम (श्वास नियंत्रण) और ध्यान का अभ्यास अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राणायाम हमारी श्वास को नियंत्रित कर मन की चंचलता को शांत करता है। यह ऑक्सीजन के प्रवाह को बढ़ाकर मस्तिष्क को नई ऊर्जा देता है, जिससे मानसिक स्पष्टता और एकाग्रता बढ़ती है। नियमित ध्यान से विचारों का शोर कम होता है, और हम अपने आंतरिक स्व से जुड़ पाते हैं। यह हमें अपनी भावनाओं को समझने, उन्हें नियंत्रित करने और नकारात्मकता से दूर रहने में मदद करता है।

योग हमें आत्म-अनुशासन और आत्म-नियंत्रण सिखाता है। यम (सामाजिक आचार) और नियम (व्यक्तिगत आचार) जैसे नैतिक सिद्धांत हमें एक संतुलित और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। जब हम इन सिद्धांतों का पालन करते हैं, तो हमारे भीतर सत्यनिष्ठा, अहिंसा और संतोष जैसे गुणों का विकास होता है, जो आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक हैं।

अध्यात्मिकता का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठानों का पालन करना नहीं है, बल्कि अपने वास्तविक स्वरूप को जानना और जीवन के गहरे अर्थ को समझना है। योग हमें इस यात्रा पर ले जाता है। यह हमें बाहरी दुनिया की मोह-माया से परे जाकर अपने भीतर झाँकने का अवसर देता है। जैसे-जैसे हम योग के अभ्यास में गहराई तक जाते हैं, हमें आंतरिक शांति, आनंद और संतुष्टि का अनुभव होता है। यह अनुभव हमें सिखाता है कि वास्तविक सुख

भौतिक वस्तुओं में नहीं, बल्कि हमारे भीतर ही निहित है।

योग केवल एक अभ्यास नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है। यह हमें प्रकृति से जुड़ना सिखाता है, हमें कृतज्ञ होना सिखाता है और हमें दूसरों के प्रति करुणा और प्रेम का भाव विकसित करने में मदद करता है। इस प्रकार, योग हमें न केवल एक स्वस्थ और सुखी जीवन देता है, बल्कि हमें आध्यात्मिक जागृति की ओर भी अग्रसर करता है, जहाँ हम स्वयं को और ब्रह्मांड को एक ही इकाई के रूप में देखते हैं। योग वास्तव में आध्यात्मिकता की ओर एक सशक्त और परिवर्तनकारी कदम है।

आज के समय में, जहाँ तनाव, चिंता और जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ आम हो गई हैं, योग एक शक्तिशाली निवारक और उपचारात्मक उपाय के रूप में उभरा है। इसके नियमित अभ्यास से अनगिनत स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

शारीरिक लाभ:

- लचीलापन और शक्ति: योगासन शरीर को लचीला बनाते हैं और मांसपेशियों को मजबूत करते हैं।
- बेहतर पाचन: कई आसन पाचन तंत्र को सक्रिय कर कब्ज और अन्य समस्याओं से राहत दिलाते हैं।
- रक्त परिसंचरण: योग रक्त प्रवाह में सुधार करता है, जिससे शरीर के सभी अंगों तक पर्याप्त ऑक्सीजन और पोषक तत्व पहुँचते हैं।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता: नियमित अभ्यास शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।
- ऊर्जा का स्तर: योग शरीर में ऊर्जा के स्तर को बढ़ाता है और थकान को कम करता है।

मानसिक और भावनात्मक लाभ:

- **तनाव मुक्ति:** प्राणायाम और ध्यान मन को शांत करते हैं, जिससे तनाव और चिंता कम होती है।
- **एकाग्रता:** योग एकाग्रता और स्मृति शक्ति को बढ़ाता है।
- **भावनात्मक संतुलन:** यह भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है और मानसिक स्थिरता प्रदान करता है।
- **आत्म-जागरूकता:** योग हमें अपने विचारों, भावनाओं और शारीरिक संवेदनाओं के प्रति अधिक जागरूक बनाता है।
- **सकारात्मक दृष्टिकोण:** नियमित अभ्यास से मन में सकारात्मकता बढ़ती है और जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण विकसित होता है।

भारत का योग में योगदान:

योग का उद्भव हजारों वर्ष पूर्व भारत में हुआ। सिंधु घाटी सभ्यता से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्यों से भी योग के प्राचीनतम रूप के संकेत मिलते हैं। योग के मूल सिद्धांतों और पद्धतियों को महर्षि पतंजलि ने अपने 'योग सूत्र' में व्यवस्थित रूप से संकलित किया, जिससे इसे एक दार्शनिक और व्यावहारिक आधार मिला। 'योग सूत्र' आज भी योग के अध्ययन और अभ्यास के लिए एक आधारशिला है।

भारत ने योग को न केवल एक शारीरिक अभ्यास के रूप में विकसित किया, बल्कि इसे एक समग्र जीवन दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया। योग का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। महर्षि पतंजलि ने योगसूत्र के माध्यम से योग को एक व्यवस्थित रूप दिया। यह केवल आसन और प्राणायाम तक सीमित नहीं है, बल्कि यम (नैतिक नियम), नियम (आत्म-शुद्धि), प्रत्याहार (इंद्रिय निग्रह), धारणा (एकाग्रता), ध्यान (मेडीटेशन) और समाधि (परमानंद) जैसे आठ अंगों (अष्टांग योग) का एक पूर्ण विज्ञान है। भारत ने इस परंपरा को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित और संवर्धित किया।

भारत के आध्यात्मिक गुरुओं और योग गुरुओं ने योग के ज्ञान को विश्व भर में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वामी विवेकानंद ने 19वीं सदी के अंत में पश्चिमी देशों में योग और वेदांत दर्शन का परिचय कराया। परमहंस योगानंद ने अपनी पुस्तक "ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी" के माध्यम से लाखों लोगों को योग से परिचित कराया। बी.के.एस. आयंगर, पट्टाभि जोइस, महर्षि महेश योगी और सदगुरु जग्गी वासुदेव जैसे आधुनिक योग गुरुओं ने योग की विभिन्न शैलियों और तकनीकों को लोकप्रिय बनाया और इसे वैश्विक मंच पर पहुंचाया।

प्रसिद्ध योग साधकों में से एक, स्वर्गीय बी. के. एस. अयंगर के अनुसार, योग दैनिक जीवन में संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने और उसे बनाए रखने का सबसे अच्छा तरीका है, साथ ही

प्रत्येक कार्य में सर्वोत्तम प्रदर्शन कौशल प्राप्त करना भी है।

भारत में आज भी योग अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी कार्य हो रहे हैं। विभिन्न योग विश्वविद्यालय, संस्थान और अनुसंधान केंद्र योग के चिकित्सीय और आध्यात्मिक लाभों का अध्ययन कर रहे हैं, और इसे वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। भारत सरकार भी योग के प्रचार-प्रसार के लिए अनेक पहल कर रही है, जिसमें योग प्रशिक्षण कार्यक्रम, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के आयोजन और योग पर्यटन को बढ़ावा देना शामिल है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का उद्भव:

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना भारत के अथक प्रयासों का परिणाम है। 27 सितंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री, श्री नरेंद्र मोदी, ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। उनके इस आह्वान को वैश्विक समुदाय से अभूतपूर्व समर्थन मिला।

11 दिसंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र के 177 सदस्य देशों ने सर्वसम्मति से 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाने का प्रस्ताव पारित किया। यह किसी भी संयुक्त राष्ट्र महासभा प्रस्ताव के लिए सबसे अधिक सह-प्रायोजकों का रिकॉर्ड था। 21 जून को इसलिए चुना गया क्योंकि यह उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन होता है, और भारतीय संस्कृति में इसका विशेष महत्व है। पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2015 को पूरे विश्व में बड़े उत्साह के साथ मनाया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस और योग में भारत का योगदान

संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को "अंतरराष्ट्रीय योग दिवस" घोषित किया गया है, जिससे विश्वभर में योग के महत्व को मान्यता मिली है। यह दिन हमें योग को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा देता है। योग करके हम अपने शरीर की अनेक बीमारियों को दूर कर सकते हैं । यह बीमारियाँ ही नहीं ठीक करता बल्कि यादाश्त, अवसाद, चिंता, डिप्रेशन, मोटापा, मनोविकारों को भी दूर भगाता है। शरीर में रक्त प्रवाह बढ़ाने का योग से अच्छा कोई और तरीका नहीं हो सकता है।

योग, भारत की एक प्राचीन आध्यात्मिक और शारीरिक अभ्यास परंपरा, आज वैश्विक स्तर पर स्वास्थ्य और कल्याण का प्रतीक बन गई है। यह भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक ऐसा अनमोल रत्न है, जिसे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से पूरे विश्व ने अपनाया है।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस भारत की 'वसुधैव कुटुंबकम्' (समस्त विश्व एक परिवार है) की भावना का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि कैसे भारत ने एक प्राचीन ज्ञान को मानवता के कल्याण के लिए साझा किया है। योग आज केवल शारीरिक स्वास्थ्य का साधन नहीं, बल्कि मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और आध्यात्मिक उत्थान का एक वैश्विक आंदोलन बन गया है।

भारत ने इस बहुमूल्य धरोहर को विश्व के साथ साझा करके एक स्वस्थ, अधिक सामंजस्यपूर्ण और शांतिपूर्ण भविष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस हमें इस प्राचीन विद्या के प्रति भारत के अतुलनीय योगदान को याद दिलाता है और हमें इसके सार्वभौमिक लाभों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

आज के तनावपूर्ण और भागदौड़ भरे जीवन में योग एक वरदान है। यह न केवल मानसिक शांति प्रदान करता है, बल्कि व्यक्ति को अपने अस्तित्व के गहरे स्तरों से जोड़ता है। योग के अभ्यास से व्यक्ति में सहनशीलता, करुणा, और आत्म-नियंत्रण जैसे गुण विकसित होते हैं।

अत:, आइए हम भी योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएँ और इसके अनंत लाभों को अनुभव करें।

ऑपरेशन सिंदूर

मुकुल व्यास, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

जब नाश मनुज पर छाता है, पहले विवेक मर जाता है।

हित वचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना।

तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अंतिम संकल्प सुनाता हूँ।

याचना नहीं, अब रण होगा, जीवन-जय या कि मरण होगा।

भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा संचालित ऑपरेशन सिंदूर, रामधारी सिंह दिनकर जी के महाकाव्य "रश्मिरथी" की उक्त पंक्तियों का एक यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारे भारतीय सशस्त्र बलों ने अपनी सभी प्रेस वार्ताओं में पड़ोसी देश को बहुत ही स्पष्ट संदेश दिए गए है, फिर चाहे माध्यम शिव तांडव स्त्रोत हो या रामधारी सिंह दिनकर जी की उक्त पंक्तियों का उच्चारण।

6 और 7 मई, 2025 के बीच की रात 1.05 से लेकर 1.30 बजे तक भारतीय सशस्त्र बलों ने एक सैन्य अभियान चलाया, जिसका नाम 'ऑपरेशन सिंदूर' रखा गया। भारत ने 22 अप्रैल 2025 में हुए पहलगाम आतंकवादी हमले के प्रत्युत्तर में ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया, जिसमें पाकिस्तान तथा पाकिस्तान के अवैध कब्जे वाले जम्मू और कश्मीर में कई आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया गया। यह कार्रवाई सीमा पार आतंकवाद को 'रोकने' और उससे 'निपटने' के इरादे के साथ की गई थी, विशेषतः 22 अप्रैल, 2025 को हुए पहलगाम जैसे हमलों को रोकने के लिए, जिनमें 26 नागरिकों (25 भारतीय और एक नेपाली नागरिकों) की जान ले ली गई थी। इस हमले ने पूरे देश को झकझोर दिया, लेकिन इसी हमले के दर्द को भारत ने हिम्मत में बदल दिया । जिन माता और बहनों के सिन्दूर को उजाड़ने की दुश्मन ने साजिश की उसी सिन्दूर की सौगंध लेकर, उसी सिन्दूर के लाल रंग को अपना साहस बनाया और जैसे रणचंडी दुष्टों के रक्त से अत्याचार को खत्म करती है उसी तरह सिन्दूर का बदला दुश्मन की जमीन पर उन्हीं के खून से लिया। आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होकर खड़े होने की इसी ऊर्जा का परिणाम था "ऑपरेशन सिन्दूर", जिसने दुश्मन की करतूतों का मुंहतोड़ जवाब दिया और आतंकवाद को भारत का सीधा संदेश दिया कि वह अब और बर्दाश्त नहीं करेगा। इस कार्रवाई का उद्देश्य, भारत की ज़मीन पर सीमा पार आतंकवाद के लिए ज़िम्मेदार गुटों की क्षमताओं को ख़त्म करना था। इसमें पाकिस्तान और उसके क़ब्ज़े वाला कश्मीर में उन ठिकानों को निशाना बनाया गया, जहाँ से आतंकवाद को बढ़ावा दिया जाता था।

'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में स्थित जैश-ए-मोहम्मद, लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन से संबद्ध आतंकी ठिकानों को लक्षित किया। भारत ने अपनी कार्रवाई को 'लक्ष्य-केंद्रित, नपी-तुली और नॉन एस्केलेटरी (गैर भड़काऊ)' बताया। इस ऑपरेशन में जान-बूझकर पाकिस्तान के सैन्य प्रतिष्ठानों को निशाना नहीं बनाया गया, ताकि तनाव बढ़ने के ख़तरे को कम किया जा सके। इस कार्रवाई में 100 से अधिक आतंकी मारे जाने का अनुमान लगाया जा रहा है, जिनमें जैश-ए-मोहम्मद का लीडर अब्दुल रऊफ अज़हर जैसा बड़ा नाम भी शामिल है, जो दिसंबर 1999 में आइसी-814 की हाइजैकिंग और अमेरिकी पत्रकार डैनियल पर्ल की हत्या में शामिल था। माना जाता है कि जैश-ए-मोहम्मद प्रमुख मसूद अजहर के परिवार के 10 सदस्य भी इसमें मारे गए।

ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना ने पाकिस्तान में जमकर तबाही मचाई। भारत ने कुशल रणनीति के तहत पाकिस्तान और पीओके में मौजूद 9 आतंकी ठिकानों को तबाह किया और फिर पाक सेना पर जवाबी कार्रवाई करते हुए 11 एयरबेस भी कुचल डाले । इस लिस्ट में पाकिस्तान की 4 आतंकी अड्डों (बहावलपुर, मुर्दिके, सरजाल और मेहमूना जोया) और पीओके के 5 आतंकी अड्डों (सवाई नाला, मुजफ्फराबाद, सैयदना बिलाल, गुलपुर, कोटली, बरनाला, भीमबर और अब्बास) के नाम शामिल हैं। आतंक की नर्सरी कहा जाने वाला मुर्दिके, पाकिस्तान का बड़ा कमर्शियल हब माना जाता है और यहीं लश्कर-ए-तैयबा का मुख्यालय भी मौजूद है। 200 एकड़ में फैले इस मुख्यालय में आतंकियों के ट्रेनिंग कैंप चलाए जाते हैं। पाकिस्तान के पंजाब में बहावलपुर में जैश-ए-मोहम्मद का बेस है। 26/11 आतंकी हमलों का मास्टरमाइंड मसूद अजहर यहीं से अपने नापाक आतंकी मंसूबों को अंजाम दिया करता है।

22 अप्रैल, 2025 को आतंकवादियों ने सभी निर्दोष पुरुष पर्यटकों पर उनके धर्म के आधार पर हमला किया व उनके परिवार के सदस्यों के सामने ही उनकी निर्मम हत्या कर दी गई।

'ऑपरेशन सिंदूर' नाम का उद्देश्य कश्मीर आतंकवादी हमलों के पीड़ितों और बचे लोगों के प्रति मानवीयता का एक मजबूत संदेश भेजना है । प्रतिनिधित्व को दर्शाने के एक दुर्लभ और "प्रतीकात्मक" प्रयास में, ऑपरेशन सिंदूर पर नई दिल्ली में उच्च स्तरीय प्रेस वार्ता का नेतृत्व दो महिला अधिकारियों - कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने किया। विदेश सचिव विक्रम मिसरी द्वारा परिचय के बाद, ब्रीफिंग का संचालन उक्त दो महिला अधिकारियों द्वारा किया गया। महिला अधिकारियों द्वारा की गई इस प्रेस वार्ता ने भारत के इरादे व उद्देश्य को बहुत ही स्पष्टता के साथ प्रदर्शित किया है। यह स्पष्ट किया किया गया कि जब बात देश हित की हो तो हमारे भारतवर्ष में धर्म व लिंग के आधार पर निर्णय नहीं लिए जाते हैं।

ऑपरेशन के दौरान, भारतीय सेना ने अत्याधुनिक हथियारों और रणनीति का प्रदर्शन किया। उन्होंने ड्रोन के माध्यम से निगरानी की और वास्तविक समय में जानकारी साझा की, जिससे सटीक कार्रवाई करने में मदद मिली। ऑपरेशन सिन्दूर की सफलता सिर्फ सैन्य ताकत का ही परिणाम नहीं थी, बल्कि यह उन रणनीतिकारों और शूरवीरों की असाधारण क्षमता का भी परिणाम था जिन्होंने इसे अंजाम दिया। इस ऑपरेशन में कई ऐसे गुमनाम नायक थे जिनकी बहादुरी और सूझबूझ ने जीत सुनिश्चित की। 'ऑपरेशन सिन्दूर' की सफलता के पीछे कई दूरदर्शी रणनीतिकारों और निडर शूरवीरों का हाथ था। हालांकि सेना अपने अभियानों में शामिल वैयक्तिकों के नाम गोपनीय रखती है, फिर भी कुछ प्रमुख हस्तियों के योगदान को स्वीकार किया जा सकता है जिन्होंने इस ऑपरेशन की बागडोर संभाली :

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल: उन्हें इस ऑपरेशन की कमान सौंपी गई थी। उनके नेतृत्व और रणनीतिक दृष्टिकोण ने इस ऑपरेशन की सफलता में निर्णायक भूमिका निभाई। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान: उन्होंने तीनों सेनाओं के बीच समन्वय स्थापित किया और ऑपरेशन को सही दिशा में चलाया। उनकी भूमिका सैन्य रणनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण रही। थल सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल उपेंद्र द्विवेदी, एयर मार्शल अमर प्रीत सिंह और नौसेनाध्यक्ष एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी: ये तीनों 1984 एनडीए बैच के साथी रहे हैं और पहली बार तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने मिलकर इतनी बड़ी और ऐतिहासिक कार्रवाई को अंजाम दिया। यह भारतीय सेना की एकजुटता और पेशेवर क्षमता का अद्वितीय उदाहरण था।

विदेश सचिव विक्रम मिसरी, केंद्रीय गृह सचिव गोविंद मोहन और जम्मू-कश्मीर के मुख्य सचिव अटल डुल्लू: इन प्रशासनिक अधिकारियों ने भी ऑपरेशन के कूटनीतिक और आंतरिक सुरक्षा पहलुओं को संभाला, जो इसकी समग्र सफलता के लिए महत्वपूर्ण थे।

कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह : इस महत्वपूर्ण ऑपरेशन की एक और खास बात थे महिला सैन्य अफसरों की भूमिका। देश की बेटियों के सुहाग को उजाड़ने वालों को देश की बेटियों ने करारा जवाब दिया। ऑपरेशन सिन्दूर का चेहरा बनीं कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह जिन्होंने पकिस्तान के नापाक चेहरे को सबूतों के साथ बेनकाब किया।

सबसे महत्वपूर्ण : वे सभी अज्ञात सैनिक, पायलट और विशेष बल के जवान जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर दुश्मन के ठिकानों में घुसकर सटीक हमले किए और सुरक्षित वापस लौटे। ये ही असली नायक हैं, जिनकी बहादुरी और बलिदान पर राष्ट्र हमेशा गर्व करेगा।

यह 1971 के युद्ध के बाद भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा किया गया सबसे बड़ा सैन्य अभियान था। इसके अलावा, 2016 के सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 के बालाकोट एयरस्ट्राइक जैसे पिछले ऑपरेशनों के विपरीत, जो कि सीमित दायरे में एक लक्ष्य-केंद्रित कार्रवाई थी, ऑपरेशन सिंदूर बहु-क्षेत्रीय और कहीं अधिक सटीक कार्रवाई थी, जो पाकिस्तान के क़ब्ज़े वाले कश्मीर में ही नहीं बल्कि पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में भी की गई।

'ऑपरेशन सिंदूर' में उच्च परिशुद्धता वाले हथियारों का प्रयोग किया गया। भारतीय वायु सेना ने इन अभियानों को अत्यधिक सटीकता और न्यूनतम सहायक क्षति के साथ अंजाम देने के लिये स्कैल्प क्रूज़ मिसाइल, हैमर प्रिसिजन-गाइडेड बम और लोइटरिंग म्यूनिशन जैसी उन्नत प्रणालियों का इस्तेमाल किया।

स्कैल्प, जिसे "स्टॉर्म शैडो" भी कहा जाता है, एक लंबी दूरी की, हवा से प्रक्षेपित की जाने वाली क्रूज़ मिसाइल है। इसका उपयोग दुश्मन के क्षेत्र में स्थित किलेबंद ठिकानों और महत्त्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे जैसे उच्च-मूल्य वाले स्थिर लक्ष्यों पर गहराई तक सटीक हमले करने के लिये किया जाता है। यह यूरोपीय रक्षा फर्म एमबीडीए द्वारा विकसित है और इसे सामान्यतः राफेल जैसे उन्नत लड़ाकू जेट पर तैनात किया जाता है। इस मिसाइल

का उपयोग इराक, लीबिया और सीरिया जैसे देशों में युद्ध परिदृश्यों में अभियानों के दौरान किया जा चुका है तथा हाल ही में दुश्मन के ठिकानों पर सटीक हमले हेतु यूक्रेन को इसकी आपूर्ति की गई है।

हैमर प्रिसिज़न-गाइडेड बम (Highly Agile Modular Munition Extended Range) एक प्रिसिज़न-गाइडेड बम प्रणाली है, जिसका उपयोग उन लक्ष्यों पर सटीक हमले के लिये किया गया जो मध्यम दूरी पर स्थित होते हैं, जैसे कि गतिशील या मोबाइल आतंकी ठिकाने। यह प्रणाली कठिन परिस्थितियों में भी उच्च सटीकता के साथ लक्ष्य भेदन में सक्षम है। यह फ्रांसीसी रक्षा कंपनी सफ्रान इलेक्ट्रॉनिक्स एंड डिफेंस द्वारा निर्मित व विकसित है। हैमर को जीपीएस, इन्फ्रारेड इमेजिंग और लेजर टार्गेटिंग सहित विभिन्न मार्गदर्शन प्रणालियों से सुसज्जित किया जा सकता है, जिससे यह विभिन्न लक्ष्यों के विरुद्ध बहुमुखी हो जाता है।

लोइटरिंग म्यूनिशन, इन्हें "कामिकेज़ ड्रोन" के नाम से भी जाना जाता है, लोइटरिंग म्यूनिशन का उपयोग निगरानी और लक्ष्य पर निशाना साधने के लिये किया जाता है, जो सटीक हमला करने से पहले दुश्मन के इलाके में गश्त करते हैं। यह रियल-टाइम खुफिया जानकारी प्रदान करते हैं और लंबी अवधि तक मिशन पर सक्रिय रह सकते हैं। इनमें लक्ष्य को कब और कैसे साधना है, इस बारे में स्वायत्त निर्णय लेने की क्षमता होती है, जिससे संचालन में लचीलापन बढ़ता है और ऑपरेटरों के लिये जोखिम में उल्लेखनीय कमी आती है।

विश्वभर की मीडिया ने भारत की इस कार्रवाई को काफी हद तक सकारात्मक नज़र से देखा है। 'वॉल स्ट्रीट जर्नल' में कहा गया कि ऑपरेशन सिंदूर 'कश्मीर में पर्यटकों पर हुए घातक आतंकी हमले का बदला लेने के लिए किया गया, जिससे परमाणु हथियारों से संपन्न पड़ोसियों के बीच टकराव बढ़ गया है'। 'बीबीसी' ने लिखा, 'भारतीय रक्षा मंत्रालय ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर 22 अप्रैल 2025 को पाकिस्तानी आतंकवादियों द्वारा किए गए हमले के लिए ज़िम्मेदार लोगों को 'जवाबदेह' ठहराने की 'प्रतिबद्धता' का हिस्सा था, जिसमें 25 भारतीय और एक नेपाली नागरिक को मार दिया गया था। फ़्रांसीसी अखबार 'ले मोंडे' ने 7 मई को हुए ऑपरेशन सिंदूर की तुलना उरी और पुलवामा में हुए आतंकी हमलों के बाद की गई पिछली दो कार्रवाइयों से की। अखबार ने लिखा कि इस बार की जवाबी कार्रवाई 'बहुत ज़्यादा तेज़ और जवाबी कार्रवाईयो के लिहाज़ से बहुत ज़्यादा आक्रामक' थी। तुर्की की सरकारी समाचार एजेंसी 'अनादोलु' ने कहा कि भारत की कार्रवाइयों के बाद 'पाकिस्तान और पाकिस्तानी कश्मीर के कई इलाकों में धमाकों की आवाज़ें सुनी गईं।' भारतीय सेना के बयानों के साथ-साथ इसने पाकिस्तानी सेना के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी और पाकिस्तानी प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ़ के बयान को भी जगह दी । रूस की समाचार एजेंसी 'तास' ने अपनी रिपोर्टिंग में भारत के आधिकारिक बयानों का उल्लेख किया और इस बात पर विशेष ज़ोर दिया कि भारतीय कार्रवाई का मक़सद 'सीमा पार से बनाई जा रही आतंकी योजनाओं की जड़ों को निशाना बनाना' था।

पाकिस्तान के विरुद्ध भारत द्वारा अब तक कई सैन्य अभियान चलाए गए हैं और सभी सैन्य अभियानों में विजय प्राप्त करने के बाद भी पाकिस्तान द्वारा सीमागत गतिविधियों में कोई सुधार नहीं देखा गया।

ऑपरेशन रिडल (1965 भारत-पाक युद्ध) : यह अभियान 1965 में पाकिस्तान द्वारा नियंत्रण रेखा (LoC) का उल्लंघन कर जम्मू और कश्मीर में प्रवेश करने के जवाब में भारत की सैन्य प्रतिक्रिया थी। यह विशेष रूप से पाकिस्तान के ऑपरेशन जिब्राल्टर और ग्रैंड स्लैम का प्रतिकार करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था।

ऑपरेशन एब्लेज (1965 भारत-पाक युद्ध) : यह अभियान भारतीय सेना द्वारा अप्रैल 1965 में कच्छ के रण क्षेत्र में भारत-पाकिस्तान सीमा पर बढ़ते तनाव के मद्देनज़र एक पूर्व-आक्रामक कदम के रूप में शुरू किया गया था। यद्यपि इस ऑपरेशन से तत्काल पूर्ण युद्ध की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई, लेकिन इसने भारत की सैन्य तत्परता को दर्शाया और अगस्त 1965 में प्रारंभ हुए पूर्ण पैमाने के युद्ध के लिये आधार तैयार किया। ऑपरेशन रिडल और ऑपरेशन एब्लेज दोनों ने मिलकर पाकिस्तान को पीछे हटने पर मजबूर किया और वर्ष 1966 में ताशकंद समझौते के लिये मार्ग प्रशस्त किया।

ऑपरेशन कैक्टस लिली (1971 भारत-पाक युद्ध) : यह बांग्लादेश मुक्ति संग्राम के दौरान भारतीय सेना और वायुसेना द्वारा संचालित एक सामरिक हवाई अभियान था। दिसंबर 1971 में इस अभियान के अंतर्गत मेघना नदी को पार कर, आशुगंज/भैरब बाज़ार में स्थित पाकिस्तानी रक्षा चौकियों को भेदते हुए भारतीय सेनाओं ने ढाका की ओर तेज़ी से बढ़त बनाई थी।

ऑपरेशन ट्राइडेंट और ऑपरेशन पायथन (1971 भारत-पाक युद्ध): ये दोनों अभियान 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान भारतीय नौसेना द्वारा पाकिस्तान के कराची बंदरगाह पर किये गए आक्रामक नौसैनिक अभियान थे। ऑपरेशन ट्राइडेंट में पहली बार (पूरे क्षेत्र में) एंटी-शिप मिसाइलों का उपयोग किया गया। दोनों अभियानों ने पाकिस्तान की हार और बांग्लादेश के निर्माण में योगदान दिया।

ऑपरेशन मेघदूत (1984) : 13 अप्रैल 1984 को प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के नेतृत्व में, भारत ने ऑपरेशन मेघदूत शुरू किया, जिसके तहत बिलाफोंड ला और सिया ला जैसे प्रमुख दर्रे सहित सियाचिन ग्लेशियर और साल्टोरो रेंज पर नियंत्रण हासिल किया गया।

ऑपरेशन विजय (1999) : यह कारगिल युद्ध के दौरान पाकिस्तानी सेना द्वारा कब्जा किये गये क्षेत्र को पुनः प्राप्त करने के लिये भारत का सैन्य अभियान था। इसने सफलतापूर्वक पाकिस्तानी सैनिकों को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया, जिससे भारत की विजय हुई।

ऑपरेशन सफेद सागर (कारगिल युद्ध 1999) : इसमें भारतीय वायुसेना ने नियंत्रण रेखा पर भारतीय ठिकानों से पाकिस्तानी सैनिकों को खदेड़ने के लिये हवाई हमले किये थे। यह वर्ष 1971 के बाद से हवाई शक्ति का पहला बड़े पैमाने पर इस्तेमाल था।

2016 सर्जिकल स्ट्राइक : उरी हमले के प्रत्युत्तर में भारतीय विशेष बलों द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक की गई थी। इस ऑपरेशन में पाकिस्तान के कब्ज़े वाले कश्मीर में नियंत्रण रेखा के पार आतंकवादी लॉन्च पैड को लक्षित किया गया था।

ऑपरेशन बंदर (2019 – बालाकोट एयर स्ट्राइक) : 14 फरवरी, 2019 को पुलवामा हमले के जवाब में, भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के बालाकोट स्थित जैश-ए-मोहम्मद के प्रशिक्षण शिविरों पर हवाई हमले किये।

पहलगाम हमला एक दुखद घटना थी, लेकिन इसने भारत को एक नया संकल्प दिया। ऑपरेशन सिन्दूर उसी संकल्प का परिणाम था, जिसने दुश्मन की करतूतों का मुंहतोड़ जवाब दिया और आतंकवाद को भारत का सीधा संदेश दिया। ऑपरेशन सिन्दूर ने यह साबित कर दिया कि भारत आतंकवाद के खिलाफ कभी नहीं झुकेगा और अपने नागरिकों की रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहेगा। यह एक ऐसा सिन्दूर था जिसने देश के माथे पर जीत का तिलक लगाया और आतंकवाद के खिलाफ भारत के अडिग संकल्प को दर्शाया। यह संदेश था: भारत शांतिप्रिय देश है, लेकिन वह अपनी संप्रभुता, अखंडता और अपने नागरिकों की सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करेगा। जो भी भारत की धरती पर आतंक फैलाएगा, उसे बख्शा नहीं जाएगा। यह ऑपरेशन केवल एक सैन्य कार्रवाई नहीं थी; यह भारत की राष्ट्रीय इच्छाशक्ति का प्रतीक थी । इस ऑपरेशन ने न केवल आतंकवादियों के मनोबल को तोड़ा, बल्कि पड़ोसी देशों को भी यह स्पष्ट कर दिया कि भारत किसी भी तरह की सीमा पार आतंकवाद को बर्दाश्त नहीं करेगा। यह एक दृढ़ चेतावनी थी कि भारत अपनी रक्षा के लिए हर संभव कदम उठाने से पीछे नहीं हटेगा, चाहे वह सीमा पार सर्जिकल स्ट्राइक हो या किसी भी रूप में प्रत्यक्ष कार्रवाई। माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने वक्तव्य में स्पष्ट रूप से विश्व को अपना संदेश दिया है कि "भारत पर आंतकी हमला हुआ तो मुँहतोड़ जवाब दिया जाएगा.... कोई भी न्यूक्लीयर ब्लैकमेल भारत नहीं सहेगा.... टेरर और टॉक, टेरर और ट्रेड एक साथ नहीं चल सकते और साथ ही पानी और खून भी एक साथ नहीं बह सकते... हमारी यह घोषित नीति है कि अगर पाकिस्तान से बात होगी तो आंतकवाद पर ही होगी.. पीओके पर ही होगी...।"

पहलगाम का घाव कभी नहीं भरेगा, लेकिन ऑपरेशन सिंदूर ने यह सुनिश्चित किया कि उस खून का हिसाब लिया गया। यह एक ऐसी महागाथा है जो अदम्य साहस, अटूट संकल्प और राष्ट्र के प्रति असीम प्रेम को दर्शाती है। यह हमें याद दिलाती है कि जब भी भारत पर संकट आएगा, उसके सिंदूर को रक्त से सनाने की कोशिश की जाएगी, तब भारत का हर सिपाही, हर नागरिक उस सिंदूर का बदला खून से लेने को तत्पर रहेगा। ऑपरेशन सिंदूर, भारतीय सेना के शौर्य और भारत के अटल संकल्प का एक ऐसा प्रतीक बन गया, जो आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरित करता रहेगा कि आतंक का जवाब केवल ताकत और दृढ़ संकल्प से ही दिया जा सकता है। यह सिर्फ एक अध्याय नहीं था, बल्कि आतंकवाद के खिलाफ भारत की निरंतर लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है ।

राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर

1. (ग)	2. (ख)	3. (ग)	4. (घ)	5. (ख)
6. (ग)	7. (ग)	8. (B)	9. (ग)	10. (घ)
11. (ख)	12. (ख)	13. (ग)	14. (ग)	15. (ख)

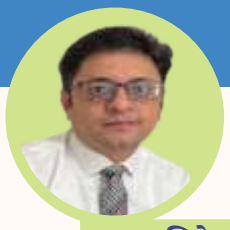

खेती को बचाइए, भविष्य को संवारिए: हरित भारत की ओर कदम

अभिषेक आर्या, मुख्य प्रबंधक, जोखिम प्रबंधन विभाग, केंद्रीय कार्यालय

जब आप किसी हरे-भरे खेत के पास से गुजरते हैं, धूप में लहराते धान के पौधों को देखते हैं, या बैल की जोड़ी से जुताई होती हुई खेत की मिट्टी की खुशबू महसूस करते हैं — तो एक गर्व सा महसूस होता है। ये खेत सिर्फ भारत की आत्मा नहीं हैं, ये हमारी रोज़ी-रोटी और अर्थव्यवस्था का भी आधार हैं। लेकिन आज इन खेतों पर एक संकट मंडरा रहा है — जलवायु परिवर्तन का संकट। यह संकट सिर्फ किसानों का नहीं है, यह हम सबका है — खासकर हमारा, जो बैंकिंग और फाइनेंस की दुनिया से जुड़े हुए हैं।

खेती और जलवायु परिवर्तन: एक दोधारी तलवार

खेती, जो एक समय पर्यावरण के सबसे करीब मानी जाती थी, आज उसी पर्यावरण को नुकसान भी पहुँचा रही है। दुनिया भर में जितनी ग्रीनहाउस गैसें (GHG) निकलती हैं, उनमें से लगभग 17% खेती और पशुपालन से आती हैं। भारत में यह आंकड़ा 14% तक पहुंच चुका है। इसमें सबसे बड़ा हिस्सा मवेशियों के पाचन से निकलने वाली गैसों का है, उसके बाद गोबर, रासायनिक खाद, धान की खेती और पराली जलाना आता है। यह आंकड़े बताते हैं कि हमारे देश की खेती जलवायु के लिए एक चुनौती बन गई है — और यह चुनौती भविष्य के लिए खतरा बन सकती है।

भारत के पास दुनिया की सबसे बड़ी पशुधन आबादी है और हम धान के उत्पादन में भी अव्वल हैं। यही वजह है कि हमारी खेती से निकलने वाली गैसों का अनुपात वैश्विक औसत से कहीं अधिक है।

बैंकिंग का क्या रोल?

अब सवाल उठता है कि हम बैंकर्स का इसमें क्या काम है?

देखिए, हम भले ही खेत में हल न चलाते हों, लेकिन हमारी कलम से निकले फैसले हजारों खेतों की दिशा बदल सकते हैं। हमारे दिए गए लोन, क्रेडिट फैसले और योजनाएं खेती के भविष्य को तय कर सकती हैं। अगर हमने सही दिशा में निवेश किया — जैसे ऑर्गेनिक खेती, सोलर पंप, टिकाऊ सिंचाई सिस्टम — तो हम सिर्फ किसान की मदद नहीं करेंगे, बल्कि देश और धरती की भी मदद करेंगे।

बैंकिंग और क्लाइमेट-स्मार्ट एग्रीकल्चर का रिश्ता अब मजबूती से जुड़ गया है। आने वाले समय में जो बैंक इस बदलाव को जल्दी समझेगा और अपनाएगा, वही टिकेगा और बढ़ेगा।

छोटे किसान, बड़ी चिंता और बड़ी उम्मीद

हमारे देश में करीब 80% किसान छोटे और सीमांत हैं। इनके पास ना तो महंगी मशीनें हैं, ना पक्के सिंचाई के साधन और ना ही जलवायु परिवर्तन से निपटने की कोई तैयारी। ये किसान मौसम की मार, सूखा, बाढ़, कीटों के हमले जैसी हर आपदा का सबसे पहला शिकार बनते हैं, और जब फसल खराब होती है, तो बैंक का लोन डूबने का खतरा भी बढ़ जाता है।

लेकिन यही किसान अगर सही तकनीक, जानकारी और सपोर्ट पाए — तो न सिर्फ खुद को बचा सकता है, बल्कि देश की खाद्य सुरक्षा का मजबूत स्तंभ बन सकता है।

खेती से गैसें कैसे निकलती हैं?

खेती से निकलने वाली ग्रीनहाउस गैसों की बात करें तो इसका सबसे बड़ा स्रोत है पशुओं के पाचन से निकलने वाली गैसें — यानी गाय-भैंसों के डकार और पाद से निकलने वाली मीथेन। इसके बाद गोबर से निकलने वाली गैसें, केमिकल खाद का ज्यादा इस्तेमाल, धान की खेती में पानी भरकर रखने की प्रक्रिया और पराली जलाने की आदत — ये सभी प्रमुख कारण हैं। इसके अलावा जंगलों की कटाई और गीली ज़मीन को सूखा कर खेती करने से भी भारी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड और दूसरी गैसें निकलती हैं।

अगर हम इन गतिविधियों पर ध्यान दें, तो हम बहुत हद तक उत्सर्जन को कम कर सकते हैं।

बैंक कैसे ला सकते हैं बदलाव?

अब असली सवाल — बैंक क्या कर सकता है?

बैंकों के पास आज वह ताकत है जिससे वह खेती के पूरे ढांचे को जलवायु के अनुकूल बना सकते हैं। जब बैंक किसी किसान को एक सोलर पंप खरीदने के लिए सस्ता लोन देता है, या ऑर्गेनिक खेती शुरू करने पर ब्याज में छूट देता है — तो वह सिर्फ लोन नहीं दे रहा, वह एक बदलाव को प्रोत्साहन दे रहा है।

बैंक खेती में ग्रीन लोन (पर्यावरण के अनुकूल लोन) देकर सौर ऊर्जा पर चलने वाले पंप, ड्रिप सिंचाई प्रणाली, जैविक खाद, गोबर गैस संयंत्र जैसी चीजों को बढ़ावा दे सकते हैं। इसके अलावा, आजकल "कार्बन क्रेडिट" भी एक नई कमाई का जरिया बन रही है — यानी जो किसान क्लीन खेती करे, उसे एक तरह का बोनस मिलता है। बैंक अगर इन क्रेडिट्स को बेचने में किसानों की मदद करें, तो ये नया इनकम सोर्स भी बन सकता है।

इसी तरह, अगर बैंक जोखिम आधारित ब्याज दर लागू करें — यानी जो किसान पर्यावरण को बचाने वाली तकनीक अपनाए, उसे सस्ती ब्याज दर मिले — तो बाकी किसान भी ऐसा करने के लिए प्रेरित होंगे।

साथ ही, बैंक किसानों को सलाह देने वाले ऐप्स, मोबाइल मैसेज, हेल्पलाइन, या स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्रों से जोड़ सकते हैं। इससे किसानों को मौसम की जानकारी, फसल की सलाह, कीट प्रबंधन और मार्केट प्राइस जैसी जरूरी जानकारियाँ सही समय पर मिलेंगी।

सिर्फ योजनाएं नहीं, समझदारी चाहिए

सरकार ने भी खेती को टिकाऊ बनाने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं — जैसे राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन, पीएम-किसान, ई-नाम (eNAM), और सोलर पंप पर सब्सिडी। इन योजनाओं का लाभ तभी मिलेगा जब बैंक इनसे जुड़ेगा और किसानों को इन तक पहुंचाने में मदद करेगा।

अभी ज़रूरत है कि बैंक फील्ड स्तर पर जाकर किसानों को समझाएं कि ये योजनाएं उनके लिए कितनी फायदेमंद हो सकती हैं।

अनुभव से सीखें: दुनिया क्या कर रही है?

दुनिया के कई देश इस दिशा में बहुत आगे निकल चुके हैं। जैसे ब्राज़ील सैटेलाइट से फसल की निगरानी करता है और ग्रीन लोन देता है। इंडोनेशिया टिकाऊ पाम ऑयल उत्पादन से जुड़े किसानों को सस्ते लोन देता है। चीन ने खेती के क्षेत्र के हिसाब से अलग-अलग टिकाऊ लोन स्कीम बनाई हैं।

भारत को इनसे सीख लेकर अपनी ज़रूरत के मुताबिक मॉडल तैयार करने की जरूरत है।

कुछ चुनौतियाँ भी हैं

हालांकि ये बदलाव आसान नहीं हैं। किसानों को नई चीजों को अपनाने में समय लगता है। उन्हें डर होता है कि अगर उन्होंने परंपरागत तरीका छोड़ा और नई तकनीक काम नहीं आई, तो क्या होगा? कई बार ऑर्गेनिक खेती के लिए बाजार नहीं मिलता, तो भी किसान निराश होता है।

पर जहां चुनौती है, वहीं मौका भी है। बैंक अगर जोखिम को थोड़ा सा बांट लें — उदाहरण के लिए बीमा जोड़कर लोन दें, या शुरुआती लागत का कुछ हिस्सा माफ करें — तो किसानों को प्रेरणा मिलेगी।

डिजिटल टेक्नोलॉजी से बड़ा बदलाव

आज अगर हम चाहें, तो किसानों को मोबाइल से जोड़कर बहुत कुछ बदल सकते हैं। सोचिए — अगर किसान को उसके फोन पर मौसम की जानकारी मिले, फसल की कीमत का अपडेट मिले, सैटेलाइट से उसके खेत की निगरानी हो, और उसे समय पर खेती की सलाह मिले — तो कितना फायदा हो सकता है।

बैंक इस तकनीक से जुड़कर अपने लोन को भी सुरक्षित बना सकते हैं और किसानों को भी ताकत दे सकते हैं।

अब वक्त है सोच बदलने का

हम बैंकर्स की ज़िम्मेदारी सिर्फ ब्याज और एनपीए तक सीमित नहीं होनी चाहिए। अब समय आ गया है कि हम यह भी सोचें कि हमारी फाइनेंसिंग किस दिशा में जा रही है — क्या हम सिर्फ आज की फसल देख रहे हैं या आने वाली पीढ़ियों की ज़मीन को भी सुरक्षित बना रहे हैं?

अगर आज हमने खेती को जलवायु के अनुकूल बनाने के लिए छोटे-छोटे कदम उठाए — तो कल हमारा देश, हमारा पर्यावरण और हमारी बैंकिंग प्रणाली, तीनों सुरक्षित होंगे।

निष्कर्ष: बैंकर अब सिर्फ लोनदाता नहीं, बदलाव के साथी हैं

किसान की मेहनत, धरती की उर्वरता और मौसम का संतुलन — इन तीनों के बीच अगर कोई पुल बन सकता है, तो वह बैंकिंग है। एक सही दिशा में दिया गया लोन — जैसे ऑर्गेनिक खेती के लिए या जलवायु-स्मार्ट तकनीक के लिए — एक किसान के साथ-साथ पूरे समाज को फायदा पहुंचा सकता है।

आज अगर हमने सही फैसले लिए, तो आने वाला कल हरियाली से भरपूर होगा — खेतों में भी, और हमारी फाइनेंशियल स्टेटमेंट्स में भी।

हंसी की फुलझड़ियाँ

पत्नी ने रात को 2 बजे नींद से उठाकर पूछा...
पत्नी - बताना जरा, 2003 वर्ल्ड कप में सचिन ने पाकिस्तान के खिलाफ कितना स्कोर किया था?
पति - 98...पर पूछ क्यों रही हो?
पत्नी - अब बताओ, सुबह से बर्थडे विश क्यों नहीं किया मुझे?
सन्नाटा...छा गया

गोलू - परीक्षा खत्म होते ही जिम जॉइन कर लूंगा
टोलू - क्यों?
गोलू- रिजल्ट आने तक मार झेलने लायक तो बॉडी बन ही जाएगी।

सेल्समैन- सर कॉकरोच के लिए पाउडर लेंगे क्या...?
पप्पू- नहीं हम कॉकरोच को इतना लाड़-प्यार नहीं करते..!
आज पाउडर लगा देंगे तो कल हो सकता है परफ्यूम मांगेगा...!!!
सेल्समैन बेहोश...

सदा ख़ुश रहो,
कुछ लोगों की शादी
इसी आशीर्वाद के कारण
नहीं हो पाती है !!

शादी के भोज में एक अनजान व्यक्ति को खाते देखकर घरवाले ने पूछा- माफ कीजिएगा, आपको निमंत्रण दिया गया था क्या?
अनजान व्यक्ति (गरम होते हए) बोला । नहीं दिया तो ये मेरी गलती है क्या..!!

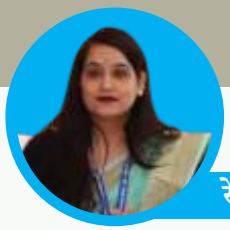

परमवीर चक्र

रेणु सरोज, सहायक प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर

परमवीर चक्र भारत का सर्वोच्च सैन्य अलंकरण है, जिसे युद्धकाल के दौरान विशिष्ट वीरता के प्रदर्शित करने के लिए दिया जाता है। परमवीर चक्र का अनुवाद "सर्वोच्च वीरता का पहिया" के रूप में किया जाता है, और यह पुरस्कार "दुश्मन की उपस्थिति में सबसे विशिष्ट वीरता" के लिए दिया जाता है। परमवीर चक्र की डिज़ाइनर प्रथम परमवीर चक्र के विजेता मेजर सोमनाथ शर्मा के भाई की पत्नी सावित्री बाई खानोलकर थीं। परमवीर चक्र भारत रत्न के बाद देश का दूसरा सबसे प्रतिष्ठित सम्मान है।

जनवरी 2018 तक, यह पदक 21 बार प्रदान किया गया है, जिनमें से 14 मरणोपरांत प्रदान किए गए थे। 21 पुरस्कार विजेताओं में से 20 भारतीय सेना से हैं, और एक भारतीय वायु सेना से है। मेजर सोमनाथ शर्मा, पहले प्राप्तकर्ता थे। उन्होंने हमारे देश को सुरक्षित रखने के लिए सर्वस्व न्योछावर कर दिया। सर्वोच्च और निस्वार्थ बहादुरी के लिए उन्होंने देश का सर्वोच्च युद्धकालीन वीरता पुरस्कार प्रदान किया गया।

परमवीर चक्र की डिजाइन की विशेषताएं:

- यह एक गोलाकार कांस्य पदक है, जिसका व्यास 35 मिलीमीटर (1 3/8 इंच) है।
- पदक के आगे की ओर भारत का राष्ट्रीय प्रतीक केंद्र में एक उभरे हुए घेरे पर दिखाई देता है, जो [वज्र], इंद्र के अस्त्र की चार प्रतियों से घिरा हुआ है।
- पदक के पीछे की ओर हिंदी और अंग्रेजी में 'परमवीर चक्र' उत्कीर्ण रहता है।
- कमल के दो फूल भी हिंदी और अंग्रेजी के शब्दों के बीच में हैं।
- पदक फीते के साथ एक छोटे से कुंडे से लटका होता है।
- फीता सादा और जामुनी रंग का होता है।

परमवीर चक्र विजताओं की सूची

क्रम संख्या	नाम	रैंक	यूनिट	युद्ध
1.	सोमनाथ शर्मा	मेजर	कुमाऊं रेजीमेंट	बैटल ऑफ बड़गाम
2.	जदुनाथ सिंह	नायक	राजपूत रेजीमेंट	इंडो-पाकिस्तानी वॉर 1947
3.	रमा राघोबा राणे	सेकंड लेफ्टिनेंट	बॉम्बे सैपर्स	इंडो-पाकिस्तानी वॉर 1947
4.	पीरु सिंह	कंपनी हवलदार मेजर	राजपूताना राइफल्स	इंडो-पाकिस्तानी वॉर 1947
5.	करम सिंह	लांस नायक	सिख रेजीमेंट	इंडो-पाकिस्तानी वॉर 1947
6.	गुरबचन सिंह सलारिया	कैप्टन	गोरखा राइफल्स	कांगो क्राइसिस
7.	धन सिंह थापा	मेजर	8 गोरखा राइफल्स	सिनो इंडियन वार
8.	जोगिंदर सिंह	सूबेदार	सिख रेजीमेंट	सिनो इंडियन वार
9.	शैतान सिंह	मेजर	कुमाऊं रेजीमेंट	सिनो इंडियन वार
10.	अब्दुल हमीद	कंपनी क्वार्टर मास्टर हवलदार	दी ग्रेनेडियर्स	बैटल ऑफ़ असल उत्तर
11.	अर्देशिर तारापोर	लेफ्टिनेंट कर्नल	पूना हॉर्स	बैटल ऑफ़ चाविंडा
12.	अल्बर्ट एक्का	लांस नायक	ब्रिगेड ऑफ द गार्डस	बैटल ऑफ हिल
13.	निर्मलजीत सिंह सेखों	फ्लाइंग ऑफिसर	अट्ठारह सक्वाड्रन आइएएफ़	इंडो-पाकिस्तानी वॉर 1971
14.	अरुण खेत्रपाल	सेकंड लेफ्टिनेंट	पुणे हॉर्स	बैटल ऑफ़ बसंतर
15.	होशियार सिंह दहिया	मेजर	दी ग्रेनेडियर्स	बैटल ऑफ़ बसंतर

16.	बाना सिंह	नायब सूबेदार	जम्मू एंड कश्मीर लाइट इन्फेंट्री	ऑपरेशन राजीव
17.	रामास्वामी परमेश्वरण	मेजर	मैहर रेजिमेंट	ऑपरेशन पवन
18.	मनोज कुमार पांडे	लेफ्टिनेंट	11 गोरखा राइफल्स	ऑपरेशन विजय
19.	योगेंद्र सिंह यादव	ग्रेनेडियर	दा ग्रेनेडियर्स	बैटल ऑफ टाइगर हिल
20.	संजय कुमार	सूबेदार मेजर	जम्मू एंड कश्मीर राइफल्स	कारगिल युद्ध
21.	विक्रम बत्रा	कैप्टन	जम्मू एंड कश्मीर राइफल्स	ऑपरेशन विजय

1.मेजर सोमनाथ शर्मा (31 जनवरी, 1923 - 3 नवम्बर 1947)

मेजर सोमनाथ शर्मा भारतीय सेना की कुमाऊँ रेजिमेंट की चौथी बटालियन की डेल्टा कंपनी के कंपनी-कमाण्डर थे जिन्होंने अक्टूबर-नवम्बर, 1947 के भारत-पाक संघर्ष में हिस्सा लिया था। उन्हें भारत सरकार ने मरणोपरान्त परमवीर चक्र से सम्मानित किया। परमवीर चक्र पाने वाले वे प्रथम व्यक्ति थे।

1942 में सोमनाथ शर्मा जी की नियुक्ति उन्नीसवीं हैदराबाद रेजिमेन्ट की आठवीं बटालियन में हुई। उन्होंने बर्मा में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान अराकन अभियान में अपनी सेवाएँ दी जिसके कारण उन्हें मेन्शंड इन डिस्पैचीज़ में स्थान मिला। बाद में उन्होंने 1947 के भारत-पाक युद्ध में भी सेवाएँ दीं।

2. नायक जदुनाथ सिंह (21 नवंबर 1916 - 6 फरवरी 1948)

श्री सिंह को 1941 में ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल किया गया था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान इन्होंने बर्मा में जापान के खिलाफ लड़ाई में भाग लिया था। उन्होंने बाद में भारतीय सेना के सदस्य के रूप में 1947 में भारत-पाकिस्तान युद्ध में भाग लिया। 6 फरवरी 1948 को नौशेरा, जम्मू और कश्मीर के उत्तर में युद्ध में योगदान के चलते नायक सिंह को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

3. मेजर रामा राघोबा राणे (26 जून 1918 - 11 जुलाई 1994)

मेजररामा राघोबा राणे एक भारतीय सैन्य अधिकारी थे। वे भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र के पहले जीवित प्राप्तकर्ता थे, जो उन्हें करम सिंह के साथ प्रदान किया गया था।

1918 में जन्मे राणे ने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश भारतीय सेना में सेवा की। युद्ध के बाद की अवधि में वे सेना में रहे और 15 दिसंबर 1947 को भारतीय सेना की कोर ऑफ़ इंजीनियर्स की बॉम्बे सैपर्स रेजिमेंट में कमीशन प्राप्त किया। अप्रैल 1948 में,1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान, राणे ने कई सड़क अवरोधों और बारूदी सुरंगों को नष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए भारतीय सेना द्वारा राजौरी पर कब्जा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके कार्यों ने भारतीय टैंकों को आगे बढ़ने का रास्ता साफ करने में मदद की। उनकी वीरता के लिए उन्हें 8 अप्रैल 1948 को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। वे 1968 में भारतीय सेना से मेजर के पद से सेवानिवृत्त हुए। सेना में अपने 28 साल की सेवा के दौरान, उनका उल्लेख पांच बार डिस्पैच में किया गया। 1994 में 76 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

4. कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह (20 मई 1918 – 18 जुलाई 1948)

15 सितंबर 1941 को, वे सिख रेजिमेंट की पहली बटालियन में भर्ती हुए। द्वितीय विश्व युद्ध के बर्मा अभियान के दौरान एडमिन बॉक्स की लड़ाई में उनके आचरण और साहस के लिए , उन्हें सैन्य पदक से सम्मानित किया गया। एक युवा, युद्ध-सम्मानित सिपाही के रूप में, उन्होंने अपनी बटालियन में साथी सैनिकों से सम्मान अर्जित किया। वह 1947 में स्वतंत्रता के बाद पहली बार भारतीय ध्वज फहराने के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा चुने गए पाँच सैनिकों में से एक थे। उत्कृष्ट वीरता तथा अदम्य शौर्य का प्रदर्शन करने और सर्वोच्च बलिदान देने के फलस्वरूप कंपनी हवलदार मेजर पीरू सिंह को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

5. कैप्टनकरम सिंह (15 सितंबर 1915 - 20 जनवरी 1993)

करम सिंह 1941 में सेना में शामिल हुए और द्वितीय विश्व युद्ध के बर्मा अभियान में भाग लिया ।1944 में एडमिन बॉक्स की लड़ाई के दौरान अपने कार्यों के लिए सैन्य पदक प्राप्त किया। उन्होंने1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में भी लड़ाई लड़ी, और टिथवाल के दक्षिण में रिछमार गली में एक अग्रिम चौकी को बचाने में उनकी भूमिका के लिए उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। वह 1947 में आजादी के बाद पहली बार भारतीय ध्वज फहराने के लिए चुने गए पांच सैनिकों में से एक थे।सिंह बाद में सूबेदार के पद तक पहुंचे।

6. कैप्टन गुरबचन सिंह सलारिया (29 नवंबर 1935 - 5 दिसंबर 1961)

एक भारतीय सैन्य अधिकारी और संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान के सदस्य थे। वह परमवीर चक्र प्राप्त करने वाले एकमात्र संयुक्त राष्ट्र शांतिरक्षक हैं। वह किंग जॉर्ज के रॉयल मिलिट्री कॉलेज और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के पूर्व छात्र थे। उन्हें यह सम्मान सन 1962 में मरणोपरांत मिला।

दिसंबर 1961 में कांगो में संयुक्त राष्ट्र के ऑपरेशन के तहत कांगो गणराज्य में तैनात भारतीय सैनिकों में सलारिया भी शामिल थे। 5

दिसंबर को सलारिया की बटालियन को दो बख्तरबंद कारों पर सवार पृथकतावादी राज्य कातांगा के 150 सशस्त्र पृथकतावादियों द्वारा एलिज़ाबेविले हवाई अड्डे के मार्ग के अवरुद्धीकरण को हटाने का कार्य सौंपा गया। उनकी रॉकेट लांचर टीम ने कातांगा की बख्तरबंद कारों पर हमला किया और उन्हें नष्ट कर दिया। इस अप्रत्याशित कदम ने सशस्त्र पृथकतावादियों को भ्रमित कर दिया, और सलारिया ने महसूस किया कि इससे पहले कि वे पुनर्गठित हो जाएं, उन पर हमला करना सबसे अच्छा होगा। हालांकि उनकी सेना की स्थिति अच्छी नहीं थी फिर भी उन्होंने पृथकतावादियों पर हमला करवा दिया और 40 लोगों को कुकरियों से हमले में मार गिराया। हमले के दौरान सलारिया को गले में दो बार गोली मार दी और वह वीर गति को प्राप्त हो गए। बाकी बचे पृथकतावादी अपने घायल और मरे हुए साथियों को छोड़ कर भाग खड़े हुए और इस प्रकार मार्ग अवरुद्धीकरण को साफ़ कर दिया गया। अपने कर्तव्य और साहस के लिए और युद्ध के दौरान अपनी सुरक्षा की उपेक्षा करते हुए कर्तव्य करने के कारण सलारिया को भारत सरकार द्वारा वर्ष 1962 में मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

7. धन सिंह थापा (28 अप्रैल 1928 - 6 सितंबर 2005)

एक भारतीय सैन्य अधिकारी और भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र के प्राप्तकर्ता थे। उन्हें 1949 में 8 गोरखा राइफल्स की पहली बटालियन में कमीशन दिया गया था।

भारत-चीन युद्ध अक्टूबर 1962 में शुरू हुआ; 21 अक्टूबर को, चीनी सेना सिरिजाप और युला पर कब्ज़ा करने के उद्देश्य से पैंगोंग झील के उत्तर में आगे बढ़ी। श्रीजाप 1 पैंगोंग झील के उत्तरी तट पर 8वीं गोरखा राइफल्स की पहली बटालियन द्वारा स्थापित एक चौकी थी और इसकी कमान मेजर धन सिंह थापा के पास थी। जल्द ही इस चौकी को सशस्त्र चीनी सेना ने घेर लिया। मेजर थापा और उनके लोगों ने चौकी पर कब्ज़ा कर लिया और अंततः तीन हमलों को विफल कर दिया। थापा सहित बचे हुए लोगों को युद्ध बंदी बना लिया गया। उनके वीरतापूर्ण कार्यों और गोलाबारी के दौरान अपने लोगों को प्रेरित करने के उनके प्रयासों के लिए उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। युद्ध समाप्त होने के बाद थापा को कैद से रिहा कर दिया गया। सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद, उन्होंने कुछ समय तक सहारा एयरलाइंस के साथ काम किया। 6 सितंबर 2005 को उनकी मृत्यु हो गई।

8. सूबेदार जोगिंदर सिंह सहनन (26 सितंबर 1921 - 23 अक्टूबर 1962)

सिंह 1936 में ब्रिटिश भारतीय सेना में शामिल हुए और सिख रेजिमेंट की पहली बटालियन में सेवा की। 1962 के चीन-भारतीय युद्ध के दौरान, वह उत्तर-पूर्व सीमांत एजेंसी में बुम ला दर्रे पर एक प्लाटून की कमान संभाल रहे थे। संख्या में भारी होने के बावजूद, उन्होंने बहादुरी से अपने सैनिकों का नेतृत्व चीनी हमले के खिलाफ किया और घायल होने और पकड़े जाने तक अपनी चौकी की रक्षा की। चीनी हिरासत में रहते हुए सिंह की चोटों के कारण मृत्यु हो गई। उन्होंने अकेले ही 50 से अधिक चीनी सैनिकों को मार गिराया, और भारतीय सशस्त्र बलों के भीतर एक युद्ध नायक बन गए। 23 अक्टूबर 1962 को उनकी वीरता के लिए, उन्हें भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

9. मेजर शैतान सिंह (जन्म 1 दिसम्बर 1924 तथा मृत्यु 18 नवम्बर 1962)

भारतीय सेना के एक अधिकारी थे। इन्हें वर्ष 1963 में मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। इनका निधन 1962 के भारत-चीन युद्ध में हुआ था, इन्होंने अपने वतन के लिए काफी संघर्ष किया लेकिन अंत में शहीद हो गये तथा भारत देश का नाम रौशन कर गये। मेजर सिंह स्नातक स्तर की पढ़ाई पूरी करने पर सिंह जोधपुर राज्य बलों में शामिल हुए। जोधपुर की रियासत का भारत में विलय हो जाने के बाद उन्हें कुमाऊं रेजिमेंट में स्थानांतरित कर दिया गया। उन्होंने नागा हिल्स ऑपरेशन तथा 1961 में गोवा के भारत में विलय में हिस्सा लिया था।1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान, कुमाऊं रेजिमेंट की 13वीं बटालियन को चुशूल सेक्टर में तैनात किया गया था। सिंह की कमान के तहत सी कंपनी रेज़ांग ला में एक पोस्ट पर थी। 18 नवंबर 1962 की सुबह चीनी सेना ने हमला कर दिया। सामने से कई असफल हमलों के बाद चीनी सेना ने पीछे से हमला किया। भारतीयों ने आखिरी दौर तक लड़ाई लड़ी परन्तु अंततः चीनी हावी हो गए। युद्ध के दौरान सिंह लगातार पोस्टों के बीच सामंजस्य तथा पुनर्गठन बना कर लगातार जवानों का हौसला बढ़ाते रहे। चूँकि वह एक पोस्ट से दूसरी पोस्ट पर बिना किसी सुरक्षा के जा रहे थे अतः वह गंभीर रूप से घायल हो गए और वीर गति को प्राप्त हो गए। उनके इस वीरता भरे देश प्रेम को सम्मान देते हुए भारत सरकार ने वर्ष 1963 में उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया।

10. अब्दुल हमीद (1 जुलाई 1933 -10 सितम्बर 1965)

भारतीय सेना की 4 ग्रेनेडियर में एक सिपाही थे जिन्होंने 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान खेमकरण सैक्टर के आसल उत्ताड़ में लड़े गए युद्ध में अद्भुत वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की। इस युद्ध में असाधारण बहादुरी के लिए उन्हें पहले महावीर चक्र और फिर सेना के सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र से अलंकृत किया गया। सारा देश उनकी बहादुरी को प्रणाम करता है

शहीद होने से पहले परमवीर अब्दुल हमीद ने मात्र अपनी "गन माउन्टेड जीप" से उस समय अजेय समझे जाने वाले पाकिस्तान के "पैटन टैंकों" को नष्ट किया था।

11. लेफ्टिनेंट कर्नल अर्देशिर बुर्जोरजी तारापोर (18 अगस्त 1923 – 16 सितंबर 1965)

भारतीय सेना के अधिकारी थे। अर्देशिर तारापोर ने अपना सैन्य जीवन हैदराबाद सेना की 7वीं इन्फैन्ट्री से शुरू किया था। हैदराबाद के भारत में विलय के बाद उन्हें भारतीय सेना की पूना हॉर्स में स्थानान्तरित कर

दिया गया। इन्होंने भारत-पाकिस्तान युद्ध 1965 में अद्वितीय साहस व वीरता का परिचय दिया तथा देश के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। फिल्लौर की लड़ाई में अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करने के लिए इन्हें वर्ष 1965 में मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। इतिहास में यह युद्ध ऐसे युद्ध में दर्ज है जहाँ सबसे ज्यादा टैंक नष्ट हुए थे।

12. अलबर्ट एक्का (27 दिसम्बर 1942 - 3 दिसम्बर 1971)

उन्होंने सेना में बिहार रेजिमेंट से अपना कार्य शुरू किया। बाद में जब 14 गार्ड्स का गठन हुआ, तब एल्बर्ट को उनके कुछ साथियों के साथ वहाँ स्थानांतरित कर किए गए। एल्बर्ट एक अच्छे योद्धा तो ही, हॉकी के भी अच्छे खिलाड़ी थे। भारत-पाकिस्तान युद्ध 1971 में अलबर्ट एक्का ने वीरता, शौर्य और सैनिक हुनर का प्रदर्शन करते हुए अपनी इकाई के सैनिकों की रक्षा की थी। इस अभियान के समय वे काफी घायल हो गये और 3 दिसम्बर 1971 में इस दुनिया से विदा हो गए। भारत सरकार ने इनके बलिदान को देखते हुए मरणोपरांत सैनिकों को दिये जाने वाले उच्चतम सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया था।

13. निर्मल जीत सिंह सेखों (17 जुलाई 1943 - 14 दिसंबर 1971)

भारतीय वायु सेना के एक अधिकारी थे। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान पाकिस्तानी वायु सेना (पीएएफ) के हवाई हमले के खिलाफ श्रीनगर एयर बेस की अकेले रक्षा करने के लिए उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था । वे भारतीय वायु सेना के एकमात्र सदस्य हैं जिन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया है।

14. अरुण खेत्रपाल (14 अक्टूबर 1950 - 16 दिसंबर 1971)

एक भारतीय सेनाअधिकारी और टैंक कमांडर थे, जिन्हें भारतीय टैंक के इक्के के रूप में पहचाना जाता है, और 10 टैंक मार गिराने का श्रेय दिया जाता है। भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान,परमवीर चक्र के मरणोपरांत प्राप्तकर्ता , जो उन्हें दुश्मन के सामने उनकी वीरता के लिए दिया गया था। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान , 17 पूना हॉर्स को भारतीय सेना की 47वीं इन्फैंट्री ब्रिगेड की कमान सौंपी गई थी। संघर्ष की अवधि के दौरान, 47वीं ब्रिगेड ने बसंतर की लड़ाई मेंशकरगढ़ सेक्टर में कार्रवाई का सामना किया । 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान बसंतर की लड़ाई में वे शहीद हो गए।

15. कर्नल होशियार सिंह दहिया (5 मई 1936 - 6 दिसंबर 1998)

30 जून 1963 को भारतीय सेना की ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट में कमीशन दिया गया था और 30 जून 1965 को लेफ्टिनेंट के पद पर पदोन्नत किया गया था।

उनकी पहली पोस्टिंग नेफा में थी ।1965 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में, उन्होंने राजस्थान सेक्टर में उनकी कार्रवाई के चलते, उनका उल्लेख डिस्पैच में किया गया था। उन्हें 30 जून 1969 को कैप्टन के पद पर पदोन्नत किया गया था। होशियार सिंह ने सेना की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप अत्यंत विशिष्ट वीरता, अदम्य युद्ध भावना और नेतृत्व का परिचय दिया। 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान अपनी वीरता के लिए भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान, परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया ।

16. कैप्टन बाना सिंह (6 जनवरी 1949)

इनको यह सम्मान वर्ष 1987 में मिला था जब इन्होंने सियाचिन ग्लेशियर को पाकिस्तान के कब्जे से मुक्त कराने के अभियान में अप्रतिम शौर्य का प्रदर्शन किया था। अलंकरण के समय ये नायब सूबेदार के पद पर थे जो बाद में क्रमशः सूबेदार, सूबेदार मेजर व कैप्टन बने। भारत की गणतंत्र दिवस परेड के नेतृत्व व भारत के राष्ट्रपति को सर्वप्रथम सलामी देने का अधिकार इनके पास ही सुरक्षित है।

पाकिस्तानी सेना के साथ भारतीय सेना की चार मुलाकातें युद्धभूमि में तो हुई हीं, कुछ और भी मोर्चे हैं, जहाँ हिन्दुस्तान के बहादुरों ने पाकिस्तान के मंसूबों पर पानी फेर कर रख दिया। सियाचिन का मोर्चा भी इसी तरह का एक मोर्चा है, जिसमें जम्मू कश्मीर लाइट इन्फेंट्री के आठवें दस्ते के नायब सूबेदार बाना सिंह को उनकी चतुराई, पराक्रम और साहस के लिए भारत सरकार द्वारा परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया ।

17. मेजर रामास्वामी परमेश्वरन (13 सितंबर1946 - 25 नवंबर 1987)

भारतीय सेना के एक अधिकारी थे जिन्होंने श्रीलंका सिविल वॉर के दौरान अपनी बहादुरी के लिए मरणोपरांत भारत का सर्वोच्च सैन्य अलंकरण परमवीर चक्र प्राप्त किया। मेजर परमेश्वरन को 16 जनवरी 1972 को लघु सेवा आयोग द्वारा सेना की 15 बटालियन महार रेजिमेंट में सम्मिलित किया गया था। सेना में अधिकारी के रूप में वह महार रेजिमेंट में 16 जनवरी, 1972 को आए थे। उन्होंने मिजोरम तथा त्रिपुरा में युद्ध में भाग लिया था। वह अपने स्वभाव में अनुशासन तथा सहनशीलता के कारण बहुत लोकप्रिय अधिकारी थे और उन्हें उनके साथी 'पेरी साहब' कहा करते थे।

भारत की सेनाओं ने हमेशा युद्ध के लिए हथियार नहीं उठाए बल्कि ऐसा भी मौका आया, जब उसकी भूमिका विश्व स्तर पर शांति बनाए रखने की रही। श्रीलंका में ऐसे ही उदाहरण के साथ भारत का नाम जुड़ा हुआ है। विस्तृत इतिहास के बीच एक प्रासंगिक ऑपरेशन पवन भी है, जो 1987 से 1990 तक श्रीलंका में चला, जिसमें भारतीय सेना के वीर मेजर रामास्वामी परमेश्वरन ने शांति विरोधी तत्वों के हाथों अपने प्राण गँवाए और इसके लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

18. कैप्टन मनोज कुमार पांडेय (25 जून 1975 - 3 जुलाई 1999)

इंटरमीडियेट की पढ़ाई पूरी करने के बाद मनोज ने प्रतियोगिता में

सफल होने के पश्चात पुणे के पास खड़कवासला स्थित राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में दाखिला लिया।

"जिस समय राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के च्वाइस वाले कालम जहाँ यह लिखना होता हैं कि वह जीवन में क्या बनना चाहते हैं क्या पाना चाहते हैं वहां सब लिख रहे थे कि, किसी को चीफ ऑफ़ आर्मी स्टाफ बनना चाहता है तो कोई लिख रहा था कि उसे विदेशों में पोस्टिंग चाहिए आदि आदि, उस फार्म में देश के बहादुर बेटे ने लिखा था कि उसे केवल और केवल परमवीर चक्र चाहिए"

प्रशिक्षण पूरा करने के पश्चात वे 11 गोरखा रायफल्स रेजिमेंट की पहली वाहनी के अधिकारी बने।

पाकिस्तान के साथ कारगिल युद्ध के कठिन मोर्चों में एक मोर्चा खालूबार का था जिसको फ़तह करने के लिए कमर कस कर उन्होने अपनी 1/11 गोरखा राइफल्स की अगुवाई करते हुए दुश्मन से जूझ गए और जीत कर ही माने। हालांकि, इन कोशिशों में उन्हें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़ी। वे 24 वर्ष की उम्र जी देश को अपनी वीरता और हिम्मत का उदाहरण दे गए। सन 1999 के कारगिल युद्ध में असाधारण वीरता के लिए मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च वीरता पदक परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

19. कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव (10 मई 1980)

उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले औरंगाबाद अहीर गांव में एक फौजी परिवार में हुआ था। उनके पिता राम करण सिंह यादव ने 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों में भाग लेकर कुमाऊं रेजिमेंट में सेवा की थी। पिता से 1962युद्ध और 1965 और 1971 के भारत पाकिस्तान युद्ध की कहानियां सुनकर बड़े हुए दोनों भाई भारतीय सेना में भर्ती हुए,इनके बड़े भाई जितेंद्र सिंह यादव भी सेना की आर्टिलरी शाखा में हैं, यादव 16 साल और 5 महीने की उम्र में ही भारतीय सेना में शामिल हो गए थे।

जान की बाजी लगाकर दुश्मन की 17गोलियां झेलकर भी अदम्य साहस के परिचय देते हुए कारगिल युद्ध में सामरिक टाइगर हिल चोटी फतह करने में अनुकरणीय भूमिका के कारण भारत के राष्ट्रपति द्वारा परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया । कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव परमवीर चक्र पाने वाले देश के सबसे युवा सैनिक हैं। कैप्टन योगेंद्र सिंह यादव को टाइगर हिल का टाइगर कहा जाता है। वह कौन बनेगा करोड़पति शो में अमिताभ बच्चन के विशेष आमंत्रण पर अपने साथी परमवीर चक्र विजेता सूबेदार संजय कुमार के साथ शामिल हुए और जीती गई पूरी धनराशि आर्मी वेलफेयर फण्ड में दान कर दी । देश सेवा के लिए वर्ष 2014 में इनको उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदेश के सर्वोच्च पुरस्कार यश भारती से सम्मानित किया गया।

20. सूबेदार मेजर संजय कुमार (3 मार्च 1976)

का जन्म राजपूत परिवार में हुआ था। उन्होंने अपनी माध्यमिक शिक्षा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, कलोल से पूरी की। सेना में भर्ती होने से पहले, उन्होंने नई दिल्ली में टैक्सी ड्राइवर के रूप में काम किया । उनके चाचा भारतीय सेना में थे जबकि उनके दूसरे भाई भी भारत तिब्बत सीमा पुलिस में सेवारत हैं । सेना में भर्ती होने से पहले उनका आवेदन तीन बार खारिज किया गया था। 26 जून 1996 को उन्हें भारतीय सेना की 13 जम्मू और कश्मीर राइफल्स में भर्ती किया गया ।

4 जुलाई 1999 को, 13वीं बटालियन, जम्मू और कश्मीर राइफल्स के सदस्य के रूप में, वह कारगिल युद्ध के दौरान एरिया फ्लैट टॉप पर कब्ज़ा करने वाली टीम के प्रमुख स्काउट थे । राइफल मैन संजय कुमार ने दुश्मन के सामने असाधारण वीरता, शांत साहस और असाधारण उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया जिसके लिए उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया ।

21. कैप्टन विक्रम बत्रा (09 सितम्बर 1974 - 07 जुलाई 1999)

विज्ञान विषय में स्नातक करने के बाद विक्रम का चयन सीडीएस के जरिए सेना में हो गया। जुलाई 1996 में उन्होंने भारतीय सैन्य अकादमी देहरादून में प्रवेश लिया। दिसंबर 1997 में प्रशिक्षण समाप्त होने पर उन्हें 6 दिसम्बर 1997 को जम्मू के सोपोर नामक स्थान पर सेना की 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स में लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्ति मिली। उन्होंने 1999 में कमांडो ट्रेनिंग के साथ कई प्रशिक्षण भी लिए। पहली जून 1999 को उनकी टुकड़ी को कारगिल युद्ध में भेजा गया। हम्प व राकी नाब स्थानों को जीतने के बाद विक्रम को कैप्टन बना दिया गया।

इसके बाद श्रीनगर-लेह मार्ग के ठीक ऊपर सबसे महत्त्वपूर्ण 5140 चोटी को पाक सेना से मुक्त करवाने की ज़िम्मेदारी कैप्टन बत्रा की टुकड़ी को मिली। कैप्टन बत्रा अपनी कंपनी के साथ घूमकर पूर्व दिशा की ओर से इस क्षेत्र की तरफ बढ़े और बिना शत्रु को भनक लगे हुए उसकी मारक दूरी के भीतर तक पहुंच गए। कैप्टेन बत्रा ने अपने दस्ते को पुर्नगठित किया और उन्हें दुश्मन के ठिकानों पर सीधे आक्रमण के लिए प्रेरित किया। सबसे आगे रहकर दस्ते का नेतृत्व करते हुए उन्होनें बड़ी निडरता से शत्रु पर धावा बोल दिया और आमने-सामने के गुतथ्मगुत्था लड़ाई मे उनमें से चार को मार डाला। बेहद दुर्गम क्षेत्र होने के बावजूद विक्रम बत्रा ने अपने साथियों के साथ 20 जून 1999 को सुबह तीन बजकर 30 मिनट पर इस चोटी को अपने कब्ज़े में ले लिया।कैप्टन विक्रम बत्रा ने जब इस चोटी से रेडियो के जरिए अपना विजय उद्घोष 'यह दिल मांगे मोर' कहा तो सेना ही नहीं बल्कि पूरे भारत में उनका नाम छा गया। इसी दौरान विक्रम के कोड नाम शेरशाह के साथ ही उन्हें 'कारगिल का शेर' की भी संज्ञा दे दी गई। अगले दिन चोटी 5140 में भारतीय झंडे के साथ विक्रम बत्रा और उनकी टीम का फोटो मीडिया में आ गयी। कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टीनेंट कर्नल वाई.के. जोशी ने विक्रम को शेर शाह उपनाम से नवाजा था।

कैप्टन विक्रम बत्रा कहते थे - या तो बर्फीली चोटी पर तिरंगा लहराकर आऊंगा नहीं तो उसी तिरंगे में लिपटकर आऊंगा पर आऊंगा जरुर ।

नराकास से प्राप्त पुरस्कार

प्रथम पुरस्कार- गाजियाबाद शाखा (एनसीआर दिल्ली क्षेत्र)

प्रथम पुरस्कार- ग्वालियर शाखा (भोपाल क्षेत्र)

द्वितीय पुरस्कार- क्षेत्रीय कार्यालय हैदराबाद

द्वितीय पुरस्कार- क्षेत्रीय कार्यालय मेरठ

द्वितीय पुरस्कार- क्षेत्रीय कार्यालय सिलीगुड़ी

द्वितीय पुरस्कार- बेलगांव शाखा (गोवा क्षेत्र)

द्वितीय पुरस्कार- गांधीनगर शाखा (अहमदाबाद क्षेत्र)

तृतीय पुरस्कार- भरतपुर शाखा (जयपुर क्षेत्र)

तृतीय पुरस्कार- मॉलरोल शाखा (लखनऊ क्षेत्र)

प्रोत्साहन पुरस्कार- गोरखपुर शाखा (वाराणसी क्षेत्र)

"राजभाषा विभाग स्वर्ण जयंती समारोह" के उपलक्ष्य में बैंक द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी की झलकियां

विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित आइओबी प्रवीण परीक्षा की झलकियाँ

केंद्रीय कार्यालय

अहमदाबाद

ब्रह्मपुर

भुवनेश्वर

कोयंबत्तूर

एर्णाकुलम

ईरोड

गुवाहाटी

हैदराबाद

कांचीपुरम

मदुरै

नागरकोइल

सिलीगुड़ी

तंजाऊर

तिरुनेलवेली

वेल्लूर

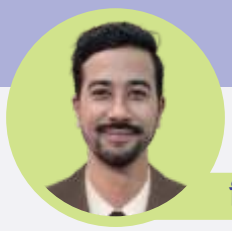

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर: राष्ट्र निर्माण के सच्चे सारथी

हितेश्वर राजवंशी,वरिष्ठ प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी

जीवन चुनौतियों और सफलताओं का एक अनवरत सफर है और इस यात्रा में एक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर का जीवन एक अनूठी गाथा प्रस्तुत करता है। वे उत्साह, कर्तव्यनिष्ठा और मानवीय संबंधों के ताने-बाने के बीच अपने कार्य को निभाते हैं, जिससे उनका जीवन अद्वितीय रूप से सजग होता है।

एक बैंकर का प्रेरणादायी दिन

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर का दिन उत्साह से भरपूर होता है। वे हर दिन आने वाली विभिन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए एक मुस्कान के साथ अपने घर से निकलते हैं। उनका पहला कर्तव्य ग्राहकों से मिलना और उनकी समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनना होता है। यहाँ उन्हें एक संवेदनशील और सुगम मनोभाव बनाए रखना होता है ताकि ग्राहकों का अपने बैंक के साथ रिश्ता सौहार्दपूर्ण बना रहे।

इसके बाद, वे लोगों के वित्तीय संबंधों को समझने और उन्हें सही वित्तीय समाधान प्रदान करने में लग जाते हैं। बैंकरों को हमेशा नई और बेहतर सेवाएँ प्रदान करने का प्रयास करना होता है ताकि ग्राहकों को विशेष रूप से लाभ हो सके। यह सफलता और चुनौतियों का सफर बैंकर को कभी-कभी कठिनाइयों में भी ला देता है, जैसे कि बैंक के नियमों और विधियों का पालन करना, नए तकनीकी परिवर्तनों को अपनाना और ग्राहकों की समस्याओं का तत्परता से समाधान करना।

बैंकर की जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना भी होती है कि उनके द्वारा लिए गए निर्णय न्यायसंगत और सुरक्षित हों, ताकि ग्राहकों को पूरा विश्वास रहे कि उनके धन को सुरक्षित रखा जा रहा है।

संबंध, सहयोग और सामाजिक योगदान

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकरों का जीवन यदि एक ओर से चुनौतीपूर्ण है, तो दूसरी ओर यह संबंधों, दोस्ती और साझेदारी की भावना से भरा है। वे एक संगठन के हिस्से के रूप में नहीं, बल्कि विशाल सामूहिक परिवार के सदस्य के रूप में महसूस करते हैं, जिसमें सहयोग और समर्थन की भावना होती है।

इस जीवन में, बैंकर न केवल अपने बैंक के लिए काम करते हैं, बल्कि समाज के विकास के लिए भी सक्रिय रूप से योगदान देते हैं। उनका योगदान केवल बैंक को लाभ कमाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के विकास में अत्यधिक योगदान में भी सहायक होता है । इस प्रकार, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर की जीवन यात्रा उत्कृष्टता की परिचायक है, जो सफलता के साथ-साथ जिम्मेदारी की भावना, सहयोग और नई चुनौतियों का सामना करके आगे बढ़ रही है। यह एक अनूठा और सीखने योग्य अनुभव है।

राष्ट्र निर्माण के समर्पित स्तंभ

राष्ट्र निर्माण में समर्पित हमारे समृद्धि और विकास के मार्ग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर सम्मान और प्रशंसा के पात्र हैं। इन उद्यमी बैंकरों का संघर्ष और समर्पण, राष्ट्र को अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करने में अद्वितीय मदद करता है।

इन बैंकरों की सेवाएँ सिर्फ बैंकिंग कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनका संघर्ष और सफलता का सफर हमारी आर्थिक सुरक्षा को मजबूती और स्थायित्व प्रदान करने का संकल्प दिखाता है। इन बैंकरों की सावधानी, विवेक और कठिनाइयों का सामना करने की आत्मशक्ति उन्हें नागरिकों के विश्वास का भरपूर हकदार बनाती है।

उनका उद्दीपन और आत्मनिर्भरता से भरा यह संघर्ष राष्ट्र को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ये बैंकर न केवल वित्तीय सेवाओं के प्रदाता हैं, बल्कि उनका संघर्ष और निरंतर सेवाभाव भी उन्हें समृद्धि की ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक होता है। वे विभिन्न समृद्धि योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को वित्तीय समावेशन के लाभ से जोड़ते हैं, जिससे सामाजिक और आर्थिक समृद्धि का संवर्धन होता है।

इस प्रकार, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकरों का यह संघर्ष और समर्पण न केवल उनकी व्यक्तिगत सफलता की कहानी है, बल्कि एक वफादारी और समर्पण भरे राष्ट्र निर्माण की कहानी भी है।

चुनौतियों से पार: हर दिन एक नई सीख

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकरों को हर दिन नई चुनौतियों का सामना करना होता है। ये चुनौतियां ग्राहकों की बदलती उम्मीदों से लेकर नई तकनीकों को अपनाने तक फैली होती हैं। डिजिटलीकरण के इस युग में, बैंकरों को नए बैंकिंग ऐप्स, ऑनलाइन लेनदेन और साइबर सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में खुद को लगातार अपडेट रखना होता है। उन्हें यह सुनिश्चित करना होता है कि वे नवीनतम तकनीकों का उपयोग करके ग्राहकों को सुरक्षित और कुशल सेवाएं प्रदान कर सकें। इसके अलावा, सरकारी नीतियों और नियामक परिवर्तनों का पालन करना भी उनके लिए एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। उन्हें न

केवल इन नियमों को समझना होता है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना होता है कि बैंक के सभी संचालन इनका पूरी तरह से पालन करें।

कई बार उन्हें वित्तीय संकट या आर्थिक मंदी जैसी अप्रत्याशित परिस्थितियों का भी सामना करना होता है। ऐसे समय में, बैंकरों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि उन्हें ग्राहकों के विश्वास को बनाए रखना होता है और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए त्वरित और प्रभावी निर्णय लेने होते हैं। यह सब करते हुए, उन्हें कर्मचारियों के बीच समन्वय और टीम भावना को भी बढ़ावा देना होता है ताकि बैंक के लक्ष्य सफलतापूर्वक प्राप्त किए जा सकें। यह एक ऐसा पेशा है जहाँ लगातार सीखना और अनुकूलन अनिवार्य है।

नवाचार और समावेश: आर्थिक विकास के प्रेरक

आधुनिक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर केवल ऋण देने या जमा स्वीकार करने तक सीमित नहीं हैं। वे आर्थिक समावेश के महत्वपूर्ण एजेंट बन गए हैं। वे प्रधानमंत्री जन-धन योजना, मुद्रा योजना और अटल पेंशन योजना जैसी विभिन्न सरकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन योजनाओं के माध्यम से, वे उन लोगों तक पहुंच बनाते हैं जो पहले औपचारिक बैंकिंग प्रणाली से बाहर थे। बैंकर उन्हें वित्तीय साक्षरता प्रदान करते हैं और उन्हें बचत, ऋण और बीमा जैसी सेवाओं से जोड़ते हैं।

इस प्रक्रिया में, बैंकर ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे शहरों में उद्यमिता को बढ़ावा देते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूती मिलती है। वे छोटे व्यवसायों और स्टार्ट-अप को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं, जिससे रोजगार सृजन होता है और समग्र आर्थिक विकास को गति मिलती है। उनका ध्यान केवल लाभ कमाने पर नहीं, बल्कि समाज के वंचित वर्गों का उत्थान करने पर भी होता है। वे विभिन्न कार्यशालाओं और जागरूकता अभियानों के माध्यम से लोगों को वित्तीय नियोजन के महत्व के बारे में शिक्षित करते हैं। यह उन्हें वित्तीय रूप से आत्मनिर्भर बनाने में मदद करता है।

भविष्य की ओर: एक स्थायी प्रभाव

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर राष्ट्र के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे न केवल वर्तमान चुनौतियों का सामना करते हैं, बल्कि भविष्य की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखते हुए रणनीतियाँ बनाते हैं। पर्यावरण, सामाजिक और शासन सिद्धांतों को बैंकिंग कार्यों में एकीकृत करना उनकी बढ़ती प्राथमिकता है। वे हरित वित्तपोषण और सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेशों को बढ़ावा दे रहे हैं, जिससे एक स्थायी और समावेशी अर्थव्यवस्था का निर्माण हो सके।

यह पेशा उन लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो राष्ट्र की सेवा करना चाहते हैं। बैंकरों का जीवन एक निरंतर सीखने की प्रक्रिया है, जहाँ वे न केवल वित्तीय ज्ञान प्राप्त करते हैं, बल्कि मानवीय संबंधों, नैतिक निर्णय लेने और सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व को भी समझते हैं। उनका समर्पण, ईमानदारी और कड़ी मेहनत उन्हें न केवल अपने ग्राहकों के लिए, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए विश्वास और भरोसे का प्रतीक बनाती है। वे वास्तव में राष्ट्र निर्माण के अदृश्य नायक हैं, जो आर्थिक प्रगति की नींव रखते हैं और लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाते हैं। उनका योगदान बहुआयामी है और राष्ट्र की समग्र प्रगति के लिए अपरिहार्य है।

निष्कर्ष

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकरों का जीवन चुनौतियों और जिम्मेदारियों से भरा है, फिर भी वे राष्ट्र निर्माण के समर्पित स्तंभ के रूप में उभरते हैं। वे केवल वित्तीय लेन-देन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ग्राहकों की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनकर और उन्हें उचित वित्तीय समाधान प्रदान करके एक मानवीय संबंध स्थापित करते हैं। उनका कार्य बैंक के नियमों और तकनीकी परिवर्तनों का पालन करते हुए ग्राहकों के धन की सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

इन बैंकरों का जीवन सहयोग और साझेदारी की भावना से भरा है, जहाँ वे एक परिवार के सदस्य के रूप में काम करते हैं। वे केवल बैंक के लिए ही नहीं, बल्कि समाज के विकास के लिए भी सक्रिय रूप से योगदान देते हैं। चाहे वह डिजिटलीकरण की चुनौतियों का सामना करना हो, सरकारी नीतियों को लागू करना हो, या वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देना हो, बैंकर हर कदम पर महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उनका समर्पण, ईमानदारी और अथक प्रयास उन्हें न केवल ग्राहकों के लिए, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए विश्वास और भरोसे का प्रतीक बनाता है। वे वास्तव में आर्थिक प्रगति की नींव रखने वाले और लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने वाले अदृश्य नायक हैं। सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकरों का यह निरंतर संघर्ष और सेवाभाव राष्ट्र की समृद्धि और स्थायित्व के लिए अपरिहार्य है।

मैं अपनी कुछ पंक्तियों के साथ समाप्त करना चाहूँगा जो निम्नलिखित हैं:

मेहनत और इमानदारी से जो करता अपना काम है,

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकर, तुझे शत शत प्रणाम है।

देश के निर्माण में, तेरा भी योगदान है,

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, देश के सिपाही के समान है।

राजभाषा हिंदी के 50 वर्ष

विश्वजीत चंद, सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय रांची

हिंदी भाषा भारत की आत्मा है, जो देश की सांस्कृतिक धरोहर और एकता की प्रतीक है। यह विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है और भारत की राजभाषा के रूप में इसका विशेष स्थान है। भारत विविधताओं का देश है—भाषा, संस्कृति, जाति और परंपराओं के अनगिनत रंगों से भरा हुआ। परंतु इन विविधताओं को जोड़ने वाला एक सेतु सदैव से रहा है—हिंदी भाषा। हिंदी न केवल हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम रही है, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम से लेकर राष्ट्र निर्माण तक इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। हिंदी भाषा भारत की आत्मा है, जो देश की सांस्कृतिक धरोहर और एकता की प्रतीक है। हिंदी को संवैधानिक रूप से राजभाषा का दर्जा 14 सितंबर 1949 को मिला और इसके विकास, प्रचार-प्रसार और सरकारी कामकाज में समावेश हेतु भारत सरकार ने राजभाषा विभाग के रूप में एक सशक्त संस्था का गठन किया। आज जब राजभाषा विभाग अपनी स्वर्ण जयंती (50 वर्ष) मना रहा है, तब यह उचित समय है कि हम हिंदी की विकास यात्रा और विभाग की उपलब्धियों का सम्यक मूल्यांकन करें।

इस आलेख में हिंदी भाषा के ऐतिहासिक विकास, भारतीय संविधान में इसकी स्थिति, राजभाषा विभाग की स्थापना और उसके योगदान, हिंदी के प्रचार-प्रसार में इसकी भूमिका, भविष्य के दृष्टिकोण और चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की गई है।

हिंदी भाषा का ऐतिहासिक परिचय और विकास

हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक सहस्राब्दी पुराना है। इसका उद्भव अपभ्रंश की अंतिम अवस्था 'अवहट्ठ' से माना जाता है, जिसे चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' ने 'पुरानी हिंदी' का नाम दिया था। हिंदी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ। लगभग 1000 ईस्वी के आसपास हिंदी का प्रारंभिक रूप अस्तित्व में आया। यह भाषा मुख्य रूप से उत्तर भारत में बोली जाती थी, लेकिन समय के साथ इसका प्रसार पूरे भारत में हुआ। हिंदी के विकास को विभिन्न चरणों में देखा जा सकता है:

आदिकाल (10वीं से 14वीं शताब्दी): इस काल में हिंदी का प्रारंभिक रूप देखने को मिलता है। सिद्ध और नाथ कवियों ने इस काल में रचनाएं कीं, जो हिंदी के प्राचीन स्वरूप को दर्शाती हैं।

भक्तिकाल (15वीं से 17वीं शताब्दी): कबीर, सूरदास और तुलसीदास जैसे कवियों ने हिंदी को समृद्ध किया। तुलसीदास की 'रामचरितमानस' ने हिंदी को जन-जन तक पहुँचाया।

रीतिकाल (17वीं से 19वीं शताब्दी): इस काल में बिहारी, केशवदास और अन्य कवियों ने हिंदी साहित्य को श्रृंगारिक रस से परिपूर्ण किया।

आधुनिक काल (19वीं शताब्दी से वर्तमान): भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी और प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों ने हिंदी को आधुनिक रूप प्रदान किया।

1. पूर्व-स्वतंत्रता काल में हिंदी का संघर्ष

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी का स्वरूप केवल भाषा का नहीं, अपितु राष्ट्रवाद का भी था। महात्मा गांधी, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस, और अन्य नेताओं ने हिंदी को जनता से संवाद का माध्यम बनाया। हिंदी में लिखे गए क्रांतिकारी साहित्य, कविताओं और लेखों ने जनमानस को झकझोर कर स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी के लिए प्रेरित किया।

2. स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी का संवैधानिक उन्नयन

1947 के बाद भाषा नीति को लेकर गहन विमर्श हुआ। कई भाषिक समूहों की संवेदनाओं को ध्यान में रखते हुए संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा घोषित किया। इसी दिन की स्मृति में प्रतिवर्ष 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है।

3. हिंदी का विस्तार

आज हिंदी न केवल भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, बल्कि यह विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को मान्यता दिलाने के लिए भी प्रयास हो रहे हैं।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। इसका साहित्य, सिनेमा, पत्रकारिता और डिजिटल क्षेत्र में योगदान अत्यंत व्यापक है।

हिंदी ने संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों को अपनाकर अपनी शब्दावली को समृद्ध किया। साथ ही, अरबी, फारसी और बाद में अंग्रेजी शब्दों का समावेश भी हुआ, जिसने इसे और व्यापक बनाया।

आज हिंदी एक ऐसी भाषा है, जो विभिन्न संस्कृतियों और बोलियों को एक सूत्र में बाँधती है। भारतीय संविधान के भाग-17 (अनुच्छेद 343 से 351) तक केंद्र सरकार की राजभाषा तथा राज्यों की भाषाओं से संबंधित प्रावधान दिए गए हैं। संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार, हिंदी देवनागरी लिपि में भारत की राजभाषा होगी।

हालांकि संविधान निर्माताओं ने हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के संरक्षण की भी व्यवस्था की। अनुच्छेद 351 में यह निर्देश दिया गया कि केंद्र सरकार हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करेगी ताकि यह राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बन सके।

राजभाषा विभाग की स्थापना एवं भूमिका

1. स्थापना और उद्देश्य

राजभाषा विभाग की स्थापना 1975 में हुई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना और राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 के प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करना था।

2. प्रमुख कार्य

- कार्यालयों में हिंदी में पत्राचार, रिपोर्ट, फ़ाइलों और दस्तावेज़ों का निर्माण
- विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में राजभाषा निरीक्षण
- त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट का संकलन और विश्लेषण
- हिंदी कार्यशालाओं, प्रतियोगिताओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन
- तकनीकी और प्रशासनिक विषयों के शब्दकोशों का विकास

3. तकनीकी पहल और डिजिटल इंडिया

राजभाषा विभाग ने समय के साथ डिजिटल परिवर्तन को भी अपनाया है। ई-ऑफिस, ई-गवर्नेंस, पोर्टल और एप आधारित योजनाओं में हिंदी को अनिवार्य रूप से सम्मिलित किया जा रहा है। विभाग द्वारा विकसित राजभाषा शब्दावली पोर्टल, हिंदी शब्द संसाधन डेटाबेस आदि ऑनलाइन संसाधन हैं जो कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को सहज बनाते हैं।

राजभाषा विभाग के 50 वर्ष: उपलब्धियाँ और योगदान

1. प्रशासनिक क्षेत्रों में हिंदी का सशक्तीकरण

विभाग ने केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों और सार्वजनिक उपक्रमों में हिंदी कार्यान्वयन समितियों की स्थापना कर हिंदी को कार्य-भाषा के रूप में स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. क्षेत्रीय कार्यन्वयन कार्यालयों की स्थापना

देशभर में 08 क्षेत्रीय कार्यन्वयन कार्यालयों की स्थापना की गई है जिनका कार्य क्षेत्रीय आधार राजभाषा नीति का निरीक्षण और प्रचार करना है।

3. वार्षिक राजभाषा कीर्ति एवं राजभाषा गौरव पुरस्कार

राजभाषा विभाग द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभागों, उपक्रमों और अधिकारियों को प्रतिवर्ष सम्मानित किया जाता है। यह एक प्रेरणास्रोत बनता है।

4. अनुवाद और प्रकाशन कार्य

विभाग ने केंद्र सरकार की प्रमुख रिपोर्टों, अधिनियमों और दस्तावेज़ों का हिंदी में अनुवाद सुनिश्चित किया है। इसके अतिरिक्त विभाग विभिन्न पत्रिकाएँ जैसे राजभाषा भारती, हिंदी पत्रिका आदि भी प्रकाशित करता है।

5. अंतरराष्ट्रीय मंच पर हिंदी का उन्नयन

संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक मंचों पर हिंदी को मान्यता दिलाने हेतु लगातार कार्य हो रहा है। प्रवासी भारतीय सम्मेलन तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के सहयोग से विदेशों में हिंदी प्रचार का भी कार्य किया जाता है।

आधुनिक युग में हिंदी: चुनौतियाँ और संभावनाएँ

1. चुनौतियाँ

- अंग्रेज़ी का बढ़ता प्रभाव
- तकनीकी शब्दों के हिंदी रूपांतरण में कठिनाई
- कुछ क्षेत्रों में हिंदी को लागू करने में मानसिकता की बाधा
- राज्यों में भाषिक विविधता की स्वीकृति के साथ संतुलन बनाए रखना

2. संभावनाएँ

- नई शिक्षा नीति (2020) के अंतर्गत मातृभाषा एवं क्षेत्रीय भाषाओं को प्राथमिकता मिलने से हिंदी को भी बल मिलेगा
- हिंदी इंटरनेट की दूसरी सबसे बड़ी भाषा बन रही है
- हिंदी सिनेमा, यूट्यूब, ब्लॉग और सोशल मीडिया पर इसका व्यापक प्रयोग हो रहा है
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन लर्निंग में हिंदी के लिए संसाधन विकसित किए जा रहे हैं

3. भविष्य की दिशा में पहल

- कार्यस्थलों पर द्विभाषी वातावरण को सशक्त करना
- कार्यालयीन पत्राचार में हिंदी के तकनीकी मानकों को सरल और व्यवहारिक बनाना
- युवाओं को हिंदी लेखन, अनुवाद, और तकनीकी हिंदी में प्रशिक्षित करना
- राजभाषा तकनीकी अनुप्रयोगों में निवेश और नवाचार
- सभी डिजिटल सेवाओं का हिंदी में समानांतर संस्करण

भारतीय संविधान में हिंदी की स्थिति और राजभाषा के रूप में मान्यता भारत के संविधान में हिंदी को विशेष सम्मान प्राप्त है। संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अंतर्गत देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। अनुच्छेद 351 में यह प्रावधान है कि संघ का कर्तव्य है कि वह हिंदी का प्रसार और विकास करे, ताकि यह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों को व्यक्त करने का माध्यम बन सके। हालांकि, संविधान में अंग्रेजी को भी संघ की कार्यवाही के लिए सहायक भाषा के रूप में मान्यता दी गई थी। प्रारंभ में यह व्यवस्था 15 वर्षों (1965 तक) के लिए थी, लेकिन हिंदीतर भाषी राज्यों के विरोध के कारण राजभाषा अधिनियम, 1963 के तहत अंग्रेजी का प्रयोग अनिश्चित काल तक जारी रखने का निर्णय लिया गया। फिर भी, हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिलना एक ऐतिहासिक कदम था, जिसने इसके विकास को नई दिशा और गति प्रदान की।

राजभाषा विभाग की स्थापना और उसके उद्देश्य :

राजभाषा विभाग की स्थापना जून 1975 में गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में हुई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य संविधान के प्रावधानों के अनुसार संघ के सरकारी कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना और राजभाषा नीति का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करना है।

संविधान और राजभाषा अधिनियम, 1963 के प्रावधानों का अनुपालन करना। संघ के कार्यालयों में हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करना। हिंदी के प्रयोग से संबंधित नीतियों और योजनाओं में समन्वय स्थापित करना। केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा का प्रबंधन और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना। संसदीय राजभाषा समिति और केंद्रीय हिंदी समिति के कार्यों में सहयोग करना। विभाग का लक्ष्य हिंदी को केवल औपचारिक भाषा तक सीमित न रखकर इसे जनसामान्य की भाषा बनाना भी है। राजभाषा विभाग के 50 वर्षों के प्रमुख योगदान और उपलब्धियाँ पिछले 50 वर्षों में राजभाषा विभाग ने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और इसके प्रयोग को बढ़ाने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। इस दौरान विभाग ने कई योजनाओं, कार्यक्रमों और पहलों के माध्यम से हिंदी को सरकारी और जन जीवन में स्थापित करने का प्रयास किया है।

विभाग की कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं:

हिंदी पखवाड़ा: प्रत्येक वर्ष 1 से 15 सितंबर तक आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करता है। इसमें निबंध लेखन, कविता पाठ और भाषण जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

प्रकाशन: 'राजभाषा भारती' जैसी पत्रिकाओं के प्रकाशन से हिंदी के प्रचार और नीतिगत जानकारी को बढ़ावा मिला है।

प्रशिक्षण कार्यक्रम: विभाग ने कर्मचारियों और छात्रों के लिए हिंदी टंकण, अनुवाद और लेखन के प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किए हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ: विभिन्न मंत्रालयों और कार्यालयों में इन समितियों का गठन कर हिंदी के प्रयोग की प्रगति की निगरानी की जाती है।

पुरस्कार और सम्मान: हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों और संस्थानों को राजभाषा कीर्ति पुरस्कार और राजभाषा गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। इन प्रयासों से हिंदी का प्रयोग सरकारी कार्यालयों में बढ़ा है और यह जनसामान्य के बीच भी लोकप्रिय हुई है।

हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में राजभाषा विभाग की भूमिका राजभाषा विभाग ने हिंदी को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके कुछ उल्लेखनीय प्रयास निम्नलिखित हैं:

विश्व हिंदी सम्मेलन: विदेश मंत्रालय के सहयोग से आयोजित यह सम्मेलन हिंदी को वैश्विक मंच प्रदान करता है। पहला सम्मेलन 1975 में नागपुर में आयोजित हुआ था, और तब से यह हिंदी के प्रचार का प्रमुख माध्यम बना हुआ है।

संसदीय राजभाषा समिति: यह समिति हिंदी के प्रयोग की प्रगति की समीक्षा करती है और नीतिगत सुझाव देती है।

डिजिटल पहल: विभाग ने हिंदी में डिजिटल सामग्री और सॉफ्टवेयर के विकास को प्रोत्साहित किया है, जिससे यह आधुनिक तकनीक के साथ जुड़ सकी है।इन प्रयासों से हिंदी न केवल सरकारी कार्यों तक सीमित रही, बल्कि यह शिक्षा, साहित्य, मीडिया और तकनीक में भी अपनी पहचान बना रही है।

हिंदी भाषा के भविष्य के दृष्टिकोण और चुनौतियाँ हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है, लेकिन इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा होने के बावजूद, इसे वैश्विक मंच पर वह स्थान प्राप्त नहीं हुआ, जिसकी यह हकदार है। संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिलाने के प्रयास जारी हैं, और इस दिशा में विश्व हिंदी सचिवालय कार्य कर रहा है।

हिंदी के सामने प्रमुख चुनौतियाँ:

अंग्रेजी का प्रभाव: भारत में अंग्रेजी का व्यापक प्रयोग हिंदी के लिए चुनौती बना हुआ है। शिक्षा और नौकरी के क्षेत्र में अंग्रेजी को प्राथमिकता दी जाती है।

हिंदीतर भाषी क्षेत्रों का विरोध: दक्षिण और पूर्वोत्तर भारत के कुछ राज्यों में हिंदी को अपनाने में संकोच देखा जाता है।

तकनीकी शब्दावली का अभाव: विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हिंदी में पर्याप्त शब्दावली और सामग्री का विकास अभी बाकी है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए हिंदी को शिक्षा, तकनीक और वैश्विक मंचों पर अधिक सशक्त बनाने की आवश्यकता है। डिजिटल युग में हिंदी सामग्री को बढ़ावा देना और इसे युवाओं के बीच लोकप्रिय बनाना भी जरूरी है।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा के महत्व पर जोर हिंदी भाषा भारत की सांस्कृतिक पहचान और एकता का आधार है। यह न केवल एक भाषा है, बल्कि हमारे जीवन मूल्यों, परंपराओं और संस्कारों की संवाहक भी है। राजभाषा विभाग ने पिछले 50 वर्षों में हिंदी के प्रचार-प्रसार और इसके प्रयोग को बढ़ाने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। हिंदी के विकास की स्वर्णिम यात्रा और विभाग के प्रयासों ने इसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। हिंदी का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह हमें एक सूत्र में बाँधती है और राष्ट्रीय गौरव की भावना को जागृत करती है। इसके भविष्य को सशक्त बनाने के लिए हमें इसके प्रति सम्मान और समर्पण के साथ निरंतर प्रयास करने होंगे। हिंदी को वैश्विक मंच पर स्थापित करना और इसे आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना हम सभी का दायित्व है। इस प्रकार, राजभाषा हिंदी की यह स्वर्णिम यात्रा और राजभाषा विभाग के 50 वर्षों का योगदान हमें प्रेरित करता है कि हम इस भाषा को और अधिक समृद्ध बनाएँ।

सौभाग्य का प्रतीक सिंदूर और ऑपरेशन सिंदूर: संबंध और महत्व

नेहा रंजन, प्रबन्धक, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

सिंदूर या वर्मिलियन, भारतीय परंपरा में एक गहरा सांस्कृतिक और धार्मिक प्रतीक है, जिसे मुख्य रूप से विवाहित महिलाओं के सौभाग्य और वैवाहिक स्थिति के सूचक के रूप में मान्यता प्राप्त है । इसका जीवंत लाल रंग उर्वरता, समृद्धि और भक्ति के कई अर्थों को समेटे हुए है। यह केवल एक सौंदर्य प्रसाधन नहीं है, बल्कि भारतीय समाज के सामाजिक और आध्यात्मिक ताने-बाने में गहराई से निहित एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहचान है। इसके विपरीत, ऑपरेशन सिंदूर एक हालिया सैन्य अभियान को संदर्भित करता है जिसे भारत द्वारा शुरू किया गया था। यह अभियान जम्मू और कश्मीर के पहलगाम में हुए एक घातक आतंकवादी हमले की सीधी प्रतिक्रिया था, जिसका उद्देश्य पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में कथित आतंकवादी बुनियादी ढांचे को निशाना बनाना था । एक सैन्य कार्रवाई के लिए इस सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण नाम के चुनाव ने तुरंत इसके अंतर्निहित इरादे और व्यापक निहितार्थों को स्पष्ट रूप से उजागर किया है।

इस आलेख के जरिए हम सिंदूर के प्राचीन सांस्कृतिक प्रतीक और इसके नाम पर किए गए आधुनिक सैन्य अभियान के बीच संबंध का विश्लेषण करेंगे। यह आलेख इस नामकरण के पीछे के किए गए रणनीतिक संचार, इसके इच्छित संदेशों और इसके द्वारा उत्पन्न बहुआयामी व्याख्याओं की पड़ताल करता है। एक सैन्य अभियान के लिए एक गहरे व्यक्तिगत सांस्कृतिक प्रतीक का यह प्रत्यक्ष संयोजन यह दर्शाता है कि सांस्कृतिक प्रतीकों को देश की सुरक्षा से संबंधित सैन्य उद्देश्यों के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है।इस नाम का चुनाव स्वयं सैन्य रणनीति का एक हिस्सा बन जाता है, जिसका उद्देश्य धारणा को आकार देना और घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भावना को जुटाना है। इसके अतिरिक्त, "सौभाग्य", "वैवाहिक पवित्रता" और "सुरक्षा" से जुड़े एक प्रतीक का हिंसा और प्रतिशोध से जुड़े सैन्य अभियान के लिए उपयोग एक शक्तिशाली गौरव गाथा का निर्माण करता है।

सिंदूर: इसके सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व का गहन अध्ययन

सिंदूर का इतिहास प्राचीन काल से जुड़ा हुआ है, वेदों और पुराणों में इसका उल्लेख इसकी भारतीय सभ्यता में गहरी जड़ें दिखाता है । हड़प्पा और मोहनजोदड़ो सभ्यताओं की खुदाई के दौरान पुरातात्विक महिला मूर्तियों में सिंदूर के निशान पाए गए हैं, जो हजारों वर्षों से इसकी प्रथा का ठोस प्रमाण प्रदान करते हैं । वैदिक काल के दौरान, इसे 'कुमकुम' के नाम से जाना जाता था और विवाहित महिलाओं के लिए 'पंच-सौभाग्य' (पांच शुभ चिह्नों) में से एक माना जाता था, जो प्राचीन वैवाहिक परंपराओं में इसकी अभिन्न भूमिका को रेखांकित करता है ।

सिंदूर का गहरा धार्मिक महत्व है, इसे हनुमान जी, गणेश जी और विशेष रूप से देवी लक्ष्मी और दुर्गा जैसे शक्ति स्वरूपों सहित विभिन्न हिंदू देवी-देवताओं को चढ़ाया जाता है, जो शक्ति, साहस और समृद्धि के प्रतीक हैं। पौराणिक रूप से, माता पार्वती अपने पति के लंबे जीवन के लिए सबसे पहले सिंदूर लगाने वाली मानी जाती हैं, जो भक्ति और वैवाहिक कल्याण के प्रतीक के रूप में इसके उपयोग के लिए एक मिसाल कायम करता है । हनुमान जी द्वारा माता सीता को भगवान राम के लंबे जीवन के लिए सिंदूर लगाते हुए देखकर अपने पूरे शरीर पर सिंदूर लगाने की लोकप्रिय कथा, अटूट भक्ति, सुरक्षा और दीर्घायु के साथ इसके जुड़ाव को और मजबूत करती है और हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाने की परंपरा की व्याख्या करती है । आध्यात्मिक रूप से, आज्ञा चक्र (तीसरे नेत्र) पर सिंदूर लगाने से चेतना के इस केंद्र में ऊर्जा का संचार होता है, जो इसे आध्यात्मिक कल्याण, आंतरिक शक्ति और सकारात्मक ऊर्जा प्रवाह से जोड़ता है ।

विवाहित हिंदू महिलाओं के लिए, सिंदूर सुहाग (वैवाहिक आनंद) और अखंड सौभाग्य का एक अकाट्य प्रतीक है । यह उनकी वैवाहिक स्थिति, पति के प्रति गहरे प्रेम और उनके लंबे जीवन और समग्र कल्याण के लिए एक प्रार्थना का प्रतीक है। लाल रंग स्वयं शक्ति, उर्वरता, शुभता और सकारात्मक ऊर्जा का अत्यधिक प्रतीकात्मक है। ऐसा माना जाता है कि यह पति को विभिन्न खतरों से बचाता है, नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करता है और एक सुखी, स्थिर और समृद्ध वैवाहिक जीवन सुनिश्चित करता है । व्यक्तिगत कल्याण से परे, सिंदूर विवाह के बाद एक महिला की सामाजिक स्थिति को भी दर्शाता है और इसे दुल्हन के 'सोलह श्रृंगार' (16 अलंकरणों) का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता है, जो एक नई सामाजिक भूमिका में उसके प्रवेश का प्रतीक है ।

भारत के विभिन्न राज्यों में सिंदूर की अपनी विशिष्ट महत्ता और सांस्कृतिक पहचान है, जो इसे और भी गहरा अर्थ प्रदान करती है। सिंदूर भारत के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग रूपों और संदर्भों में अपनी महत्ता दर्शाता है। चाहे वह उत्तर में सुहाग का प्रतीक हो, पूरब में उत्सव और एकजुटता का, दक्षिण में आध्यात्मिक पवित्रता का, या पश्चिम में सौभाग्य का, सिंदूर भारतीय संस्कृति और परंपरा का एक अविभाज्य अंग बना हुआ

है। यह केवल एक रंग नहीं, बल्कि आस्था, परंपरा और भावनाओं का एक गहरा संगम है, जो भारतीय स्त्री के जीवन में एक विशेष स्थान रखता है।

- उत्तर भारत, विशेष रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश में सिंदूर का सबसे प्रमुख उपयोग विवाहित महिलाओं द्वारा अपनी मांग में भरना है। यह पति की लंबी उम्र और वैवाहिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है। दैनिक रूप से सिंदूर लगाना यहाँ की परंपरा का अटूट अंग है। करवा चौथ, तीज और छठ पूजा जैसे त्योहारों पर सिंदूर का महत्व और भी बढ़ जाता है। इन अवसरों पर महिलाएं विशेष रूप से अपनी मांग भरती हैं और सिंदूर को शुभ मानती हैं।
- पूर्वी भारत, जिसमें पश्चिम बंगाल, असम और ओडिशा जैसे राज्य शामिल हैं, में सिंदूर का महत्व थोड़ा भिन्न और बहुआयामी है। पश्चिम बंगाल में, दुर्गा पूजा के दौरान सिंदूर खेला एक महत्वपूर्ण रस्म है। विजयादशमी के दिन, विवाहित महिलाएं एक-दूसरे को और देवी दुर्गा को सिंदूर लगाती हैं, जो खुशी, एकजुटता और शुभता का प्रतीक है । असम में, बिहू त्योहार के दौरान भी सिंदूर का प्रयोग होता है, जो नई शुरुआत और समृद्धि का द्योतक है।
- दक्षिण भारत में, सिंदूर को अक्सर कुमकुम के रूप में जाना जाता है और इसका उपयोग केवल मांग में भरने तक सीमित नहीं है। तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में, कुमकुम का उपयोग माथे पर बिंदी लगाने के लिए किया जाता है। यह देवी लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है और पवित्रता, भाग्य और आध्यात्मिक ऊर्जा को दर्शाता है। मंदिरों में पूजा-अर्चना के दौरान, भक्तों को कुमकुम का टीका लगाया जाता है, जो देवताओं के आशीर्वाद का प्रतीक है। विवाह समारोहों में भी कुमकुम का आदान-प्रदान शुभ माना जाता है।
- पश्चिमी भारत, जैसे गुजरात और महाराष्ट्र, में भी सिंदूर का अपना महत्व है। गुजरात में, सिंदूर को अक्सर कुमकुम के रूप में प्रयोग किया जाता है और यह माथे पर बिंदी के रूप में शुभ माना जाता है। नवरात्रि जैसे त्योहारों पर महिलाएं विशेष रूप से कुमकुम का प्रयोग करती हैं। महाराष्ट्र में, विवाहित महिलाएं अपनी मांग में सिंदूर भरती हैं और यह सौभाग्य का प्रतीक है। यहाँ भी, पूजा-पाठ और धार्मिक अनुष्ठानों में सिंदूर का विशेष स्थान है।

सिंदूर केवल एक सौंदर्य प्रसाधन नहीं है, बल्कि एक गहरा सांस्कृतिक आधार है, जो ऐतिहासिक निरंतरता, धार्मिक श्रद्धा, सामाजिक पहचान और वैवाहिक कल्याण की व्यक्तिगत आकांक्षा को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, सिंदूर के पति के जीवन की रक्षा करने और खतरों को दूर करने पर जोर ऑपरेशन सिंदूर के लिए एक सीधा वैचारिक सेतु बनाता है, जो राष्ट्र के "सुहाग" (सम्मान/जीवन) का बदला लेने और उसकी रक्षा करने की बात करता है। यह प्रतीक के सुरक्षात्मक गुणों को एक राष्ट्रीय, प्रतिशोधात्मक पैमाने पर पुनः संदर्भ में रखता है।

ऑपरेशन सिंदूर का तात्कालिक और विनाशकारी ट्रिगर 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम, जम्मू और कश्मीर में हुआ क्रूर आतंकवादी हमला था । यह हमला रेजिस्टेंस फ्रंट (लश्कर-ए-तैयबा का एक ऑफशूट) से जुड़े आतंकवादियों द्वारा किया गया था, जिसके परिणामस्वरूप एक नेपाली नागरिक सहित 26 पर्यटकों की दुखद हत्या हुई थी । एक महत्वपूर्ण और अत्यधिक प्रचारित विवरण यह था कि आतंकवादियों ने कथित तौर पर केवल पुरुषों को निशाना बनाया और विवाहित पुरुषों की, उनकी पत्नियों के सामने उनकी धार्मिक पहचान की पुष्टि करने के बाद हत्या कर दी । आतंकवादियों द्वारा विशेष रूप से पुरुषों को उनकी पत्नियों के सामने निशाना बनाने का विवरण एक महत्वपूर्ण तत्व है जो एक सामान्य आतंकवादी हमले को एक अत्यधिक लैंगिक त्रासदी में बदल देता है। यह "लक्षित शिकार" की स्थिति सीधे तौर पर ऑपरेशन सिंदूर की प्रतीकात्मक शक्ति को बढ़ावा देती है, जो वैवाहिक पवित्रता के उल्लंघन और खोए हुए सुहाग के प्रतिशोध के रूप में कार्य करती है, जिससे सैन्य प्रतिक्रिया व्यक्तिगत और भावनात्मक रूप से भारतीय आबादी के लिए प्रतिध्वनित होती है। भारत ने 6 - 7 मई, 2025 को 01:05 बजे ऑपरेशन सिंदूर पहलगाम हमले की सीधी और निर्णायक प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया । इसका घोषित रणनीतिक उद्देश्य पाकिस्तान-आधारित आतंकवादी समूहों, विशेष रूप से लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद और हिजबुल मुजाहिदीन से संबंधित आतंकवादी बुनियादी ढांचे को निशाना बनाना था, जो पाकिस्तान और पाकिस्तान-अधिकृत कश्मीर में स्थित थे । भारत ने यह घोषणा करते हुए महत्वपूर्ण सफलता का दावा किया कि सटीक हमलों में 100 से अधिक आतंकवादी मारे गए और पाकिस्तान को किसी भी आगे के प्रतिशोध के लिए "कठोर प्रतिक्रियाओं" का स्पष्ट संदेश दिया । ऑपरेशन सिंदूर का नामकरण भारत की व्यापक संचार रणनीति का एक अभिन्न अंग माना जा सकता है ।

ऑपरेशन सिंदूर का नामकरण एक चुनाव था, जो इसके रणनीतिक महत्व को रेखांकित करता है । इसे भारतीय सरकारी स्रोतों और मीडिया द्वारा पहलगाम हमले में अपने सुहाग को खो चुकी महिलाओं के लिए एक सीधी प्रतिक्रिया और "प्रतिशोध" के रूप में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया था। ऑपरेशन का उद्देश्य निर्दोष नागरिकों के खिलाफ की गई "बर्बरता" के लिए "न्याय " का एक शक्तिशाली संदेश देना था, जो भारत के अटूट राष्ट्रीय संकल्प और उसके नागरिकों और

उनके सम्मान की रक्षा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता का प्रतीक था। "सिंदूर" को भारत के भीतर इसकी गहरी भावनात्मक और सांस्कृतिक प्रतिध्वनि के लिए चुना गया था, जो दर्द, गौरव और शक्ति की एक साझा भाषा है और वर्ग, धर्म और क्षेत्रीय विभाजनों से परे है । भारतीय सेना ने प्रतीकात्मक संदेश को बढ़ाने के लिए रणनीतिक रूप से दृश्य ब्रांडिंग का उपयोग किया। इसमें एक गंभीर सोशल मीडिया छवि शामिल थी जिसमें बिखरा हुआ सिंदूर बिखरे हुए रक्त जैसा दिख रहा था, साथ में शक्तिशाली कैप्शन "न्याय मिला। जय हिंद।" इसके अलावा, ऑपरेशन के नाम में 'ओ' अक्षर को लाल सिंदूर के कटोरे के रूप में स्टाइल किया गया था, जिससे एक तत्काल दृश्य जुड़ाव पैदा हुआ । इस रणनीतिक ब्रांडिंग का उद्देश्य सैन्य कार्रवाई को विवाह के पवित्र बंधन, पति की सुरक्षा के लिए एक महिला की मौन प्रार्थना और उसकी आंतरिक शक्ति से जोड़ना था, जिससे सैन्य प्रतिशोध को प्रभावी ढंग से एक गहरे प्रतिध्वनित सांस्कृतिक कथा में बदल दिया गया । इसे "प्रतीकात्मक प्रतिशोध के एक मास्टरस्ट्रोक" के रूप में सराहा गया, जिसे स्पष्टता, दृढ़ विश्वास और सांस्कृतिक गहराई के साथ संवाद करने के लिए डिज़ाइन किया गया था, जिससे आबादी को शिकायत और न्याय की एक साझा भावना के इर्द-गिर्द प्रेरित और एकजुट किया जा सके।

एक सैन्य अभियान के नामकरण और उसके साथ जुड़े दृश्य और संचार तत्वों (बिखरे हुए सिंदूर की इमेजरी, महिला अधिकारियों की ब्रीफिंग) ने सैन्य रणनीति में "भावनात्मक ब्रांडिंग" के एक परिष्कृत रूप को दर्शाया।

निष्कर्ष: सिंदूर ,जो कि रीति- रिवाजों से संबंधित प्राचीन हिंदू प्रतीक है, और इसके नाम पर आधारित सैन्य अभियान के बीच संबंध बेहद गहरा संबंध है, जो एक विशिष्ट राष्ट्रीय त्रासदी (पहलगाम हमला) से उत्पन्न हुआ है और न्याय, प्रतिशोध और अटूट राष्ट्रीय संकल्प के शक्तिशाली संदेशों को संप्रेषित करने के लिए सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है।

सिंदूर,जो कि सौभाग्य और वैवाहिक पवित्रता का एक प्रतिष्ठित प्रतीक है , उसे इस ऑपरेशन के माध्यम से राष्ट्रीय सम्मान और कथित उल्लंघन के लिए एक सामूहिक प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करने के लिए संदर्भ में रखा गया था। यह रेखांकित करता है कि कैसे सांस्कृतिक प्रतीक राष्ट्रीय पहचान प्रक्षेपण के लिए अत्यधिक शक्तिशाली उपकरण हो सकते हैं। ऑपरेशन सिंदूर की विरासत शायद केवल एक सैन्य घटना के रूप में नहीं, बल्कि परंपरा, लिंग और आधुनिक संघर्ष के बीच गहन परस्पर क्रिया को दर्शाने वाली गौरव गाथा के रूप में बनी रहेगी, जो भविष्य की रणनीति और सार्वजनिक विमर्श के लिए अमूल्य सबक प्रदान करती है।

ज्ञान के मोती

- आप आराम की जिंदगी जीना चाहते हैं तो कुछ परेशानी तो उठानी ही पड़ेगी ।
- वह क्या सफ़ल होगा जो निर्भर हो गैरों पर, मंजिल तो उसे मिलती है, जो चलता हैं अपने पैरों पर।
- छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।
- जिंदगी का सबसे खुबसूरत पौधा भरोसा होता है जो जमीन में नहीं, दिल में उगता है।
- चलते रहने से ही सफलता मिलती है, रुका हुआ पानी भी 'बेकार हो जाता है।
- कोई कुछ भी बोले स्वयं को शांत रखो, क्योंकि धूप कितनी भी तेज हो समुद्र को नहीं सुखा सकती।
- उड़ने में बुराई नहीं है, आप भी उड़ें, लेकिन उतना ही जहाँ से जमीन साफ़ दिखाई देती हो।
- समय दिखाई नहीं देता लेकिन बहुत कुछ दिखा जाता है।
- इंसान की नीयत और सोच अच्छी होनी चाहिए, बातें तो हर कोई अच्छी कर लेता है।
- हमेशा सही के साथ खड़े रहो, भले ही अकेला क्यों ना रहना पड़े!
- प्रेम करना है तो अपने कार्य से करे क्योंकि वक्त आने पर ये आपको कभी धोखा नहीं देगा ।
- आप जहां हैं ,उससे आगे जाने का प्रयास करें, प्रयास कभी असफल नहीं होता।
- "समय" सब कुछ बदल देता है, जरूरत सिर्फ "सब्र" की होती है।
- जब तक हम एक दूसरे की मदद करते रहेंगे, तब तक कोई भी नहीं गिरेगा चाहे व्यापार हो, परिवार हो या फिर समाज।
- जीत सकते हैं संस्कार से, और जीता हुआ भी हार जाते है अहंकार से।

वर्तनी और व्याकरण

अंजली तिवारी, लिपिक, रायपुर क्षेत्र

व्याकरण और वर्तनी किसी भी भाषा के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। व्याकरण भाषा के नियमों और संरचना को परिभाषित करता है, जबकि वर्तनी शब्दों के शुद्ध उच्चारण और लेखन को सुनिश्चित करती है। इन दोनों पहलुओं का सही उपयोग भाषा को स्पष्ट, प्रभावी और समझने योग्य बनाता है। व्याकरण उस भाषा पर तब लागू होता है जब वह लिखी या बोली जाती है, लेकिन वर्तनी उस भाषा पर तभी लागू होती है जब वह लिखी जाती है। व्याकरण की परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है- " व्याकरण वह शास्त्र है जिसके द्वारा भाषा का शुद्ध एवं मानक रूप बोलना, लिखना, पढ़ना एवं समझना सीखा जाए ।" एक अन्य परिभाषा हो सकती है कि " जिससे शब्द सिद्धि अथवा शब्दों का निर्माण होकर अर्थ के यथार्थ स्वरूप का भी निर्माण एवं उसका बोध हो, उसे व्याकरण कहते हैं। भाषा का शुद्ध रूप पहचानने में सक्षम बनाना ही व्याकरण के ज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। जबकि भाषा को शुद्ध रूप से लिखना जिसमें मात्राएँ अतिआवश्यक होती हैं उसे वर्तनी कहते हैं । मात्राओं के सही प्रयोग से शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है और वर्तनी में अशुद्धियाँ नहीं होती हैं ।

व्याकरण का महत्व:

व्याकरण भाषा की नींव है। यह भाषा के नियमों और संरचना को परिभाषित करता है, जिससे हम अपने विचारों को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से व्यक्त कर पाते हैं। व्याकरण के बिना, भाषा अस्त-व्यस्त होगी और उसे समझने में मुश्किल हो जाएगी। व्याकरण का उपयोग यह निर्धारित करता है कि शब्दों को किस क्रम में रखा जाए, शब्द काल, विषय-क्रिया आवश्यकता के आधार पर कैसे बदलते हैं। यांत्रिकी उन नियमों को संदर्भित करती है जो विशेष रूप से लिखित भाषा के लिए होते हैं, जैसे कि विराम चिह्न और वर्तनी को नियंत्रित करने वाले नियम।

हिंदी व्याकरण के भेद :

- वर्ण विचार
- शब्द विचार
- वाक्य विचार

व्याकरण कुछ महत्वपूर्ण पहलू :

- **वाक्य रचना:** यह वाक्यों के निर्माण और संरचना को परिभाषित करता है।
- **शब्द क्रम:** यह वाक्यों में शब्दों के क्रम को निर्धारित करता है।
- **काल:** यह क्रियाओं के समय और स्थिति को दर्शाता है।

वर्तनी का महत्व

वर्तनी शब्दों के शुद्ध उच्चारण और लेखन को सुनिश्चित करती है। यह भाषा की सटीकता और स्पष्टता को बनाए रखने में मदद करती है। वर्तनी की गलतियाँ भाषा को अस्पष्ट और समझने में मुश्किल बना सकती हैं।जिन शब्दों के एकाधिक रूप प्रचलित हैं, उनमें से एक का प्रयोग मानक है जैसे: मोजा, लौकी एवं गंजी का मानक रूप क्रमश: जुराब, घिया व बनियान हैं। हिंदी में कुछ शब्द ऐसे हैं जिनकी वर्तनी के दो रूप प्रचलित हैं; जैसे- गरदन - गर्दन, बिलकुल - बिल्कुल, दुकान-दूकान, सरदी-सर्दी इनमें अलग -अलग क्षेत्रों में अलग प्रकार से प्राथमिकता दी जाती है। मानक वर्तनी का मतलब है, भाषा के व्याकरण के मुताबिक, शुद्ध, परिनिष्ठित, और परिमार्जित रूप ।

वर्तनी के महत्त्वपूर्ण नियम

यदि सर्वनाम के साथ दो विभक्ति-चिह्न हों, तो उनमें पहले सर्वनाम से मिलाकर लिखते हैं और दूसरा पृथक् लिखा जाता है। यथा— उसके लिए; इनमें से।

सर्वनाम और उसकी विभक्ति के बीच 'ही', 'तक' आदि अव्यय का निपात हो, तो विभक्ति पृथक् लिखी जाती है। जैसे— आप ही के लिए; मुझ तक को।

वर्तनी की शुद्धता हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु :

1- वर्णमाला का सही ज्ञान
2- अक्षर विन्यास
3- व्याकरण का सही ज्ञान।
4- शब्द ज्ञान।
5- शब्द-रूपों का ज्ञान ।

वर्तनी के महत्वपूर्ण पहलू : वर्तनी का सीधा सम्बन्ध उच्चारण से होता है । यदि उच्चारण शुद्ध होगा तो वर्तनी शुद्ध होगी और यदि उच्चारण अशुद्ध होगा तो वर्तनी भी अशुद्ध होगी।

शब्दों का शुद्ध उच्चारण वर्तनी का एक महत्वपूर्ण पहलू है। यह शब्दों के सही उच्चारण को सुनिश्चित करता है। शब्दों का शुद्ध लेखन वर्तनी का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है। यह शब्दों के सही लेखन को सुनिश्चित करता है।

वर्तनी का इतिहास

वर्तनी का इतिहास भाषा के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल में, जब भाषा मौखिक रूप में प्रचलित थी, तब वर्तनी का महत्व नहीं था। लेकिन जब भाषा लिखित रूप में आई, तो वर्तनी का महत्व बढ़ गया। प्राचीन सभ्यताओं में, जैसे कि मिस्र, यूनान और रोम में, वर्तनी के नियम विकसित किए गए थे।

इन सभ्यताओं में, वर्तनी के नियमों को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाता था, जैसे कि शब्दों के उच्चारण को दर्शाने के लिए विशेष चिह्नों का उपयोग। मध्य युग में, वर्तनी के नियमों को और भी विकसित किया गया। इस दौरान, लिपियों का विकास हुआ और वर्तनी के नियमों को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न लिपियों का उपयोग किया गया। आधुनिक काल में, वर्तनी के नियमों को और भी मानकीकृत किया गया है। आजकल, वर्तनी के नियमों को सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न शब्दकोशों और भाषा संस्थानों का उपयोग किया जाता है। वर्तनी का इतिहास दर्शाता है कि भाषा के विकास के साथ वर्तनी के नियम भी विकसित हुए हैं। आजकल, वर्तनी का महत्व भाषा की सटीकता और स्पष्टता को बनाए रखने में मदद करता है।

हिंदी भाषा की ध्वन्यात्मकता

हिंदी भाषा में यह एक आम धारणा है कि हम जो बोलते हैं वही लिखते हैं। यह धारणा कुछ हद तक सही है, लेकिन पूरी तरह से नहीं। हिंदी भाषा ध्वन्यात्मक है, जिसका अर्थ है कि शब्दों का उच्चारण उनके लेखन से मेल खाता है। हिंदी में अधिकांश शब्दों का उच्चारण उनके लेखन के अनुसार होता है, जिससे यह धारणा बनती है कि हम जो बोलते हैं वही लिखते हैं।

हिंदी भाषा में वर्तनी अंतर

हालांकि, हिंदी भाषा में कुछ अंतर हैं जो इस धारणा को पूरी तरह से सही नहीं बनाते हैं:

- शब्दों का उच्चारण: कुछ शब्दों का उच्चारण उनके लेखन से अलग हो सकता है, जैसे कि अनुस्वार और विसर्ग के उच्चारण में।
- लिपि और उच्चारण: हिंदी लिपि में कुछ अक्षरों का उच्चारण अलग हो सकता है, जैसे कि 'ड़' और 'ढ़' का उच्चारण।
- आधुनिक शब्दों का उच्चारण: आधुनिक शब्दों का उच्चारण कभी-कभी उनके लेखन से अलग हो सकता है, खासकर जब वे अन्य संप्रदायों या क्षेत्रों से आते हैं।

हिंदी भाषा में मात्राओं का प्रयोग: मात्राओं का सही प्रयोग हिंदी वर्तनी का एक महत्वपूर्ण पहलू है। उच्चारण और लेखन को स्पष्ट और सटीक बनाने के लिए मात्राओं के नियमों का पालन करना आवश्यक है।

अ: 'अ' की कोई मात्रा नहीं होती, यह व्यंजनों के साथ स्वतः जुड़ा होता है।

आ: 'आ' की मात्रा 'ा' होती है, जैसे 'क' + 'आ' = 'का'।

इ: 'इ' की मात्रा 'ि' होती है, जैसे 'क' + 'इ' = 'कि'।

ई: 'ई' की मात्रा 'ी' होती है, जैसे 'क' + 'ई' = 'की'।

उ: 'उ' की मात्रा 'ु' होती है, जैसे 'क' + 'उ' = 'कु'।

ऊ: 'ऊ' की मात्रा 'ू' होती है, जैसे 'क' + 'ऊ' = 'कू'।

ऋ: 'ऋ' की मात्रा 'ृ' होती है, जैसे 'क' + 'ऋ' = 'कृ'।

ए: 'ए' की मात्रा 'े' होती है, जैसे 'क' + 'ए' = 'के'।

ऐ: 'ऐ' की मात्रा 'ै' होती है, जैसे 'क' + 'ऐ' = 'कै'।

ओ: 'ओ' की मात्रा 'ो' होती है, जैसे 'क' + 'ओ' = 'को'।

औ: 'औ' की मात्रा 'ौ' होती है, जैसे 'क' + 'औ' = 'कौ'।

अं: 'अं' की मात्रा 'ं' होती है, जैसे 'क' + 'अं' = 'कँ'।

अः: 'अः' की मात्रा 'ः' होती है, जैसे 'क' + 'अः' = 'कः'।

मात्राओं के प्रयोग के नियम:

शिरोरेखा: मात्राएँ शिरोरेखा (ऊपर की रेखा) के ऊपर, नीचे या साथ में लगाई जाती हैं।

संयुक्त व्यंजन: संयुक्त व्यंजनों में मात्राओं का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

शब्दों के अंत में: शब्दों के अंत में आने वाली मात्राओं का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अनुस्वार और अनुनासिक: 'ं' और 'ँ' का प्रयोग शब्दों के अर्थ को बदल सकता है, इसलिए इनका सही प्रयोग आवश्यक है।

तत्सम और तद्भव शब्द: तत्सम (संस्कृत से लिए गए) शब्दों में मात्राओं का प्रयोग उनके मूल रूप में ही करना चाहिए।

उदाहरण: अशुद्ध: मालुम, परिक्षा, षष्ठम

शुद्ध: मालूम, परीक्षा, षष्ठ इत्यादि

हिंदी व्याकरण और अंग्रेजी व्याकरण में अंतर

हिंदी व्याकरण और अंग्रेजी व्याकरण दोनों ही अपनी-अपनी भाषाओं के नियमों और संरचना को परिभाषित करते हैं। हालांकि, दोनों व्याकरण प्रणालियों में कुछ अंतर हैं जो उन्हें अलग बनाते हैं।

हिंदी व्याकरण की विशेषताएं

वाक्य रचना: हिंदी वाक्य रचना में विषय-क्रिया-वस्तु का क्रम होता है, जबकि अंग्रेजी में विषय-क्रिया-वस्तु का क्रम होता है।

काल और वृत्ति: हिंदी में काल और वृत्ति के नियम अधिक जटिल होते हैं और क्रियाओं के रूप को परिवर्तित करते हैं।

लिंग और वचन: हिंदी में लिंग और वचन के नियम महत्वपूर्ण होते हैं और क्रियाओं और विशेषणों के रूप को परिवर्तित करते हैं।

अंग्रेजी व्याकरण की विशेषताएं

वाक्य रचना: अंग्रेजी वाक्य रचना में विषय-क्रिया-वस्तु का क्रम होता है।

काल और वृत्ति: अंग्रेजी में काल और वृत्ति के नियम अपेक्षाकृत

सरल होते हैं और क्रियाओं के रूप में परिवर्तन कम होता है।

लिंग और वचन: अंग्रेजी में लिंग और वचन के नियम महत्वपूर्ण नहीं होते हैं और क्रियाओं और विशेषणों के रूप में परिवर्तन कम होता है।

हिंदी व्याकरण और अंग्रेजी व्याकरण दोनों ही अपनी-अपनी भाषाओं के नियमों और संरचना को परिभाषित करते हैं। हालांकि, दोनों व्याकरण प्रणालियों में कुछ अंतर हैं जो उन्हें अलग बनाते हैं। हिंदी व्याकरण में वाक्य रचना, काल और वृत्ति, और लिंग और वचन के नियम अधिक जटिल होते हैं।

आम बोलचाल में हिंदी व्याकरण

हिंदी व्याकरण की आम बोलचाल भाषा में कई उदाहरण हैं जो इसके नियमों और संरचना को दर्शाते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण हैं:

वाक्य रचना: "मैं स्कूल जा रहा हूँ" - इस वाक्य में विषय (मैं), क्रिया (जा रहा हूँ), और काल (वर्तमान काल) का उपयोग हुआ है।

शब्द क्रम: **"मैंने खाना खाया"** - इस वाक्य में शब्द क्रम का उपयोग हुआ है, जिसमें विषय (मैंने), क्रिया (खाया), और वस्तु (खाना) का क्रम है।

काल और वृत्ति: **"मैं कल स्कूल जाऊँगा"** - इस वाक्य में भविष्य काल का उपयोग हुआ है, जो क्रिया के समय को दर्शाता है।

लिंग और वचन: **"वह लड़की है"** - इस वाक्य में लिंग और वचन का उपयोग हुआ है, जो विषय की विशेषता को दर्शाता है।

व्याकरण भाषा को प्रभावी और आकर्षक बनाता है। व्याकरणिक रूप से सही वाक्य पाठक या श्रोता को अधिक आसानी से समझ में आते हैं। यदि हमारी भाषा पर सही पकड़ है और व्याकरण की समझ है तो हम अपनी बात से किसी भी व्यक्ति, जन समूह अथवा संस्था के अधिकारियों को प्रभावित कर सकते हैं । इसके अतिरिक्त पत्र व्यवहार में भी भाषा महत्वपूर्ण होती है जिसमें सही व्याकरण और सही वर्तनी बहुत ही आवश्यक है । व्याकरण भाषा को मानकीकृत करने में मदद करता है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोग एक-दूसरे की भाषा को समझ सकें। यदि व्याकरण सही नहीं है, तो वाक्य का अर्थ गलत हो सकता है, जिससे गलतफहमी हो सकती है। जबकि, वर्तनी शब्दों को सही ढंग से लिखने का तरीका सिखाती है यदि वर्तनी गलत है, तो शब्दों का अर्थ बदल सकता है। यदि वर्तनी गलत है, तो लेखन में त्रुटियां हो सकती हैं, जिससे पाठक को समझने में कठिनाई हो सकती है। गलत वर्तनी में लिखा गया पत्र गलत संदेश पहुंचा सकता है।

हिंदी व्याकरण में ध्वनि: हिंदी व्याकरण में ध्वनि एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो शब्दों के उच्चारण और अर्थ को निर्धारित करती है। ध्वनि का महत्व इस प्रकार है:

शब्दों का उच्चारण: ध्वनि शब्दों के उच्चारण को निर्धारित करती है, जिससे शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है।

अर्थ की व्याख्या: ध्वनि शब्दों के अर्थ की व्याख्या करने में मदद करती है, जिससे शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है।

भाषा की पहचान: ध्वनि भाषा की पहचान को निर्धारित करती है, जिससे भाषा की विशिष्टता और विशेषता को पहचाना जा सकता है।

हिंदी भाषा में ध्वनियों के प्रकार:

स्वर ध्वनियाँ: अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

व्यंजन ध्वनियाँ: क, ख, ग, घ, ङ, च, छ, ज, झ, ञ, ट, ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ

हिंदी व्याकरण में ध्वनि एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो शब्दों के उच्चारण और अर्थ को निर्धारित करती है। ध्वनि का महत्व भाषा को स्पष्टता और प्रभावी संचार में है।

व्याकरण के बिना वर्तनी

व्याकरण और वर्तनी दोनों ही भाषा के महत्वपूर्ण पहलू हैं जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। व्याकरण के बिना वर्तनी का उपयोग करना मुश्किल है, और इसके परिणामस्वरूप शब्दों का अर्थ अस्पष्ट हो सकता है और भाषा की स्पष्टता कम हो सकती है। क्योंकि व्याकरण और वर्तनी दोनों ही भाषा के महत्वपूर्ण पहलू हैं जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

व्याकरण और वर्तनी का संबंध

व्याकरण वर्तनी को दिशा देता है, जिससे शब्दों का सही लेखन और उच्चारण सुनिश्चित होता है।

वर्तनी व्याकरण को समर्थन देती है, जिससे शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष :

वर्तनी की सटीकता व्याकरण को समर्थन देती है, जिससे शब्दों का अर्थ स्पष्ट होता है और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त किया जा सकता है। व्याकरण की समझ वर्तनी को सुधारती है, जिससे शब्दों का सही लेखन और उच्चारण सुनिश्चित होता है। हिंदी भाषा में वर्तनी और व्याकरण दोनों ही महत्वपूर्ण पहलू हैं जो एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। वर्तनी और व्याकरण का संबंध इस प्रकार है कि वर्तनी व्याकरण का आधार है और व्याकरण वर्तनी को दिशा देता है। वर्तनी और व्याकरण दोनों ही भाषा की स्पष्टता और प्रभावी संचार में मदद करते हैं। व्याकरण और वर्तनी हिंदी भाषा को समझने, लिखने और बोलने के लिए आवश्यक हैं। व्याकरण भाषा के नियमों को सिखाता है, और वर्तनी शब्दों को सही ढंग से लिखने का तरीका सिखाती है। दोनों का सही ज्ञान होने से हम अपनी भाषा को अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।

सहकारिता से सशक्तिकरण

अनिरुद्ध पुरी, प्रबंधक, लुधियाना क्षेत्र

प्रस्तावना :

भारत एक लोकतांत्रिक देश है जिसकी सफलता तभी सुनिश्चित हो सकती है जब समाज के हर वर्ग को समान अवसर, संसाधन और निर्णय लेने की शक्ति मिले। इसी को हम सशक्तिकरण कहते हैं। परंतु सशक्तिकरण का मार्ग केवल सरकारी सहायता से नहीं, बल्कि सहकारिता जैसे सामूहिक प्रयासों से ही संभव है।

वर्तमान सरकार, विशेषकर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में, "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास" के मूलमंत्र के साथ सहकारिता के माध्यम से सशक्तिकरण की दिशा में ठोस कदम उठा रही है।

सहकारिता का अर्थ और महत्त्व

सहकारिता का मतलब होता है – संगठित होकर सामूहिक विकास के लिए कार्य करना। इसमें व्यक्ति अकेले नहीं, बल्कि समूह के रूप में मिलकर कार्य करता है और सभी को समान रूप से लाभ मिलता है। यह मॉडल आर्थिक, सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण में अत्यंत कारगर सिद्ध हुआ है।

प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में सहकारिता को बढ़ावा

1. सहकारिता मंत्रालय की स्थापना

वर्ष 2021 में भारत सरकार ने एक अलग 'सहकारिता मंत्रालय' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य है – सहकारी संस्थाओं को और अधिक प्रभावी, पारदर्शी और व्यावसायिक बनाना। यह मंत्रालय सहकारी समितियों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करता है।

2. 'सहकार से समृद्धि' का नारा

मोदी सरकार ने 'सहकार से समृद्धि' को नारा नहीं, बल्कि नीति बनाया है। इसके तहत ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में सहकारी समितियों को आर्थिक शक्ति दी गई, जिससे वे किसानों, कारीगरों और महिलाओं को आत्मनिर्भर बना सकें।

महत्वपूर्ण योजनाएं जो सहकारिता से सशक्तिकरण की दिशा में बढ़ी योजनाये

योजना का नाम	उद्देश्य
दीनदयाल अंत्योदय योजना	शहरी गरीबों के लिए स्वयं सहायता समूह
प्रधानमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना	मछुआरों के लिए सहकारी समितियों का गठन
राष्ट्रीय पशुधन मिशन	डेयरी आधारित सहकारिता को बढ़ावा
ई – श्रम पोर्टल	असंगठित मजदूरों का पंजीकरण और समावेशन

गृहमंत्री अमित शाह जी के नेतृत्व में सहकारिता को बढ़ावा

1. स्वतंत्र सहकारिता मंत्रालय की स्थापना (5 जुलाई 2021)

भारत के इतिहास में पहली बार सहकारिता मंत्रालय को स्वतंत्र रूप में गठित किया गया, जिससे सहकारी संस्थाओं को सीधा केंद्र सरकार से नीति और समर्थन मिल सका।

2. डिजिटलीकरण से पारदर्शिता

अमित शाह जी ने "ई-सहकारिता पोर्टल" जैसे डिजिटल माध्यमों को शुरू किया जिससे देश की सहकारी समितियों का डेटा पारदर्शी बना और गड़बड़ियों में कमी आई।

3. PACs को बहुउद्देशीय बनाना

देशभर की लगभग 65,000 प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACs) को सिर्फ ऋण देने की संस्था न रखकर, उन्हें खाद-बीज, डिजिटल सेवा केंद्र और स्टोरेज जैसी सुविधाएं देने वाली इकाई बनाने का कार्य शुरू किया गया।

4. राष्ट्रीय सहकारी नीति का मसौदा

एक नई नीति तैयार की जा रही है जिसमें महिलाओं, युवाओं और छोटे किसानों को सहकारिता से जोड़कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना उद्देश्य है।

5. नए सहकारी संगठनों की स्थापना

"राष्ट्रीय सहकारी निर्यात संगठन" जैसे संस्थान बनाकर छोटे किसानों के उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचाने का रास्ता खोला गया।

6. महिलाओं और युवाओं को जोड़ना

महिलाओं को डेयरी, हैंडलूम, ग्राम उद्योग जैसी सहकारी गतिविधियों में प्रोत्साहित किया गया है और युवाओं को सहकारी स्टार्टअप से जोड़ने की कोशिशें हो रही हैं।

7. "सहकारिता से समृद्धि" का विजन

अमित शाहजी का सपना है कि देश के हर गांव और हर वर्ग को सहकारिता के ज़रिए आत्मनिर्भर बनाया जाए - जिससे भारत की समृद्धि गांव से शुरू हो।

सहकारिता के लाभ – सशक्तिकरण की दिशा में

आर्थिक स्वतंत्रता – सहकारिता लोगों को ऋण, बाज़ार और संसाधन मुहैया कराकर आत्मनिर्भर बनाती है।

सामाजिक सम्मान – जब महिलाएं या ग्रामीण लोग संगठित रूप में कार्य करते हैं, तो उन्हें समाज में नई पहचान मिलती है।

निर्णय लेने की शक्ति – सहकारी समितियों में हर सदस्य की आवाज़ सुनी जाती है।

स्थायी विकास – सहकारी मॉडल पर्यावरण-सम्मत और दीर्घकालीन विकास को बढ़ावा देता है।चुनौतियाँ और समाधान

चुनौतियाँ	समाधान
भ्रष्टाचार और राजनीति	डिजिटल ऑडिट, पारदर्शिता
प्रबंधन की कमी	प्रशिक्षित युवाओं की नियुक्ति
तकनीकी ज्ञान का अभाव	सरकारी प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना
लाभ का असमान वितरण	नियम आधारित सदस्यता और वितरण प्रणाली

निष्कर्ष

"सहकारिता से सशक्तिकरण" केवल एक नारा नहीं, बल्कि भारत के पुनर्निर्माण का आधार स्तंभ है। आज जब भारत 'विकसित राष्ट्र' बनने की ओर अग्रसर है, तो यह आवश्यक है कि विकास के पथ पर कोई पीछे न छूटे। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 'सबका साथ, सबका विकास' की भावना को सहकारिता के माध्यम से जो शक्ति मिली है, वह न केवल आर्थिक परिवर्तन ला रही है, बल्कि सामाजिक चेतना को भी जाग्रत कर रही है।

यदि हर गांव, हर महिला, हर युवा और हर किसान संगठित हो जाएं, तो न केवल वे सशक्त बनेंगे, बल्कि भारत भी अजेय और आत्मनिर्भर बन जाएगा।

"जब लोग एक साथ बढ़ते हैं, तभी राष्ट्र आगे बढ़ता है। सहकारिता वह दीप है, जिसकी रोशनी हर घर, हर मन तक पहुंचनी चाहिए।"

घरों और कार्यालयों के लिए सौर रूफटॉप

शिव कुमार यादव, वरिष्ठ प्रबन्धक, जोखिम प्रबंधन विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

पर्यावरण प्राकृतिक प्रणालियों का एक जटिल जाल है जो पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखता है। हालाँकि, मानवीय गतिविधियों ने इन प्रणालियों को काफी हद तक बाधित कर दिया है, जिससे प्रदूषण और पर्यावरण का क्षरण हुआ है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक उपयोग ने वायु और जल प्रदूषण, वनों की कटाई और जलवायु परिवर्तन में योगदान दिया है। कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस जैसे जीवाश्म ईंधन ऊर्जा के प्रमुख स्रोत हैं, लेकिन प्रमुख प्रदूषक भी हैं। इन ईंधनों को जलाने से ग्रीनहाउस गैसें निकलती हैं, जो वायुमंडल में गर्मी को उत्सर्जित होने से रोकती हैं और ग्लोबल वार्मिंग में योगदान करती हैं।

इन चुनौतियों के जवाब में, दुनिया तेजी से नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर रुख कर रही है। नवीकरणीय ऊर्जा प्राकृतिक प्रक्रियाओं से प्राप्त होती है जो लगातार प्राप्त होती रहती है। इनमें पवन, जल, भूतापीय और बायोमास ऊर्जा शामिल हैं। इनमें से, सौर ऊर्जा एक मुफ़्त और प्रचुर संसाधन के रूप में सामने आती है। सूर्य एक घंटे में उतनी ऊर्जा प्रदान करता है जितनी पूरी दुनिया एक साल में खपत करती है, जिससे यह हमारी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए एक शक्तिशाली समाधान बन जाता है।

सौर ऊर्जा का उपयोग फोटोवोल्टिक (पीवी) पैनलों के माध्यम से किया जाता है, जो सूर्य के प्रकाश को बिजली में परिवर्तित करते हैं। इन पैनलों को छतों पर लगाया जा सकता है, जिससे स्वच्छ ऊर्जा उत्पन्न करने के लिए अन्यथा अप्रयुक्त स्थान का उपयोग किया जा सकता है। सौर रूफटॉप हमारे घरों और कार्यालयों में ऊर्जा उत्पन्न करने और उपभोग करने के तरीके को बदल रही है। सौर रूफटॉप को अपनाकर, व्यक्ति और व्यवसाय जीवाश्म ईंधन पर अपनी निर्भरता कम कर सकते हैं, अपने बिजली के बिल कम कर सकते हैं, और अधिक टिकाऊ भविष्य में योगदान दे सकते हैं।

घरों और दफ़्तरों में सोलर रूफटॉप को अपनाने से ऊर्जा उत्पादन और उपभोग के तरीके में बदलाव आ रहा है। फोटोवोल्टिक (पीवी) पैनलों के ज़रिए इस्तेमाल की जाने वाली सौर ऊर्जा, ऊर्जा का एक स्वच्छ, नवीकरणीय और टिकाऊ स्रोत है।

सोलर रूफटॉप इंस्टॉलेशन की वृद्धि- वैश्विक रुझान

पूरी दुनिया में सोलर रूफटॉप को अपनाने की प्रक्रिया तेज़ हो रही है। जर्मनी, संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन जैसे देश सोलर एनर्जी इंस्टॉलेशन में सबसे आगे हैं। भारत में, 2010 में शुरू किया गया राष्ट्रीय सौर मिशन, सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने में अहम रहा है। 2023 तक, भारत ने 14,845 मेगावाट से ज़्यादा रूफटॉप सोलर क्षमता स्थापित कर ली है, जिसके 2028 तक 41,778 मेगावाट तक पहुँचने का अनुमान है।

भारत की सौर क्षमता

भारत की भौगोलिक स्थिति में भरपूर धूप मिलती है, जो इसे सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए आदर्श बनाती है। सरकार ने सोलर रूफटॉप को योजनाएँ अपनाने को प्रोत्साहित करने के लिए कई पहल और सब्सिडी शुरू की हैं। सोलर रूफटॉप सब्सिडी प्रोग्राम जैसे कार्यक्रम घर के मालिकों और व्यवसायों को वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त, राज्य-स्तरीय नीतियों और प्रोत्साहनों ने पूरे देश में सौर ऊर्जा को अपनाने को और बढ़ावा दिया है।

सौर रूफटॉप के लाभ आर्थिक लाभ

बिजली बिल में कमी: सौर रूफटॉप के सबसे महत्वपूर्ण लाभों में से एक बिजली बिल में कमी है। अपनी खुद की बिजली पैदा करके, घर के मालिक और व्यवसाय ग्रिड से अपनी बिजली की खपत की भरपाई कर सकते हैं, जिससे काफी बचत होती है। कुछ क्षेत्रों में, नेट-मीटरिंग कार्यक्रम अतिरिक्त सौर ऊर्जा को ग्रिड में वापस बेचने की अनुमति देते हैं, जिससे अतिरिक्त वित्तीय लाभ मिलता है।

संपत्ति मूल्य में वृद्धि: सौर पैनल लगाने से संपत्ति का पुनर्विक्रय मूल्य बढ़ सकता है। कम ऊर्जा लागत और संधारणीय जीवन के वादे के कारण सौर प्रतिष्ठानों वाले घर और कार्यालय अक्सर खरीदारों के लिए अधिक आकर्षक होते हैं।

सरकारी प्रोत्साहन: कर क्रेडिट और सब्सिडी सहित विभिन्न सरकारी प्रोत्साहन सौर प्रतिष्ठानों को अधिक किफायती बनाते हैं। ये प्रोत्साहन सौर पैनल लगाने की शुरुआती लागत को काफी कम कर सकते हैं।

पर्यावरणीय लाभ

कार्बन फुटप्रिंट में कमी: सौर ऊर्जा बिजली का एक स्वच्छ और नवीकरणीय स्रोत है जो जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करता है। सूर्य के प्रकाश से बिजली पैदा करके, सौर रूफटॉप ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने में मदद करती हैं, जो जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में योगदान देता है।

ऊर्जा स्वतंत्रता: सौर रूफटॉप घर के मालिकों और व्यवसायों को अपनी खुद की बिजली पैदा करने की अनुमति देकर ऊर्जा स्वतंत्रता प्रदान करती हैं। इससे ग्रिड पर निर्भरता कम होती है और ऊर्जा सुरक्षा बढ़ती है।

सतत विकास: सौर ऊर्जा प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट न करने वाली बिजली का एक अक्षय स्रोत प्रदान करके सतत विकास को बढ़ावा देती है। यह कम कार्बन अर्थव्यवस्था में परिवर्तन का समर्थन करता है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पर्यावरण की रक्षा करने में मदद करता है।

पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव

बेहतर वायु गुणवत्ता: सौर ऊर्जा प्रणालियाँ संचालन के दौरान वायु प्रदूषक या ग्रीनहाउस गैसों का उत्पादन नहीं करती हैं। जीवाश्म ईंधन पर निर्भर पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों की जगह, सौर रूफटॉप वायु गुणवत्ता को बेहतर बनाने और वायु प्रदूषण से जुड़े स्वास्थ्य जोखिमों को कम करने में मदद करती हैं।

जल संसाधनों का संरक्षण: थर्मल पावर प्लांट के विपरीत, जिन्हें ठंडा करने के लिए महत्वपूर्ण मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है, सौर ऊर्जा प्रणालियों में पानी की न्यूनतम आवश्यकता होती है। इससे जल संसाधनों को संरक्षित करने में मदद मिलती है, जो भारत के कई हिस्सों में तेजी से दुर्लभ होते जा रहे हैं।

पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण: सौर ऊर्जा प्रणालियों को मौजूदा छतों पर स्थापित किया जा सकता है, जिससे भूमि की सफाई की आवश्यकता कम हो जाती है और प्राकृतिक आवासों का संरक्षण होता है। इससे पारिस्थितिकी तंत्र और जैव विविधता पर प्रभाव कम हो जाता है।

अपनाने के लिए व्यावहारिक कदम

गृहस्वामियों के लिए

छत की उपयुक्तता का आकलन करें: सूर्य के प्रकाश के संपर्क को अधिकतम करने के लिए अपनी छत के अभिविन्यास और झुकाव का मूल्यांकन करें। 15 से 30 डिग्री के झुकाव कोण वाली दक्षिण-मुखी छतें कुशल ऊर्जा उत्पादन के लिए आदर्श हैं।

स्थानीय मौसम पैटर्न को समझें: सौर पैनलों के प्रकार और क्षमता का चयन करते समय स्थानीय मौसम पैटर्न और मौसमी बदलावों पर विचार करें। इससे पूरे वर्ष ऊर्जा का निरंतर उत्पादन सुनिश्चित होता है।

वित्तीय प्रोत्साहनों का अन्वेषण करें: सौर प्रतिष्ठानों की अग्रिम लागतों को कम करने के लिए सरकारी प्रोत्साहनों, सब्सिडी और वित्तपोषण विकल्पों पर शोध करें।

विश्वसनीय इंस्टॉलर चुनें: अपने सौर सिस्टम की गुणवत्ता और दक्षता सुनिश्चित करने के लिए अनुभवी और प्रतिष्ठित सौर बैरल इंस्टॉलर चुनें।

व्यवसायों के लिए

ऊर्जा ऑडिट करें: अपने व्यवसाय के लिए सौर प्रतिष्ठानों की संभावित बचत और लाभों को निर्धारित करने के लिए ऊर्जा ऑडिट करें।

सरकारी कार्यक्रमों का लाभ उठाएँ: वाणिज्यिक सौर प्रतिष्ठानों का समर्थन करने के लिए डिज़ाइन किए गए सरकारी कार्यक्रमों और प्रोत्साहनों का लाभ उठाएँ।

मौजूदा प्रणालियों के साथ एकीकृत करें: ऊर्जा के उपयोग को अनुकूलित करने और लागत को कम करने के लिए मौजूदा ऊर्जा प्रबंधन प्रणालियों के साथ सौर ऊर्जा प्रणालियों को एकीकृत करें।

स्थिरता को बढ़ावा दें: अपनी ब्रांड छवि को बढ़ाने और पर्यावरण के प्रति जागरूक ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए अपनी कॉर्पोरेट स्थिरता रणनीति के हिस्से के रूप में सौर ऊर्जा का उपयोग करें।

निष्कर्ष

घरों और दफ़्तरों में सोलर रूफटॉप को अपनाने से आर्थिक बचत से लेकर पर्यावरण संबंधी लाभ तक कई फ़ायदे मिलते हैं। सूर्य की शक्ति का दोहन करके, व्यक्ति और व्यवसाय अपने कार्बन पदचिह्न को कम करते हुए एक स्थायी भविष्य में योगदान दे सकते हैं। सोलर रूफटॉप को व्यापक रूप से अपनाना ऊर्जा स्वतंत्रता और पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। जैसे-जैसे भारत अक्षय ऊर्जा को अपनाना जारी रखता है, सौर ऊर्जा और पर्यावरण पर इसके सकारात्मक प्रभाव का भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है।

इसके अलावा, इण्डियन ओवरसीज़ बैंक व्यक्तियों और व्यवसायों दोनों के लिए सोलर रूफटॉप की स्थापना के लिए विशेष उत्पाद प्रदान करता है। ये वित्तीय उत्पाद अग्रिम लागत को काफी कम कर सकते हैं और सौर ऊर्जा में बदलाव को और अधिक सुलभ बना सकते हैं। इन विकल्पों का लाभ उठाकर, घर के मालिक और व्यवसाय न केवल बिजली के बिलों में बचत कर सकते हैं, बल्कि एक हरित और अधिक टिकाऊ भविष्य में भी योगदान दे सकते हैं।

अग्निवीर (देश सेवा की नई पहल)

पद्मा चांदवानी, प्रबंधक, केंद्रीय कार्यालय

चाह नहीं, मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि डाला जाऊँ,
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने , जिस पर जाएं वीर अनेक।

बचपन में जब हमने यह कविता पढ़ी थी, तब हमारे कोमल हृदय में देशभक्ति, त्याग और समर्पण की भावना तीव्रता से जाग उठी थी। इन पंक्तियों ने हमें न केवल भावुक किया, बल्कि मातृभूमि के लिए कुछ कर गुजरने* की प्रेरणा भी दी।

आज उन्हीं भावनाओं और स्वप्नों को वास्तविकता का रूप देती है भारत सरकार की "अग्निवीर"योजना"। यह योजना देश के युवाओं को वह अवसर प्रदान करती है, जिसमें वे राष्ट्रसेवा, अनुशासन और शौर्य का जीवन जी सकते हैं—वह जीवन जिसकी कल्पना हमने इन कविताओं को पढ़ते समय की थी।

अग्निवीर: शब्द का अर्थ और भावार्थ
'अग्निवीर' दो शब्दों का समावेश है — 'अग्नि' और 'वीर'।
'अग्नि' प्रतीक है ऊर्जा, तेज, तपस्या और शुद्धता का।
'वीर' का अर्थ होता है साहसी, निर्भीक और पराक्रमी व्यक्ति।

अतः अग्निवीर वह युवा है, जो राष्ट्र के लिए तपकर निकलता है, शौर्य और समर्पण से ओतप्रोत होता है और देश की सेवा को अपना धर्म मानता है।

अग्निपथ योजना क्या है?

भारत सरकार ने 2022 में "अग्निपथ योजना" की शुरुआत की, जिसके अंतर्गत सेना में भर्ती होने वाले युवाओं को "अग्निवीर" नाम दिया गया। इसका उद्देश्य युवाओं को चार वर्षों के लिए सशस्त्र बलों में सेवा का अवसर देना है। इन चार वर्षों में चुने गए युवाओं को "अग्निवीर" कहा जाएगा। सेवा समाप्ति के बाद, कुछ अग्निवीरों को स्थायी नियुक्ति दी जा सकती है जबकि अन्य को आर्थिक सहायता और कौशल प्रशिक्षण देकर उन्हें नागरिक जीवन के लिए तैयार किया जाएगा।

अग्निवीर योजना की आवश्यकता क्यों है ?

सर्वप्रथम अग्निपथ जैसी योजनाओं की आवश्यकता 1962 के चीन के साथ युद्ध के बाद महसूस की गई थी। अग्निपथ योजना शुरू करने का एक मुख्य कारण हमारे सुरक्षा बल कर्मियों की औसत आयु कम करना है। कारगिल समीक्षा समिति ने भी इस पर प्रकाश डाला था। चूंकि भारत के पड़ोसी देश चीन और पाकिस्तान दोनों पहाड़ी सीमाएँ हैं, इसलिए कम आयु वर्ग वाले सुरक्षा बल ऐसे क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करेंगे। प्रौद्योगिकी के इस युग में युद्ध की प्रकृति भी साइबर, अंतरिक्ष और सूचना युद्ध सहित युद्ध के विभिन्न पहलुओं में तेजी से बहु आयामी हो गयी है। रक्षा में उन्नत प्रौद्योगिकीय संचार के साथ, सुरक्षा बलों को भविष्य में हर प्रकार सुरक्षा जरूरतों के लिए तैयार रहने की जरुरत है।

अग्निवीर बनने की प्रक्रिया

अग्निवीर बनने के लिए उम्मीदवारों को लिखित परीक्षा, शारीरिक परीक्षण और चिकित्सा परीक्षण से गुजरना होता है। चयन प्रक्रिया पारदर्शी और योग्यता आधारित है। चयनित उम्मीदवारों को विशेष प्रशिक्षण के लिए भेजा जाता है ताकि वे आधुनिक युद्ध प्रणाली, अनुशासन और सामरिक रणनीतियों में दक्ष बन सकें।

योजना के पीछे का उद्देश्य

इस योजना को लाने के पीछे अनेक कारण हैं:

सशस्त्र बलों का युवा बनावट: युवा ऊर्जा से भरपूर फौज तैयार करना।

आर्थिक संतुलन: स्थायी भर्तियों की तुलना में यह प्रणाली अधिक व्यावहारिक और कुशल है।

राष्ट्र निर्माण में भागीदारी: युवाओं को देश सेवा का अनुभव देना।

कौशल विकास: प्रशिक्षित युवाओं को नागरिक जीवन में उपयोगी बनाने की योजना।

अग्निवीरों को मिलने वाले लाभ

1. आर्थिक पैकेज

- पहले वर्ष वेतन: ₹30,000 प्रति माह (हाथ में ₹21,000)।
- चौथे वर्ष तक वेतन: ₹40,000 प्रति माह।
- सेवा निधि पैकेज: चार वर्षों के अंत में ₹11.71 लाख (ब्याज सहित), जो पूरी तरह टैक्स फ्री होगा।

2. बीमा सुरक्षा

- ₹48 लाख का गैर-अंशदायी जीवन बीमा।
- ड्यूटी के दौरान मृत्यु पर ₹1 करोड़ तक का मुआवज़ा।

3. रोजगार के अवसर

- सेवा समाप्ति के बाद निजी क्षेत्र, पुलिस, अर्धसैनिक बलों और रक्षा उत्पादन कंपनियों में रोजगार के बेहतर अवसर।
- राज्य सरकारों द्वारा आरक्षण की घोषणाएं।
- कौशल प्रशिक्षण प्रमाणपत्र, जो उद्योगों में उपयोगी होगा।

4. सामाजिक सम्मान

- अग्निवीरों को समाज में एक विशिष्ट पहचान मिलेगी।
- राष्ट्रभक्ति, अनुशासन और नेतृत्व का प्रतीक बनेंगे।
- युवाओं के लिए लाभ

- देश सेवा का अवसर: राष्ट्र के प्रति गर्व और योगदान।
- आजीवन पहचान: "अग्निवीर" एक सम्मानजनक उपाधि है।
- आर्थिक लाभ: चार वर्षों में वेतन और सेवा निधि के रूप में अच्छी आमदनी।
- कौशल प्राप्ति: तकनीकी, नेतृत्व और अनुशासन संबंधी कौशल।
- भविष्य की संभावनाएँ: कॉरपोरेट, सुरक्षा एजेंसियों और सरकारी विभागों में नौकरियों के लिए पूर्व-अग्निवीरों को वरीयता।

अग्निवीरों के लिए भविष्य

सरकार और निजी क्षेत्र ने यह स्पष्ट किया है कि सेवा पूरी करने वाले अग्निवीरों को विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर दिए जाएंगे:

- पुलिस बल और अर्धसैनिक बलों में वरीयता
- प्राइवेट सेक्टर में रोजगार
- स्टार्टअप और उद्यमिता के लिए ऋण सुविधा
- शैक्षणिक संस्थानों में विशेष कोटे

सामाजिक प्रभाव

"अग्निवीर" न केवल एक भर्ती योजना है, बल्कि यह राष्ट्रीय चरित्र निर्माण का माध्यम बन सकती है। यह युवा पीढ़ी में अनुशासन, देशभक्ति और नेतृत्व क्षमता का विकास करती है। इससे ग्रामीण और पिछड़े इलाकों के युवाओं को भी मुख्यधारा में आने का अवसर मिलता है।

ऑपरेशन सिंदूर – अग्निवीरों की अग्रणी भूमिका

ऑपरेशन सिंदूर में लगभग 3,000 अग्निवीरों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे वायु रक्षा प्रणालियों को संभालने, पाकिस्तानी मिसाइल और ड्रोन हमलों से भारतीय सैन्य प्रतिष्ठानों की रक्षा करने, और दुश्मन पर हमला करने वाले दल में शामिल थे। इसके अलावा, उन्होंने गनर, रेडियो ऑपरेटर, और भारी वाहनों के चालक के रूप में भी काम किया।

ऑपरेशन सिंदूर, जो 7 मई को शुरू हुआ, में भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर और पाकिस्तान में स्थित आतंकी ठिकानों पर हमला किया। इस ऑपरेशन में, अग्निवीरों ने न केवल दुश्मन के हमलों को नाकाम करने में, बल्कि स्वदेशी वायु रक्षा प्रणाली "आकाशतीर" को संचालित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अग्निवीरों ने विभिन्न भूमिकाओं में काम किया, जिनमें शामिल हैं:

- **गनर्स:**

वे विभिन्न प्रकार की बंदूकों और मिसाइल प्रणालियों को संभालने में शामिल थे।

- **फायर कंट्रोल ऑपरेटर्स:**

उन्होंने दुश्मन के हमलों का पता लगाने और उन पर प्रतिक्रिया देने में मदद की।

- **रेडियो ऑपरेटर्स:**

उन्होंने संचार नेटवर्क और रडार प्रणालियों के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

- **भारी वाहनों के चालक:**

वे मिसाइलों और अन्य हथियारों को लाने-ले जाने और युद्ध क्षेत्र में तैनात करने में शामिल थे।

- **आकाशतीर का संचालन:**

अग्निवीरों ने इस स्वदेशी वायु रक्षा प्रणाली को सक्रिय और संचालित करने में मदद की, जो भारत की वायु रक्षा प्रतिक्रिया का मुख्य केंद्र बन गया।

ऑपरेशन सिंदूर में अग्निवीरों की भूमिका ने न केवल उनकी क्षमताओं को प्रदर्शित किया, बल्कि अग्निपथ योजना की प्रभावशीलता पर भी प्रकाश डाला।

- भारत में अग्निपथ योजना स्वैच्छिक है और युवाओं को सीमित अवधि के लिए सेना में सेवा देने का अवसर देती है।
- अन्य देशों में यह सेवा या तो अनिवार्य है (इज़राइल, कोरिया, रूस) या पूरी तरह से पेशेवर और लाभप्रद (जैसे अमेरिका)।
- भारत ने एक मध्यम मार्ग अपनाया है जो युवाओं को अनुशासन, राष्ट्रसेवा और करियर के नए अवसर प्रदान करता है।

सरकारी पहलें: पूर्व-अग्निवीरों के लिए अवसर

उत्तर प्रदेश सरकार ने हाल ही में घोषणा की है कि पूर्व-अग्निवीरों को पुलिस, पीएसी, फायरमैन आदि पदों पर 20% आरक्षण मिलेगा।

उन्हें 3 वर्ष की आयु में छूट भी दी जाएगी, जिससे वे प्रतियोगी परीक्षाओं में अधिक सहजता से भाग ले सकें।

केंद्रीय बलों जैसे सीआइएसएफ, बीएसएफ और सीआरपीएफ में भी 10% आरक्षण और शारीरिक परीक्षण में छूट दी जा रही है।

निष्कर्ष

"अग्निवीर" योजना भारतीय रक्षा व्यवस्था में एक साहसिक और नवीन प्रयोग है। यह युवाओं को राष्ट्र सेवा का अवसर देने के साथ-साथ उन्हें आत्मनिर्भर और योग्य नागरिक बनने में मदद करती है। यह योजना देश की सैन्य तैयारियों और युवा शक्ति के समन्वय का प्रतीक बनती जा रही है और इसी ओजस्वी भावना को स्वर देती हैं कवि द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी की ये प्रेरक पंक्तियाँ, जो अग्निवीरों के साहस, समर्पण और राष्ट्रप्रेम की जीवंत अभिव्यक्ति हैं-

उठो धरा के अमर सपूतो, पुनः नया निर्माण करो।
जन-जन के जीवन में फिर से नई स्फूर्ति, नव प्राण भरो।
नया प्रात है, नई बात है, नई किरण है, ज्योति नई।
नई उमंगें, नई तरंगे, नई आस है, साँस नई।
युग-युग के मुरझे सुमनों में, नई-नई मुस्कान भरो।

विटामिन डी की कमी और कैंसर

विभाष चन्द्र सिंह, प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी

प्रस्तावना : विटामिन डी को सनशाइन विटामिन भी कहा जाता है । यह हमारे शरीर के लिए बेहद जरुरी विटामिन है । यह हड्डियों और मांसपेशियों को मजबूत बनाता है । यह सेल्स ग्रोथ व ब्लड़ प्रेशर रेगुलेशन में भी मदद करता है । यह कोशिकाओं के विकास को नियंत्रित,प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत और इंफ्लेमेशन कम करता है ।

विटामिन डी की कमी होने पर शरीर को कैल्शियम अब्जॉर्ब करने में दिक्कत होती है ,जिससे हड्डियाँ कमजोर होने लगती हैं और कई अन्य समस्याएँ होने लगती है । नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मैडिसिन में पब्लिश एक स्टडी के अनुसार भारत में लगभग 70% से ज्यादा लोग विटामिन डी की कमी से जूझ रहे हैं ।

विटामिन डी की कमी से कैंसर भी हो सकते हैं । विटामिन डी की कमी से सीधे कोई कैंसर नहीं होता है । लेकिन इसकी कमी से कोशिकाओं के कामकाज पर गंभीर असर पड़ता है । जो कैंसर का कारण बन सकता है ।

विटामिन डी की कमी से निम्न कैंसर का जोखिम बढ़ सकता है :

- कोलोरेक्टल कैंसर
- ब्रेस्ट कैंसर
- लंग्स कैंसर
- प्रोस्टेट कैंसर
- पैंक्रियाटिक कैंसर

विटामिन डी की कमी और कैंसर के लिंक

कोलोरेक्टल कैंसर : नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मैडिसिन में प्रकाशित एक स्टडी के मुताबिक विटामिन डी कोशिकाओं के असामान्य ग्रोथ को रोकता है ।इसकी कमी से असामान्य ग्रोथ हो सकती है । जिससे आंतों के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है ।

ब्रेस्ट कैंसर : नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मैडिसिन में प्रकाशित एक स्टडी के मुताबिक महिलाओं में विटामिन डी की कमी के कारण ब्रेस्ट कैंसर का जोखिम बढ़ जाता है ।

फेफड़ों का कैंसर : हेल्थ जर्नल मैडिसिन में प्रकाशित एक स्टडी के मुताबिक विटामिन डी की कमी से प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होने लगती है और कोशिकाओं में इंफ्लेमेशन बढ़ जाता है । जिस कारण फेफडों के कैंसर का खतरा बढ़ जाता है ।

प्रोस्टेट कैंसर : नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मैडिसिन में प्रकाशित एक स्टडी के मुताबिक पुरुषों में बहुत ज्यादा या बहुत कम विटामिन डी का स्तर होने पर प्रोस्टेट कैंसर का खतरा बहुत ज्यादा हो जाता है ।

पैंक्रियाटिक कैंसर : जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन एंड़ मेटाबॉलिज्म में प्रकाशित एक स्टडी के मुताबिक, अगर विटामिन डी बहुत कम हो गया है ,तो पैंक्रियाटिक कैंसर का खतरा बहुत ज्यादा हो जाता है ।

विटामिन डी की कमी के कारण :

आज कल लोगों में विटामिन डी की कमी का मुख्य कारण सूरज की रोशनी में बहुत कम समय बिताना । लोग ज्यादातर समय घर या ऑफिस के अंदर रहते हैं ,जिससे शरीर को प्राकृतिक रूप से विटामिन डी बनाने के लिए जरुरी यूवीबी किरणें नहीं मिल पाती हैं ।

इसके अलावा निम्न कारण हैं :

- सनलाइट एक्स्पोज़र कम होना : अगर कोई व्यक्ति ज्यादातर समय घर या ऑफिस में रहता है और धूप में नहीं जाता है ,तो उसके शरीर में विटामिन डी बनने का मौका कम मिलता है । क्योंकि हमारे शरीर को विटामिन डी बनाने के लिए यूवीबी किरणों की जरुरत होती है ,जो सूर्य की रोशनी से प्राप्त होती हैं ।
- वायु प्रदूषण से सनलाइट अवरुद्ध होना : अगर कोई बहुत प्रदूषित शहर या इलाके में रहता है । जहाँ गाड़ियों और फैक्ट्रियों से निकलने वाला धुआँ हवा में कार्बन कणों को बढ़ा देता है , ये कण सूर्य के यूवीबी कणों को सोख लेते हैं । जिससे शरीर में विटामिन डी बनने की प्रक्रिया प्रभावित होती है ।
- सनस्क्रीम से विटामिन डी बनाने की क्षमता घटना : सनस्क्रीम लगाने से सूर्य के हानिकारक किरणों से बचाव होता है ,लेकिन उसके साथ – साथ यूवीबी किरणों को भी रोक देती है । इसलिए जरुरत से ज्यादा सनस्क्रीम के उपयोग से विटामिन डी बनने की प्रक्रिया प्रभावित होती जिससे विटामिन डी की कमी हो जाती है ।
- उम्र बढ़ने से विटामिन डी बनाने की क्षमता में कमी आना : जैसे –जैसे उम्र बढ़ती है ,त्वचा की विटामिन डी बनाने की क्षमता कम होने लगती है । इसलिए डॉक्टर बुजर्ग को विटामिन डी की सप्लीमेंट लेने की सलाह देते हैं ।
- खराब गट हेल्थ से विटामिन डी का अवशोषण में कमी आना : विटामिन डी जो हम खाने या सप्लीमेंट के जरिए लेते हैं ,वह हमारे गट में अवशोषित होता है । अगर गट से जुड़ी कोई भी बीमारी हो यानी आइबीएस आदि तो विटामिन डी का अवशोषण सही तरीके से नहीं हो पाता है । जिससे विटामिन डी की कमी हो सकती है ।

विटामिन डी की कमी पूरी करने के कुछ उपाय निम्न हैं :

विटामिन डी का स्तर नॉर्मल बनाए रखने के लिए हमलोगों को प्रतिदिन 01 घंटे धूप की जरुरत है । अगर कोई प्रतिदिन 01 घंटे धूप में रहता है तो विटामिन डी का स्तर मेंटेंन रह सकता है । हमारी त्वचा का जितना हिस्सा सीधे सूर्य की रोशनी के सम्पर्क में आता है , उतना ही हिस्सा विटामिन डी बनाता है । इसलिए पूरा शरीर ढ़ककर धूप में बैठने से ज्यादा लाभ नहीं होता है । हालाँकि ,गर्मियों के मौसम में दोपहर की धूप में जाने से बचना चाहिए ।

विटामिन डी का नॉर्मल स्तर : 20 ng /ml होता है एवं 12ng/ml से कम स्तर को विटामिन डी की कमी के रूप में जाना जाता है ।

निम्न बातों का पालन करें :

- सुबह का धूप लें ।
- वजन नियंत्रित रखें ।
- खाने में दूध या दूध से बनी चीजें शामिल करें ।
- संतुलित आहार लें ।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल इंटेलिजेंस) सफलता और रिश्तों की कुंजी

पुष्पांजलि पंडा, मुख्य प्रबन्धक, डिजिटल बैंकिंग विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

भावनात्मक बुद्धिमत्ता क्या होती है :

बचपन से ही हम अकादमिक योग्यता या बौद्धिक बुद्धिमत्ता (इंटेलिजेंस क्रोशंट) के बारे में तो सुनते आए हैं । आइक्यू से हमारी (अकैडमिक इंटेलिजेंस) का पता चलता है। ज्यादा आइक्यू वाले लोग ज्यादा सफल माने जाते हैं। लेकिन अब वैज्ञानिकों का मानना है सफल होने के लिए इमोशनल क्रोशंट का होना भी जरुरी है और इसी को हम ईक्यू भावनात्मक बुद्धिमत्ता (इमोशनल क्रोशंट) से आकते हैं। वास्तव में हाई आईक़्यू वाले लोग बहुत बार सफल नहीं हो पाते। बल्कि जिन लोगों में आइक्यू और ईक्यू का सही संतुलन होता है, जीवन में वे ज्यादा सफल होते हैं।भावनात्मक बुद्धिमत्ता का मतलब है अपने अंदर की भावनाओं को समझना और उन्हें ख़ुशी हासिल करने के लिए नियंत्रित कर पाना|

"जिसे अपनी भावनाओं पर नियंत्रण होता है, वही जीवन की दिशा तय करता है।"

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रमुख घटक

1. स्व-चेतना

स्व-चेतना का अर्थ है — अपनी भावनाओं, विचारों और व्यवहारों को गहराई से समझना। यह जानना कि किसी विशेष परिस्थिति में हम कैसा महसूस कर रहे हैं और क्यों। "जब व्यक्ति स्वयं की भावनाओं को पहचानने लगता है, तो वह अपने निर्णयों में अधिक स्पष्टता और आत्मविश्वास ला पाता है।"

2. स्व-नियंत्रण

यह क्षमता हमें अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने, आवेगों पर काबू पाने और तनावपूर्ण परिस्थितियों में संतुलित रहने में मदद करती है। "स्व-नियंत्रण से व्यक्ति क्रोध, निराशा या घबराहट जैसे नकारात्मक भावों को सकारात्मक ऊर्जा में बदल सकता है।"

3. प्रेरणा

यह वह आंतरिक शक्ति है जो हमें अपने लक्ष्यों की ओर निरंतर प्रेरित करती है। भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति बाहरी पुरस्कारों की अपेक्षा आंतरिक संतोष और उद्देश्य को अधिक महत्व देता है। "ऐसे व्यक्ति चुनौतियों से घबराते नहीं, बल्कि उन्हें अवसर के रूप में अपनाते हैं।"

4. सहानुभूति

सहानुभूति का अर्थ है — दूसरों की भावनाओं को समझना और उन्हें महसूस करना। यह सामाजिक संबंधों को मजबूत करने की नींव है। "जब हम दूसरों के दृष्टिकोण को समझते हैं, तो हम अधिक संवेदनशील, न्यायपूर्ण और सहयोगी बनते हैं।"

5. सामाजिक कौशल

इसमें प्रभावी संवाद, टीमवर्क, नेतृत्व क्षमता और संघर्ष समाधान जैसी क्षमताएँ आती हैं।

"भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों से जुड़ने, प्रेरित करने और सकारात्मक संबंध बनाए रखने में कुशल होता है।"

विभिन्न क्षेत्रों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की ज़िन्दगी के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी भूमिका है। हमने कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों का उल्लेख किया है । जो निम्नलिखित है :

1. जीवनसाथी के साथ संबंधों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका:

एक मजबूत वैवाहिक जीवन के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता बेहद जरूरी है। पति-पत्नी के बीच भावनात्मक समझ, सहानुभूति, और संवाद की कुशलता रिश्ते को गहराई और स्थायित्व प्रदान करती है।

- **संवाद में पारदर्शिता:** जब जीवनसाथी एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हैं, तो संवाद में खुलापन आता है, जिससे गलतफहमियाँ कम होती हैं।
- **सहानुभूति का महत्व:** जीवनसाथी की भावनात्मक ज़रूरतों को समझने की क्षमता रिश्ते को और मजबूत बनाती है।
- **तनाव प्रबंधन:** वैवाहिक जीवन में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता से इन्हें शांति से सुलझाया जा सकता है।
- **सम्मान और समर्थन:** भावनात्मक रूप से बुद्धिमान साथी एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हैं और हर परिस्थिति में एक-दूसरे का साथ निभाते हैं।

2. कार्यालय :

यदि आप किसी कार्यालय में कार्यरत हैं और आपके अधीनस्थ कुछ कर्मचारी कार्य कर रहे हैं, तो उनके प्रति सदैव सहानुभूतिपूर्ण एवं सहयोगी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। उनके कार्य की समय-समय पर सराहना करें और उन्हें उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रोत्साहित करें। यदि वे कोई गलती करते हैं, तो उन्हें कठोरता से डांटने के बजाय, सुधार की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करें।

उनके आत्म-सम्मान का सदैव ध्यान रखें और उनके साथ सम्मानजनक व्यवहार करें । जब आप इस प्रकार का सकारात्मक वातावरण निर्मित करते हैं, तो आपके प्रति उनके मन में आदर एवं विश्वास की भावना विकसित होती है। वे निष्ठा एवं समर्पण के साथ कार्य करते हैं, जिससे न केवल कार्य की गुणवत्ता में वृद्धि होती है, अपितु आपकी नेतृत्व क्षमता भी सुदृढ़ होती है।

इस प्रकार की संवेदनशीलता और प्रेरणादायक नेतृत्व शैली आपको एक सफल एवं सम्मानित अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

3. माता-पिता

वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि अनेक लोग अपने माता-पिता की उपेक्षा करने लगे हैं। यह प्रवृत्ति अत्यंत चिंताजनक है, क्योंकि वे

माता-पिता ही होते हैं जिन्होंने अपने बच्चों के पालन-पोषण में असंख्य त्याग किए होते हैं। वे स्वयं अभावों में रहकर यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके बच्चे उत्तम भोजन करें, अच्छे वस्त्र पहनें और श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त करें।

किन्तु जब वही बच्चे बड़े होते हैं, तो अनेक बार वे अपने माता-पिता को नज़रअंदाज़ करने लगते हैं। यह व्यवहार माता-पिता के हृदय को गहराई तक आहत करता है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपने माता-पिता के प्रति सदैव स्नेह, सम्मान और कृतज्ञता का भाव रखें। समय-समय पर उनका हालचाल पूछें, उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखें, और यह सुनिश्चित करें कि उन्होंने समय पर भोजन किया है अथवा नहीं।

इस प्रकार की सेवा और आत्मीयता से माता-पिता के हृदय में आपके प्रति अपार स्नेह और आशीर्वाद की भावना उत्पन्न होती है। साथ ही, आपके बच्चे भी इस व्यवहार से प्रेरणा लेकर आपके प्रति वही भावनाएँ विकसित करेंगे। इस प्रकार, एक सुदृढ़ और स्नेहिल पारिवारिक परंपरा का निर्माण होगा।

4. समाज

आज का समाज अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति निरंतर भाग-दौड़ में लगा हुआ है — किसी लक्ष्य को प्राप्त करने की आकांक्षा, किसी इच्छा की पूर्ति की लालसा। इस निरंतर प्रयास में लोग अपने वास्तविक भावों, विशेषतः आनंद की अनुभूति, को कहीं खो बैठे हैं। परिणामस्वरूप, जीवन में प्रसन्नता की अपेक्षा विषाद अधिक दिखाई देता है।

ऐसे समय में यह अत्यंत आवश्यक है कि हम समाज के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाएँ। आज प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार के मानसिक या भावनात्मक संघर्ष से जूझ रहा है। अतः हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम उनके दुःखों को और न बढ़ाएँ।

यदि हम किसी की प्रशंसा नहीं कर सकते, तो कम से कम आलोचना से भी बचें। आदर्श यही होगा कि हम सभी के प्रति सम्मान का भाव रखें। अपने मित्रों और परिचितों से समय-समय पर संवाद करते रहें, उनका हालचाल पूछें। यदि कोई सहायता की अपेक्षा रखता है, तो यथासंभव उसकी सहायता करें।

इस प्रकार के संवेदनशील और सहयोगी व्यवहार से समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। साथ ही, इससे हमारे संबंध अधिक सुदृढ़ और आत्मीय बनेंगे, और हम एक अधिक समरस एवं स्नेहिल समाज की ओर अग्रसर होंगे।

सहानुभूति वह भाषा है जिसे हर दिल समझता है।"

बच्चे :

यदि आपके बच्चे हैं, तो उन्हें असीम प्रेम और स्नेह प्रदान करें। प्रतिदिन उन्हें गले लगाएँ, ताकि वे आपके स्नेह को महसूस कर सकें और भावनात्मक रूप से सुरक्षित अनुभव करें। बचपन से ही उन्हें यह सिखाना आवश्यक है कि दूसरों का सम्मान करना एक महान गुण है — परंतु यह शिक्षा केवल शब्दों से नहीं, बल्कि आपके व्यवहार से प्रभावी रूप से दी जा सकती है।

अतः, सबसे पहले आप स्वयं अपने बच्चों का सम्मान करें। उनके विचारों को सुनें, उनकी भावनाओं को समझें, और उन्हें यह अनुभव कराएँ कि वे आपके लिए महत्वपूर्ण हैं। जब आप उन्हें सम्मान देंगे, तो वे भी स्वाभाविक रूप से दूसरों के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार अपनाएँगे।

इस प्रकार, आप न केवल एक स्नेहिल और समझदार माता-पिता बनेंगे, बल्कि अपने बच्चों को एक बेहतर इंसान बनने की दिशा में भी प्रेरित करेंगे।

महात्मा गांधी: भावनात्मक बुद्धिमत्ता के प्रतीक

महात्मा गांधी न केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे, बल्कि वे भावनात्मक बुद्धिमत्ता के जीवंत उदाहरण भी थे। उन्होंने अपने जीवन में सहानुभूति, आत्म-नियंत्रण, और संवाद की शक्ति को अपनाकर लाखों लोगों को प्रेरित किया।

- **सहानुभूति और करुणा:** गांधीजी ने हर वर्ग के लोगों की पीड़ा को समझा और उनके अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण संघर्ष किया।
- **स्व-नियंत्रण:** उन्होंने अपने क्रोध और आक्रोश को अहिंसा और सत्याग्रह में बदल दिया, जिससे उनका आंदोलन नैतिक रूप से शक्तिशाली बना।
- **सामाजिक कौशल:** उन्होंने संवाद, धैर्य और नेतृत्व के माध्यम से लोगों को एकजुट किया और उन्हें एक साझा उद्देश्य की ओर प्रेरित किया।
- **प्रेरणा:** उनका जीवन स्वयं एक प्रेरणा था - उन्होंने अपने आचरण से ही लोगों को सिखाया कि सच्चाई और अहिंसा से भी परिवर्तन संभव है।

"गांधीजी का नेतृत्व इस बात का प्रमाण है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता केवल व्यक्तिगत सफलता ही नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी आधार बन सकती है।"

भावनात्मक बुद्धिमत्ता केवल एक मनोवैज्ञानिक अवधारणा नहीं, बल्कि जीवन की गुणवत्ता को परिभाषित करने वाली एक अनिवार्य क्षमता है। यह हमें स्वयं को समझने, दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने, और हर परिस्थिति में संतुलन बनाए रखने की शक्ति देती है। चाहे वह पारिवारिक संबंध हों, कार्यस्थल की चुनौतियाँ हों, या सामाजिक जीवन की जटिलताएँ — ईक्यू हर क्षेत्र में हमारी सफलता और संतुलन की कुंजी है।

जब हम भावनात्मक रूप से सजग होते हैं, तो हम न केवल बेहतर निर्णय लेते हैं, बल्कि दूसरों के साथ गहरे और स्नेहिल संबंध भी स्थापित करते हैं। यही वह गुण है जो हमें एक बेहतर इंसान, एक संवेदनशील नागरिक और एक प्रेरणादायक नेता बनाता है।

अतः, आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में केवल बौद्धिक योग्यता ही नहीं, बल्कि भावनात्मक समझ और सहानुभूति भी उतनी ही आवश्यक है। ईक्यू को अपनाकर हम न केवल स्वयं को समृद्ध करते हैं, बल्कि समाज को भी अधिक स्नेहिल, समरस और सकारात्मक दिशा में अग्रसर करते हैं।

"बुद्धिमत्ता केवल ज्ञान में नहीं, भावनाओं को समझने और संभालने में भी होती है।"

बैंकिंग में अनुपालन की भूमिका

दीप्ति हेमंत जगताप, सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय भोपाल

बैंकिंग क्षेत्र, किसी भी अर्थव्यवस्था का रीढ़ होता है, जो वित्तीय स्थिरता और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, यह क्षेत्र कई जोखिमों से भी घिरा होता है, जिनमें धोखाधड़ी, मनी लॉन्ड्रिंग, आतंकवादी वित्तपोषण और नैतिक कदाचार शामिल हैं। इन जोखिमों को कम करने और वित्तीय प्रणाली की अखंडता को बनाए रखने के लिए, अनुपालन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। अनुपालन से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं और प्रणालियों से है जो यह सुनिश्चित करती हैं कि बैंक सभी प्रासंगिक कानूनों, विनियमों, नैतिक मानकों और आंतरिक नीतियों का पालन करें।

अनुपालन का महत्व

अनुपालन केवल नियामक आवश्यकताओं को पूरा करने से कहीं अधिक है; यह बैंकों के लिए एक रणनीतिक अनिवार्यता है। एक मजबूत अनुपालन ढांचा बैंकों को कई तरह से लाभान्वित करता है:

- प्रतिष्ठा की सुरक्षा: अनुपालन का उल्लंघन करने से बैंक की प्रतिष्ठा को गंभीर नुकसान हो सकता है, जिससे ग्राहकों का विश्वास कम हो सकता है और शेयरधारकों का मूल्य गिर सकता है। एक प्रभावी अनुपालन कार्यक्रम बैंक को ऐसी क्षति से बचाता है।
- कानूनी और नियामक दंड से बचाव: गैर-अनुपालन के परिणामस्वरूप भारी जुर्माना, कानूनी कार्रवाई और यहां तक कि ऑपरेटिंग लाइसेंस का निलंबन भी हो सकता है। अनुपालन इन दंडों से बचाता है।
- वित्तीय अपराधों का मुकाबला: अनुपालन कार्यक्रम, विशेष रूप से एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग या धन शोधन निवारण (एएमएल) और आतंकवादी वित्तपोषण का मुकाबला (सीएफटी) से संबंधित, वित्तीय प्रणाली को अपराध और आतंकवाद के वित्तपोषण के लिए उपयोग किए जाने से रोकने में मदद करते हैं।
- जोखिम प्रबंधन: अनुपालन बैंकों को परिचालन, प्रतिष्ठा और कानूनी जोखिमों को पहचानने, मापने, निगरानी करने और नियंत्रित करने में मदद करता है।
- बाजार की अखंडता बनाए रखना: जब बैंक नियमों का पालन करते हैं, तो वे एक निष्पक्ष और पारदर्शी वित्तीय बाजार में योगदान करते हैं, जिससे निवेशक का विश्वास बढ़ता है।
- ग्राहक विश्वास बढ़ाना: जब ग्राहक यह जानते हैं कि उनका बैंक नियमों का पालन कर रहा है और उनकी सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है, तो उनका विश्वास बढ़ता है, जिससे दीर्घकालिक संबंध बनते हैं।

अनुपालन के प्रमुख क्षेत्र

बैंकिंग में अनुपालन कई व्यापक क्षेत्रों को कवर करता है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट चुनौतियां और आवश्यकताएं हैं:

1. एंटी-मनी लॉन्ड्रिंग या धन शोधन निवारण (एएमएल) और आतंकवादी वित्तपोषण का मुकाबला (सीएफटी)

यह अनुपालन का सबसे महत्वपूर्ण और जटिल क्षेत्र है। मनी लॉन्ड्रिंग मूल रूप से आपराधिक गतिविधियों जैसे नशीले पदार्थों की तस्करी, भ्रष्टाचार और धोखाधड़ी से प्राप्त अवैध धन को वैध बनाने की प्रक्रिया है। आतंकवादी वित्तपोषण आतंकवादियों या आतंकवादी संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है। एएमएल और सीएफटी नियमों का उद्देश्य इन गतिविधियों का पता लगाना और उन्हें रोकना है।

एएमएल और सीएफटी के प्रमुख घटक:

- ग्राहक पहचान कार्यक्रम (सीआइपी) और समुचित सावधानी (सीडीडी): बैंकों को अपने ग्राहकों की पहचान सत्यापित करने और उनके व्यवसाय और लेन-देन के पैटर्न को समझने की आवश्यकता होती है। उच्च जोखिम वाले ग्राहकों के संबंध में समुचित सावधानी बरतने की आवश्यक होती है।
- संदेहास्पद गतिविधि रिपोर्टिंग (एसएआर): यदि बैंक को किसी लेन-देन या गतिविधि पर संदेह होता है कि वह मनी लॉन्ड्रिंग या आतंकवादी वित्तपोषण से संबंधित हो सकता है, तो उन्हें वित्तीय खुफिया इकाइयों (एफआइयू) को संदेहास्पद गतिविधि संबंधित रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होती है।
- लेन-देन की निगरानी: बैंकों को असामान्य या संदेहास्पद पैटर्न के लिए ग्राहक लेन-देन की लगातार निगरानी करनी चाहिए।
- प्रतिबंध और लक्षित वित्तीय प्रतिबंध (टीएफएस): बैंकों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) और अन्य अंतरराष्ट्रीय निकायों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों और लक्षित वित्तीय प्रतिबंध का पालन करना चाहिए, जो विशिष्ट व्यक्तियों, संस्थाओं या देशों के साथ व्यापार को प्रतिबंधित करते हैं।
- रिकॉर्ड रखना: सभी धन शोधन निवारण तथा आतंकवादी वित्तपोषण संबंधी रिकॉर्ड को एक निश्चित अवधि तक संभाल कर रखा जाना चाहिए।

2. उपभोक्ता संरक्षण

बैंकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे अपने ग्राहकों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करें और उनके अधिकारों की रक्षा करें। इसमें शामिल है:

- उचित ऋण प्रथाएं: भेदभावपूर्ण ऋण प्रथाओं से बचना।
- पारदर्शी शुल्क और प्रकटीकरण: ग्राहकों को सभी शुल्क, ब्याज दरों और नियमों और शर्तों के बारे में स्पष्ट और पूर्ण जानकारी प्रदान करना।
- गोपनीयता और डेटा सुरक्षा: ग्राहकों की व्यक्तिगत और वित्तीय जानकारी की सुरक्षा करना।
- जनरल डेटा प्रोटेक्शन रेगुलेशन (जीडीपीआर) जैसे नियम इस क्षेत्र में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।
- शिकायत निवारण तंत्र: ग्राहकों की शिकायतों को प्रभावी ढंग से और समय पर निपटाने के लिए स्पष्ट प्रक्रियाएं स्थापित करना।

3. बाजार आचरण और अखंडता

यह सुनिश्चित करना कि बैंक निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से वित्तीय बाजारों में व्यवहार करें। इसमें शामिल है:

- इनसाइडर ट्रेडिंग और बाजार में हेर-फेर पर प्रतिबंध: गैर-सार्वजनिक जानकारी का उपयोग करके या बाजार को कृत्रिम रूप से प्रभावित करके व्यापार करने से रोकना।
- उचित मूल्य निर्धारण और सर्वोत्तम निष्पादन: ग्राहकों के लिए सर्वोत्तम संभव मूल्य और निष्पादन सुनिश्चित करना।
- हितों का टकराव: ऐसी स्थितियों की पहचान करना और उन्हें प्रबंधित करना जहां बैंक या उसके कर्मचारियों के हित ग्राहकों के हितों से टकरा सकते हैं।

4. डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा

डिजिटल युग में, डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा अनुपालन के महत्वपूर्ण स्तंभ बन गए हैं। बैंकों को संवेदनशील ग्राहक डेटा को अनधिकृत पहुंच, हानि और दुरुपयोग से बचाने के लिए मजबूत सुरक्षा उपाय लागू करने चाहिए। इसमें शामिल हैं :

- **साइबर सुरक्षा फ्रेमवर्क:** एनआइएसटी साइबर सुरक्षा फ्रेमवर्क या ISO 27001 जैसे अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन करना।
- **डेटा एन्क्रिप्शन और एक्सेस नियंत्रण:** संवेदनशील डेटा को सुरक्षित करने के लिए एन्क्रिप्शन और मजबूत एक्सेस नियंत्रण का उपयोग करना।
- **घटना प्रतिक्रिया योजना:** साइबर हमले या डेटा उल्लंघन की स्थिति में त्वरित और प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए एक योजना विकसित करना।
- **कर्मचारी प्रशिक्षण:** कर्मचारियों को डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा प्रथाओं में प्रशिक्षित करना।

5. नियामक रिपोर्टिंग

बैंकों को विभिन्न नियामक निकायों को नियमित रूप से विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होती है। इन रिपोर्टों में वित्तीय स्थिति, जोखिम एक्सपोजर, तरलता और पूंजी पर्याप्तता के बारे में जानकारी शामिल होती है। सटीक और समय पर रिपोर्टिंग नियामक निगरानी और वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के लिए आवश्यक है।

6. पूंजी पर्याप्तता और तरलता

बैंकों को अपनी वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के लिए पर्याप्त पूंजी और तरलता बनाए रखने की आवश्यकता होती है। बेसल मुख्यतः बेसल III जैसे अंतरराष्ट्रीय मानक पूंजी पर्याप्तता और तरलता आवश्यकताओं के लिए एक ढांचा प्रदान करते हैं। अनुपालन सुनिश्चित करता है कि बैंक इन मानकों को पूरा करते हैं, जिससे वित्तीय संकटों का जोखिम कम होता है।

7. आंतरिक नीतियां और प्रक्रियाएं

नियामकों द्वारा निर्धारित बाहरी कानूनों और विनियमों के अलावा, बैंकों को आंतरिक नीतियों और प्रक्रियाओं का भी पालन करना चाहिए जो उनके संचालन को नियंत्रित करती हैं। ये आंतरिक नीतियां अक्सर बाहरी विनियमों से अधिक कठोर होती हैं और संगठन के विशिष्ट जोखिम प्रोफाइल और व्यावसायिक मॉडल के अनुरूप होती हैं।

अनुपालन के कार्यक्षेत्र में चुनौतियां

बैंकिंग में अनुपालन एक गतिशील क्षेत्र है जो लगातार विकसित हो रहा है। अनुपालन पेशेवरों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है:

- **बढ़ते नियामक परिदृश्य:** दुनिया भर में नए नियम और कानून लगातार पेश किए जा रहे हैं, जिससे बैंकों के लिए अद्यतित रहना मुश्किल हो जाता है।
- **तकनीकी प्रगति:** फ़िनटेक, ब्लॉकचेन और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी नई तकनीकें नए जोखिम और अनुपालन चुनौतियां पेश करती हैं, जिनके लिए नए समाधानों की आवश्यकता होती है।
- **वैश्विक पहुंच:** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काम करने वाले बैंकों को विभिन्न देशों के विभिन्न नियामक शासनों का पालन करना होता है, जो जटिलता को बढ़ाता है।
- **डेटा वॉल्यूम:** अनुपालन के लिए बड़ी मात्रा में डेटा के विश्लेषण की आवश्यकता होती है, जिसे प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- **लागत:** एक मजबूत अनुपालन कार्यक्रम को बनाए रखना महंगा हो सकता है, जिसमें प्रौद्योगिकी, प्रशिक्षण और कर्मियों में महत्वपूर्ण निवेश की आवश्यकता होती है।

अनुपालन को मजबूत करने के लिए उपाय

इन चुनौतियों का सामना करने और एक मजबूत अनुपालन ढांचा बनाने के लिए, बैंकों को निम्नलिखित उपायों पर विचार करना चाहिए:

- प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना: रेगटेक (RegTech) समाधानों का उपयोग करना, जो नियामक अनुपालन को स्वचालित करने और अनुकूलित करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हैं। इसमें कृत्रिम बुद्धिमत्ता और मशीन लर्निंग का उपयोग करके लेन-देन की निगरानी, जोखिम मूल्यांकन और नियामक रिपोर्टिंग शामिल है।
- कर्मचारी प्रशिक्षण और जागरूकता: सभी स्तरों पर कर्मचारियों के लिए नियमित और व्यापक अनुपालन प्रशिक्षण आयोजित करना, ताकि वे अपनी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझें।
- शीर्ष प्रबंधन की प्रतिबद्धता: अनुपालन संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बोर्ड और वरिष्ठ प्रबंधन से मजबूत समर्थन और प्रतिबद्धता आवश्यक है।
- जोखिम-आधारित दृष्टिकोण: सभी अनुपालन आवश्यकताओं पर समान रूप से ध्यान केंद्रित करने के बजाय, बैंकों को अपने जोखिम-आधारित दृष्टिकोण का उपयोग करके उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जहां गैर-अनुपालन का जोखिम सबसे अधिक है।
- नियमित लेखा परीक्षा और समीक्षा: आंतरिक और बाहरी ऑडिट के माध्यम से अनुपालन कार्यक्रमों की नियमित रूप से समीक्षा और मूल्यांकन करना ताकि कमजोरियों की पहचान की जा सके और उनमें सुधार किया जा सके।
- नियामकों के साथ सहयोग: नियामकों के साथ एक खुला और सहयोगात्मक संबंध बनाए रखना, पारदर्शिता और अनुपालन के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करना।
- अंतरराष्ट्रीय सहयोग: सीमा पार वित्तीय अपराधों का मुकाबला करने के लिए अंतरराष्ट्रीय नियामकों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ सहयोग करना।
- आंतरिक नियंत्रणों को मजबूत करना: प्रभावी आंतरिक नियंत्रण प्रणाली स्थापित करना जो अनुपालन उल्लंघनों को रोकती और पता लगाती है।

निष्कर्ष

बैंकिंग में अनुपालन अब केवल एक कानूनी औपचारिकता नहीं रह गया है; यह बैंकों के संचालन और सफलता के लिए एक मौलिक स्तंभ बन गया है। यह वित्तीय प्रणाली की स्थिरता, अखंडता और सुरक्षा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गैर-अनुपालन के परिणाम गंभीर हो सकते हैं, जिसमें भारी जुर्माना, प्रतिष्ठा को नुकसान और यहां तक कि बैंक का पतन भी शामिल है। इसलिए, बैंकों को एक मजबूत अनुपालन संस्कृति विकसित करने, प्रभावी अनुपालन कार्यक्रमों में निवेश करने और उभरती चुनौतियों का सामना करने के लिए लगातार अनुकूलन करने की आवश्यकता है। एक मजबूत अनुपालन ढांचा न केवल बैंक को कानूनी और वित्तीय जोखिमों से बचाता है, बल्कि यह ग्राहक विश्वास को बढ़ाता है, बाजार की अखंडता को मजबूत करता है, और अंततः एक स्वस्थ और टिकाऊ वित्तीय प्रणाली में योगदान देता है। भविष्य में, जैसे-जैसे वित्तीय परिदृश्य अधिक जटिल होता जाएगा, अनुपालन की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होती जाएगी, जिससे यह बैंकिंग क्षेत्र में एक अपरिहार्य कार्य बन जाएगा।

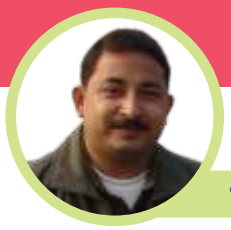

बीएसएफ: भारत की रक्षा करने वाली अदृश्य दीवार

धीरज रस्तोगी, प्रबंधक (सुरक्षा), क्षेत्रीय कार्यालय सिलीगुड़ी

सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ), भारत की प्रथम रक्षा पंक्ति

राष्ट्र के मूक प्रहरी

सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की स्थापना यूं ही नहीं की गई थी - इसे राष्ट्रीय अत्यावश्यकता के लिए बनाया गया था। एक समर्पित, सुप्रशिक्षित और बहुमुखी रक्षक बल, सीमा सुरक्षा बल, उस समय की मांग थी। 1965 के भारत-पाक युद्ध की की ऊपज , सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की स्थापना 1 दिसंबर, 1965 को हुई, जब भारत को एक समर्पित, संरचित सीमा सुरक्षा बल की आवश्यकता का एहसास हुआ।

जिसकी शुरुआत आवश्यकतानुसार हुई और प्रारंभ में जो केवल 25 बटालियनों से बना था, वह आज 265,000 से अधिक कर्मियों के साथ अनुशासन, बहादुरी और उत्कृष्ट परिचालन के लिए प्रतिष्ठा के साथ दुनिया के सबसे बड़े और दुर्जेय सीमा सुरक्षा संगठनों में से एक बन गया है और लगभग छह दशकों तक लगातार बाहरी खतरों से भारत की सीमाओं की रक्षा करने में सक्षम , एक रणनीतिक आवश्यकता के रूप में उभरा है।

आज बीएसएफ भारत की प्रादेशिक अखंडता, आंतरिक स्थिरता और दृढ़ प्रतिरोध का एक स्थायी प्रतीक है और इसका कार्यक्षेत्र सीमा सुरक्षा, घुसपैठ विरोधी अभियानों से लेकर आतंकवाद विरोधी और तस्करी विरोधी गतिविधियों तक फैला हुआ है।

बीएसएफ की महता और इसकी आवश्यकता

भारत सात देशों के साथ 15,000 किलोमीटर से अधिक अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करता है। ये सीमाएँ केवल मानचित्र पर रेखाएँ नहीं हैं - ये संवेदनशील सीमाएँ हैं, जो कई खतरों के से घिरी हुई हैं। गृह मंत्रालय के अधीन काम करने वाला सीमा सूरक्षा बल इन सभी खतरों के खिलाफ एक अहम अवरोधक के रूप में कार्य करते हुए यह सुनिश्चित करता है कि देश में आंतरिक शांति बनी रहें और बाहर से आने वाले तूफान को दूर और बाहर ही रखा जा सकें ।

सीमा सूरक्षा बल की स्थापना शांति और युद्ध काल में देश की इन संवेदनशील सीमाओं की सुरक्षा करने तथा कूटनीति और रक्षा के बीच की खाई को पाटने के लिए की गई थी।

सीमा सूरक्षा बल को सीमा प्रबंधन से लेकर राष्ट्रीय संकट प्रतिक्रिया तक कई स्तरों की ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गई है, और इसके मुख्य कर्तव्यों में शामिल हैं-अपने दो सबसे अस्थिर पड़ोसियों - पाकिस्तान (3,300 किमी से अधिक) और बांग्लादेश (4,000 किमी से अधिक) के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा करना। इसके अतिरिक्त भारतीय सेना के साथ जम्मू और कश्मीर में नियंत्रण रेखा (LoC) पर भी सीमा सूरक्षा बल की दृढ़ उपस्थिती है।

घुसपैठ, सीमा पार तस्करी, अवैध आव्रजन और मानव तस्करी को रोकना इसके प्रमुख कार्यों में शामिल है।

जम्मू और कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों में उग्रवाद विरोधी अभियान एवं जवाबी कार्रवाई में सीमा सूरक्षा बल की मुख्य भूमिका है।

चुनाव और दंगों के दौरान आंतरिक सुरक्षा और सहायता प्रदान करने में सीमा सूरक्षा बल एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

सीमा पार जासूसी करना और देश की जासूसी और तोड़फोड़ को रोकना सीमा सूरक्षा बल की प्राथमिक सेवा मे शामिल है।

प्राकृतिक आपदाओं और कानून-व्यवस्था की स्थितियों में नागरिक प्रशासन की सहायता करना ।

शांतिकाल में सीमावर्ती क्षेत्रों में शांति और निगरानी बनाए रखना और युद्ध के समय सेना का समर्थन करना सीमा सूरक्षा बल का विशिष्ट कर्तव्य है।

जीवन की कठिन परिस्थितियाँ, कठिन इलाके, कठोर वास्तविकताएँ- दृढ़ मनोबल सीमा सूरक्षा बल भारत के २२ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की अंतर्राष्ट्रीय सीमायों की अनवरत चौकसी रखता है। सीमा सूरक्षा बल न केवल पाकिस्तान और बांग्लादेश के साथ सीमाओं को रक्षित करता है, बल्कि अन्य बलों के साथ समन्वय करके नेपाल, भूटान और म्यांमार के निकट सीमा-चौकियों पर भी निगरानी करता रहता है।

यहाँ यह विदित होना चाहिए कि सीमाओं की रखवाली का मतलब सिर्फ़ सतर्क रहना नहीं है बल्कि भीषण, कठोर एवं प्रतिकूल परिस्थितियों को सहना भी है।

देश को यह भी जानना चाहिए कि सीमा सुरक्षा बल कार्मिकों का जीवन सिर्फ़ कठिन नहीं है – बल्कि अथक परिश्रम और त्याग की एक अनवरत गाथा है।

सीमा सूरक्षा बल के कार्मिक पर्यावरण और पारिस्थितिक भावनाओं के चरम को सहते हैं। वे अपने परिवारों से दूर काम करते हैं, अक्सर ऐसे इलाकों में तैनात रहते हैं जहाँ मोबाइल नेटवर्क, बुनियादी स्वास्थ्य सेवा या यहाँ तक कि बिजली भी नहीं होती। फिर भी, उनका जोश कभी कम नहीं होता - वे हँसते हैं, प्रशिक्षण लेते हैं, वे सतर्क रहते हैं - क्योंकि जब वे जागते हैं , तो पूरा देश चैन की नींद सोता है।

चाहे राजस्थान के रेगिस्तान की चिलचिलाती गर्मी हो, कश्मीर की ठंडी हवाएँ और बर्फ से ढकी चौकियाँ हों, या त्रिपुरा के ज़हरीले साँप और जोंक से भरे विषम जंगल हों, सीमा सूरक्षा बल के जवान ऐसी जगहों पर कर्मठता से कर्तव्य निर्वाहन करते हैं जहाँ जीवित रहना ही एक गंभीर चुनौती होती है।

- जम्मू एवं कश्मीर की कई बर्फीली चोटियों पर वे ऑक्सीजन मास्क और बर्फ के जूते पहनकर सजग पहरेदारी करते दिखेंगे।
- वे राजस्थान के तपते रेगिस्तान और भीषण गर्मी में भारतीय सीमाओं की रक्षा करते हैं, जहाँ मृगतृष्णाएँ सड़कों की जगह ले लेती हैं और नखलिस्तान बनाती हैं।
- कच्छ के रण में, वे नमक के दलदलों में चलते हैं जहाँ जीपीएस विफल हो जाता है, और मृगतृष्णाएँ धोखा देती हैं, सीमा सूरक्षा बल के कार्मिक देश की सीमाओं की सजग पहरेदारी मे कोई कमी नहीं रखते हैं ।

- बंगाल में भारत – बांग्लादेश की बाढ़ के मैदानों जो सुंदरबन में दलदलों तक से होकर गुजरती है, जहाँ हर मानसून और बाढ़ के साथ भूगोल बदल जाता है सीमा सूरक्षा बल शत्रुतापूर्ण आबादी और नदी के इलाकों की कई बाधाओं के खिलाफ़ मजबूती से खड़ी रहती है।
- असम और मेघालय में, वे विद्रोही घात के निरंतर खतरे के बावजूद घने जंगलों से भरे इलाकों मे भी अपने कर्तव्य निर्वाहन से कभी भी पीछे नहीं हटते।

जमीन पर सबसे मजबूत सैनिक:

बीएसएफ के कार्मिकों का जीवन हमेशा मुश्किलों से भरा होता है, नींद के मौके कम मिलते हैं , परिवार के साथ समय बिताना और भी मुश्किल रहता है, संचार लाइनें कमज़ोर, आवागमन के साधनों की अनुपलब्धता रहती है, और दुश्मन हमेशा सतर्क रहता है।

कठोर भूभाग और क्रूर मौसम तथा निरन्तर खतरे में भी बीएसएफ कार्मिक सबसे कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं। उन्हें अत्यधिक गर्मी, हड्डियों को कंपा देने वाली ठंड में, लंबे समय तक बिना विश्राम के प्राकृतिक और मानवीय दोनों तरह के खतरों का सामना करते हुए देशहित में अपनी सेवाएँ देनी पड़ती है।

सीमित बुनियादी ढाँचा उनके कर्तव्य निर्वाहन को मानसिक और शारीरिक रूप से कष्टदायक बनाता है। वे अत्यधिक अलगाव, मानसिक दबाव और शारीरिक थकावट के बीच काम करते हैं, लेकिन कभी भी पलक नहीं झपकाते। फिर भी, उनके इरादे दृढ़ रहते हैं, आँखें तेज रहती हैं और उनका संकल्प पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत होता है क्योंकि उनके लिए, कर्तव्य एक शब्द नहीं है बल्कि एक आह्वान है।

सीमा सूरक्षा बल अटूट प्रतिबद्धता धैर्य, बलिदान और अटूट देशभक्ति का प्रतीक है वे कर्तव्य और राष्ट्र-प्रेम से प्रेरित होकर कंधे से कंधा मिलाकर पद पर खड़े होते हैं।

सीमा से परे: नागरिक भूमिकाएँ

युद्ध से दूर भी, सीमा सूरक्षा बल सद्भावना का संदेशवाहक है। असम में बाढ़ और पश्चिम बंगाल में चक्रवातों के दौरान, बीएसएफ के काफिले राहत सामग्री ले जाते हुए फंसे हुए ग्रामीणों को निकालते हैं और महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे को बहाल करते हैं। इसकी चिकित्सा टीमें दूरदराज के सीमावर्ती इलाकों में स्वास्थ्य शिविर चलाती हैं। ये मानवीय मिशन सीमा पर विश्वास को बढ़ाते हैं तथा पूर्ववर्ती सीमा निवासियों को शांति के साझेदार बनाते हैं।

ऑपरेशन सिंदूर: गोलाबारी के बीच साहस

बीएसएफ की क्षमताओं का परीक्षण ऑपरेशन सिंदूर के दौरान एक बार फिर हुआ, जो कि एक संवेदनशील सीमा क्षेत्र में रणनीतिक चौकियों पर कब्ज़ा करने और सीमा पार आतंकी गतिविधियों के ठिकानों को नष्ट करने से जुड़ा एक उच्च-दांव वाला सैन्य अभियान था।

ऑपरेशन सिंदूर एक समन्वित सीमा-पार जवाबी कार्रवाई थी जिसका उद्देश्य नियंत्रण रेखा के पास आतंकवादी ढाँचे को नष्ट करना था, जिसे 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए क्रूर आतंकवादी हमले के बाद मई 2025 की शुरुआत में शुरू किया गया था।

इस मिशन में तीव्र तैनाती, ऊंचाई पर युद्ध, तथा दुश्मन की गहन निगरानी और गोलीबारी के बीच सेना इकाइयों के साथ समन्वय की आवश्यकता थी।

बीएसएफ इकाइयों ने असाधारण साहस और सामरिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अत्यधिक ठंड और शत्रुतापूर्ण इलाके में काम करते हुए, खतरनाक, उच्च ऊंचाई वाले इलाकों में दुश्मन के आक्रमण का सामना करते हुए उन्होंने महत्वपूर्ण ठिकानों को सफलतापूर्वक सुरक्षित किया, खतरों को बेअसर किया और क्षेत्र को स्थिर करने के लिए महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की।

ऑपरेशन सिंदूर ने न केवल सीमा पर गश्त के लिए बल्कि तनाव के दौरान लड़ाकू भूमिकाओं के लिए बीएसएफ की क्षमताओं को और मजबूत किया। बीएसएफ की तत्परता, धैर्य और निडर निष्पादन भारत की सफलता की पहचान बन गया।

खुफिया समन्वय और सर्जिकल सटीकता के साथ बीएसएफ की त्वरित सामरिक प्रतिक्रिया ने न केवल घुसपैठियों को बेअसर कर दिया, बल्कि क्षेत्र में सामरिक प्रभुत्व भी बहाल कर दिया। ऑपरेशन सिंदूर ने बीएसएफ की बहुआयामी भूमिका की पुष्टि की, जो बहादुरी, कौशल और अनुकूलनशीलता का एक शानदार उदाहरण है, जो रक्षात्मक ढाल और आक्रामक निष्पादन दोनों में सक्षम है।

अखंड ढाल: मूक प्रहरी, अथक रक्षक

सीमाओं की रक्षा करने से लेकर संकटों का सामना करने तक, बीएसएफ भारत की अडिग दीवार की तरह खड़ा है। सीमा सुरक्षा बल केवल एक केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल (CAPF) इकाई नहीं है - यह भारत की सीमा सुरक्षा की धड़कन है। कड़ाके की ठंड, तपती गर्मी, सुनसान चौकियों और शत्रुतापूर्ण क्षेत्रों में, बीएसएफ मजबूती से खड़ा है - ज़्यादातर लोगों को नज़र नहीं आता, लेकिन सभी को महसूस होता है।

अंतिम शब्द: गुमनाम को सलाम

बीएसएफ एक शांत प्रहरी है, जो अक्सर मीडिया की चकाचौंध और जनता के ध्यान से दूर रहता है, फिर भी भारत की संप्रभुता में इसका योगदान अतुलनीय है। देश की सीमाओं की सुरक्षा, हर सुरंग का पता लगाना, हर तस्कर को रोकना और सीमा पर हर जान बचाना इन योद्धाओं के साहस और समर्पण को श्रद्धांजलि है।

जब हम सोते हैं - वे चलते हैं।

जब हम जश्न मनाते हैं - वे पहरा देते हैं।

क्योंकि उनके लिए, कर्तव्य कोई काम नहीं है - यह जीने का एक तरीका है।

वे सिर्फ़ सीमा की रक्षा नहीं करते -वे इसे परिभाषित करते हैं।

वे आराम की माँग नहीं करते -वे सुरक्षा बनाते हैं।

वे अदृश्य हो सकते हैं -लेकिन वे कभी भी अनदेखे नहीं होते

सरहदें कायम हैं जिनके दम पर

सीमा सुरक्षा बल के ऐसे वीर एवं जांबाज सैनिकों को नमन।

एल्बर्ट एक्का: वीरता और बलिदान की अमर गाथा

मनीष कुमार शुक्ला, सहायक प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय रांची

भारत के इतिहास में कई ऐसे वीर सपूत हुए हैं जिन्होंने अपने अद्वितीय साहस, कर्तव्यनिष्ठा और देशभक्ति से राष्ट्र का गौरव बढ़ाया है। ऐसे ही अमर शहीदों में से एक हैं लांस नायक एल्बर्ट एक्का, जिन्होंने 1971 के भारत-पाक युद्ध में अद्वितीय पराक्रम दिखाते हुए अपने प्राणों की आहुति दी। रांची (झारखंड) के निवासी एल्बर्ट एक्का को उनकी वीरता के लिए मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च सैन्य सम्मान परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया।

प्रारंभिक जीवन

एल्बर्ट एक्का का जन्म 27 दिसम्बर 1942 को गुमला जिले (वर्तमान झारखंड) के ज़ारी गाँव में हुआ था, जो उस समय बिहार राज्य का हिस्सा था। वह क्रिस्टन आदिवासी समुदाय से ताल्लुक रखते थे। उनका परिवार अत्यंत साधारण था और वे बचपन से ही मजबूत शरीर, साहसी स्वभाव और सरल जीवनशैली के लिए जाने जाते थे।

एल्बर्ट को बचपन से ही जंगल में शिकार करने जाते थे और फुर्ती उनका प्राथमिक गुण था। यह गुण उनके भीतर एक योद्धा की प्रवृत्ति को विकसित करता चला गया। उनका यह गुण आगे चलकर उन्हें भारतीय सेना में एक कुशल और साहसी सैनिक बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

भारतीय सेना में प्रवेश

एल्बर्ट एक्का ने 1962 में भारतीय सेना की बिहार रेजिमेंट में शामिल होकर अपनी सैन्य यात्रा की शुरुआत की। बाद में उनका स्थानांतरण बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स (बीएसएफ़) और फिर ब्रिगेड ऑफ द गार्ड्स की 14वीं बटालियन में हुआ। सेना में रहते हुए उन्होंने अनुशासन, निष्ठा और साहस की मिसाल पेश की। वे एक ऐसे सैनिक थे जो हर कठिनाई में भी मुस्कुराते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते थे।

1971 का भारत-पाक युद्ध

1971 में भारत और पाकिस्तान के बीच एक निर्णायक युद्ध हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य था पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) को स्वतंत्रता दिलाना। यह युद्ध 3 दिसंबर 1971 को आरंभ हुआ और 16 दिसंबर 1971 को समाप्त हुआ।

एल्बर्ट एक्का की बटालियन को पूर्वी पाकिस्तान की सीमा पर गंगासागर के पास एक महत्वपूर्ण रणनीतिक पोस्ट पर हमला करने का आदेश मिला। यह पोस्ट पाकिस्तानी सेना के नियंत्रण में थी और वहां पर मजबूत बंकर एवं मशीन गन पोस्ट स्थापित किए गए थे, जो भारतीय सैनिकों के लिए बड़ा खतरा थे।

वीरता की अमर गाथा

3 दिसंबर 1971 की रात को एल्बर्ट एक्का की यूनिट को आदेश मिला कि वह दुश्मन के गंगासागर पोस्ट पर हमला करें। लड़ाई शुरू होते ही जबरदस्त गोलाबारी होने लगी। दुश्मन की मशीन गन पोस्ट से भारी गोलीबारी हो रही थी, जिससे भारतीय सेना का आगे बढना मुश्किल हो रहा था।

एल्बर्ट एक्का ने स्थिति को भांपते हुए स्वयं आगे बढ़कर दुश्मन की पहली मशीन गन पोस्ट पर आक्रमण किया। उन्होंने बिना किसी हथियार के लड़ाई लड़ते हुए की लड़ाई में वहां तैनात पाकिस्तानी सैनिकों को मार गिराया और पोस्ट को नष्ट कर दिया।

इसके बाद, उन्होंने देखा कि एक और मशीन गन पोस्ट ऊँचाई पर स्थित है और वहाँ से लगातार गोलियाँ चलाई जा रही हैं। इस पोस्ट को तबाह करना बेहद ज़रूरी था। एल्बर्ट एक्का, जो पहले ही गंभीर रूप से घायल हो चुके थे, अपनी परवाह किए बिना उस ऊँचाई की ओर बढ़े। लगातार गोलियों के बीच वे रेंगते हुए दुश्मन की दूसरी पोस्ट तक पहुँचे और अपने हथगोले से उसे नष्ट कर दिया।

इस वीरता से भारतीय सेना की टुकड़ी का आगे बढ़ने का मार्ग साफ़ हुआ और दुश्मन की प्रमुख चौकी पर कब्जा कर लिया गया। लेकिन इस दौरान एल्बर्ट एक्का को गंभीर चोटें आई थी और उन्होंने वीरगति प्राप्त की। उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दे दी, लेकिन देश के लिए एक महत्वपूर्ण विजय संभव कर दी।

परमवीर चक्र सम्मान

एल्बर्ट एक्का की अतुलनीय वीरता, साहस और कर्तव्यनिष्ठा के लिए उन्हें मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च युद्ध सम्मान 'परमवीर चक्र' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भारतीय सेना के उन जवानों को दिया जाता है जिन्होंने युद्धभूमि में असाधारण साहस और बलिदान का प्रदर्शन किया हो।

स्मृतियाँ और सम्मान

एल्बर्ट एक्का की वीरता को स्मरण करते हुए भारत सरकार और विभिन्न संस्थाओं ने उन्हें कई प्रकार से सम्मानित किया है:

रांची के प्रमुख चौराहे का नाम एल्बर्ट एक्का चौक रखा गया है। यहाँ उनकी एक प्रतिमा भी स्थापित है, जो उनकी वीरता की गाथा कहती है।

भारतीय डाक विभाग ने उनके सम्मान में एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया।

एल्बर्ट एक्का स्टेडियम और एल्बर्ट एक्का पार्क जैसे कई स्थलों के नाम उनके नाम पर रखे गए हैं।

हर वर्ष विजय दिवस (16 दिसंबर) पर उनके बलिदान को याद किया जाता है।

प्रेरणा के स्रोत

एल्बर्ट एक्का न केवल झारखंड या आदिवासी समुदाय के गौरव हैं, बल्कि वे पूरे भारतवर्ष के युवाओं के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। उनका जीवन यह सिखाता है कि सच्चा देशप्रेम वह होता है, जिसमें व्यक्ति राष्ट्रहित के लिए अपने प्राणों की भी परवाह न करे।

उनका साहस यह संदेश देता है कि परिस्थितियाँ चाहे जितनी भी विषम क्यों न हों, यदि इरादे मजबूत हों और देश के लिए समर्पण हो, तो असंभव को भी संभव किया जा सकता है।

निष्कर्ष

एल्बर्ट एक्का एक ऐसे सपूत हैं जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर भारत की एक महत्वपूर्ण विजय को संभव बनाया। उनके जैसे वीर योद्धा सदैव देश की आत्मा में जीवित रहते हैं। उनका बलिदान न केवल इतिहास में अमर है, बल्कि हर भारतीय के दिल में एक प्रेरणा बनकर धड़कता है।

आज भी जब हम रांची में एल्बर्ट एक्का चौक से गुजरते हैं, तो उनके अद्वितीय साहस की छाया वहाँ महसूस होती है। हमें गर्व है कि हमारी मातृभूमि ने एल्बर्ट एक्का जैसे वीर को जन्म दिया।

शब्द-शब्दांतर

शब्द	उच्चारण	उद्भव	अर्थ
Budget	Buh-juht	फ्रेंच	बजट
Avant-grade	Ah-vahn-grad	फ्रेंच	अभिनव
kindergarten	kin-duh-gaa-dn	जर्मनी	बालवाड़ी
ubiquity	Yoo-bi-kvuh-tee	लैटिन	सर्वव्यापकता
acumen	a-kyoo-muhn	लैटिन	कुशाग्र बुद्धि
tentative	ten-tuh-tuhv	लैटिन	संभावित
camaraderie	Ka-ma-ra-de-ri	फ्रेंच	सौहार्द
Die unterschrift	Dee oonter- shrift	जर्मनी	हस्ताक्षर
Connoisseur	Kaw-nuh-suh	फ्रेंच	विशेषज्ञ
Vertrag	fehr-tahg	जर्मनी	अनुबंध
garrulous	Ga-ruh-luhs	लैटिन	बातूनी
Ambiance	Am-bee-uhns	जर्मनी	माहौल
altruism	Al-troo-i-zm	लैटिन	परोपकारिता
modicum	Maw-duh-km	लैटिन	छोटी राशि
Der kredit	Dehr kreh-deet	जर्मनी	ऋण

संकलनकर्ता
पी राजशेखर
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय बेंगलुरु

भारतीय संविधान और भाषा

भारतीय संविधान के भाषा सम्बन्धी प्रावधान न केवल प्रशासनिक कार्यों की भाषा तय करते हैं, बल्कि देश की भाषाई विविधता का सम्मान भी सुनिश्चित करते हैं।संविधान के अनुसार, भारत की राजभाषा हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी होगी। शासकीय कार्यों के लिए अंतरराष्ट्रीय रूप वाले भारतीय अंकों का प्रयोग होगा। परन्तु, भारत की भाषाई बहुलता को देखते हुए, अंग्रेज़ी का प्रयोग भी प्रारंभ में 15 वर्षों तक स्वीकार किया गया था, जो आज भी जारी है।संसद में हिंदी या अंग्रेज़ी में कार्य किया जाता है। किसी सदस्य को यदि इन भाषाओं में कठिनाई हो, तो उसे अपनी मातृभाषा में बोलने की अनुमति दी जा सकती है। राज्य विधानमंडलों में भी यही व्यवस्था है, लेकिन गोवा, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश जैसे कुछ राज्यों को अंग्रेज़ी के प्रयोग के लिए विशेष अवधि की छूट दी गई है।

न्यायपालिका में उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों की कार्यवाही मुख्यतः अंग्रेज़ी में होती है। हालांकि, राष्ट्रपति की अनुमति से राज्यों में हिंदी या अन्य राजभाषा का प्रयोग हो सकता है, लेकिन निर्णयों की भाषा पर यह लागू नहीं होता।अनुच्छेद 344 के तहत, राष्ट्रपति समय-समय पर एक राजभाषा आयोग गठित करते हैं, जो हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने और अंग्रेज़ी पर निर्भरता घटाने की सिफारिश करता है। इस पर संसद की एक समिति विचार करती है।संविधान यह भी सुनिश्चित करता है कि कोई भी नागरिक अपनी भाषा में अभ्यावेदन दे सकता है — चाहे वह शिकायत हो या सूचना।

प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर, भाषाई अल्पसंख्यकों के बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था है। इसके अनुपालन की निगरानी हेतु एक विशेष अधिकारी नियुक्त किया गया है।अनुच्छेद 351 सरकार को निर्देश देता है कि वह हिंदी का प्रचार-प्रसार करे और उसे ऐसा रूप दे जो सभी भारतीय भाषाओं की अभिव्यक्ति में सक्षम हो। यह हिंदी संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक एकता का माध्यम बने, जिसमें अन्य भाषाओं और संस्कृत से शब्द लेकर उसे समृद्ध किया जाए।

1. भारतीय संघ की राजभाषा क्या है?
   क) अंग्रेज़ी ख) उर्दू
   ग) हिंदी घ) संस्कृत
2. हिंदी की लिपि संविधान के अनुसार कौन सी होगी?
   क) रोमन ख) देवनागरी
   ग) उर्दू घ) गुरुमुखी
3. सरकारी कार्यों में प्रयुक्त अंकों का रूप क्या होगा?
   क) रोमन अंक ख) अरबी अंक
   ग) भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप घ) देवनागरी अंक
4. संविधान लागू होने के बाद कितने वर्षों तक अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग जारी रखने की अनुमति दी गई थी?
   क) 10 वर्ष ख) 5 वर्ष
   ग) 20 वर्ष घ) 15 वर्ष
5. अनुच्छेद 120 का संबंध किससे है?
   क) उच्च न्यायालय की भाषा ख) संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा
   ग) प्राथमिक शिक्षा घ) न्यायिक निर्णयों की भाषा
6. यदि कोई संसद सदस्य हिंदी या अंग्रेज़ी में बोलने में असमर्थ है, तो उसे किस भाषा में बोलने की अनुमति मिल सकती है?
   क) संस्कृत ख) राजभाषा
   ग) मातृभाषा घ) कोई भी विदेशी भाषा
7. अनुच्छेद 343 किस विषय से संबंधित है?
   क) शिक्षा ख) न्यायपालिका
   ग) संघ की राजभाषा घ) राज्यपाल के विशेषाधिकार
8. अनुच्छेद 344 के अंतर्गत क्या गठित किया जाता है?
   क) राज्यपाल का दल ख) भाषा आयोग
   ग) न्यायिक समिति घ) पंचायती समिति
9. अनुच्छेद 348 के अनुसार उच्चतम न्यायालय में कार्य किस भाषा में होता है?
   क) हिंदी ख) उर्दू
   ग) अंग्रेज़ी घ) संस्कृत
10. संविधान के अनुसार राज्य की राजभाषा कौन तय करता है?
    क) राज्यपाल ख) मुख्यमंत्री
    ग) राष्ट्रपति घ) राज्य का विधान-मंडल
11. संविधान का कौन-सा अनुच्छेद पत्राचार की भाषा से संबंधित है?
    क) 345 ख) 346
    ग) 350 घ) 349
12. किस अनुच्छेद में लिखा गया है कि कोई भी व्यक्ति अपनी भाषा में शिकायत या अभ्यावेदन दे सकता है?
    क) 348 ख) 350
    ग) 351 घ) 347
13. अनुच्छेद 350 क किस विषय से संबंधित है?
    क) हिंदी प्रचार ख) भाषाई अधिकार
    ग) मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा घ) राजभाषा समिति
14. संविधान का कौन सा अनुच्छेद भाषा अल्पसंख्यकों के लिए विशेष अधिकारी नियुक्त करने की बात करता है?
    क) 344 ख) 350
    ग) 350 ख घ) 351
15. अनुच्छेद 351 का मुख्य उद्देश्य क्या है?
    क) अंग्रेज़ी का विकास ख) हिंदी का प्रचार-प्रसार और समृद्धि
    ग) उर्दू का संरक्षण घ) न्यायिक प्रणाली में सुधार

नोट : राजभाषा प्रश्नोत्तरी के उत्तर के लिए पृष्ठ संख्या 21 देखें

संकलनकर्ता:
आदर्श गुप्ता
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय दिल्ली

प्रतिस्पन्दन

दुनिया प्रगति तभी कर पाएगी जब महिलायें आगे बढ़ेंगी। हर महिला एक योद्धा है। इनकी राहों में कितनी भी रुकावटें आएं, वे उन्हें पार करना जानती हैं। वाणी का 144अंक महिला विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सार्वजनिक उपक्रम बैंकों के बीच आनुपातिक रूप से हमारे बैंक में सर्वाधिक महिला कर्मचारी कार्यरत हैं। पत्रिका का आवरण एवं प्रत्येक विषय सार-गर्भित है। प्रत्येक विषय नई सूचना एवं बदलते हुए बैंकिंग के परिप्रेक्ष्य में बदलती हुई घटनाओं को अद्यतित रूप में पेश करता है।

विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका उजागर करते हुए महिलाओं से जुड़े विषय रोचक एवं जागरूक लगे। फ़ोटो फ़ीचर में विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस की झलकियां देखने को मिलीं।

समाज की तरक्की का मानक महिलाओं की तरक्की से ही निर्धारित होता है। वाणी के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

गोपाल एस
मुख्य महा प्रबंधक, हैदराबाद क्षेत्र

आपके बैंक की तिमाही गृहपत्रिका 'वाणी' का महिला विशेषांक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में बैंक की विभिन्न गतिविधियों तथा कामकाजी महिलाओं पर केंद्रित रोचक लेख, कहानियां, लघुकथाएं, गजल, कविताओं जैसी विभिन्न रचनाओं को शामिल किया गया है।

पत्रिका में प्रकाशित माननीय सचिव (आईएएस) श्रीमती अंशुली आर्या जी के प्रेरक संदेश सहित माननीय कार्यपालक निदेशक एवं महा प्रबंधक महोदय का संदेश महिला सशक्तिकरण एवं कामकाजी महिलाओं की जीवनचर्या संबंधी विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हैं।

साथ ही, पत्रिका में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के भव्य आयोजन की झलकियों से प्रतीत होता है कि बैंक में कार्यरत महिलाओं के योगदान और रचनात्मकता को अपेक्षित स्तर पर सराहा गया है। पत्रिका में प्रकाशित भारत की महिला समाज सुधारकः समाज और महिलाओं की स्थिति पर प्रभाव आलेख में भारतीय इतिहास में महिलाओं की भूमिका को दर्शाया गया है, जिससे आज की नारी को भी प्रेरणा और नवचेतना प्राप्त हो सकती है। महिला सशक्तिकरणः विकसित भारत 2047 की आधारशिला आलेख में विकसित राष्ट्र बनाने के लिए महिला सशक्तिकरण की दिशा में कुछ ठोस उपाय एवं रणनीतियों को अपनाने को रेखांकित किया है।

समग्र रूप से गृहपत्रिका 'वाणी' का महिला विशेषांक पठनीय, आकर्षक एवं संग्रहणीय अंक के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस उत्तम अंक के प्रकाशन से जुड़े बैंक के उच्च प्रबंधन, संपादक मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई ।

के राजेश कुमार
महाप्रबंधक, मानव संसाधन प्रबंधन व राजभाषा, प्रधान कार्यालय, बैंक ऑफ महाराष्ट्र

सर्वप्रथम हमारे बैंक को वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार से प्रथम पुरस्कार प्राप्ति के लिए राजभाषा विभाग का हार्दिक अभिनंदन । आशा है कि भविष्य में भी राजभाषा विभाग, हम आइओबियन्स का इसी प्रकार पुरस्कार प्राप्त करते हुए,हमारा मान बढ़ाएगा ।

हमारे बैंक की गृह पत्रिका वाणी का महिला विशेषांक मार्च 2025 प्राप्त हुआ । राजभाषा विभाग द्वारा की गई, इस नवोन्मेशी पहल का हार्दिक स्वागत । 8 मार्च को विश्व महिला दिवस मनाया जाता है । उस पृष्ठभूमि के आधार पर वाणी का यह अप्रतिम विशेषांक प्रकाशित किया गया, जिसमें उन रचनाओं का प्रकाशन हमारी गृह पत्रिका वाणी में किया गया जो महिला लेखकों के द्वारा लिखित थीं । इस प्रकर का विशेषांक प्रकाशित करना स्वयं में यह दिखलाता है कि हमारा बैंक महिला कर्मियों को इस प्रकार का मंच प्रदान करता है, जहाँ से वे अपनी लेखन कला को सभी के समक्ष प्रस्तुत करने में सफल हुई हैं ।

रंजय कुमार मिश्रा
महा प्रबंधक, मुंबई क्षेत्र

आपके कार्यालय की तिमाही गृहपत्रिका वाणी का 144वां अंक पढ़ने का अवसर मिला। प्रस्तुत अंक विषयवस्तु की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध संतुलित एवं विचारोत्तेजक है। सामाजिक, आर्थिक, तकनीकी एवं मानवीय पहलुओं को एक ही मंच पर इतने व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करना निःसंदेह संपादकीय दक्षता का परिचायक है। स्वयं सहायता समूह, महिला सशक्तिकरण, आदि नारी शक्ति के विविध आयामों को उजागर करते हैं। वहीं भाषा आंदोलन, शिक्षा प्रणाली, तथा वैश्विक भूगोल की चुनौतियाँ जैसे आलेख पाठकों को व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। एनपीए नियंत्रण, ऋण स्वीकृति में जवाबदेही एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता जैसे तकनीकी लेखों से व्यावसायिक समझ बढ़ती है। साहित्यिक रचनाएँ तमन्नाएँ बाकी रह गई, श्रद्धांजलि, एक कामकाजी नारी की पुकार तथा "हिन्दी मेरे लिए मेरी त्वचा है" पत्रिका को भावनात्मक गहराई प्रदान करती हैं।

आपकी टीम को इस उत्कृष्ट प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएँ।

आनंद कुमार
उप महा प्रबन्धक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय

प्रतिस्पन्दन

मार्च 2025 में अपने बैंक की त्रैमासिक गृह पत्रिका 'वाणी का 144वाँ अंक महिला विशेषांक के अनुशीर्षक के रूप में प्रकाशित देखकर हर्ष हुआ। यह अंक भारतीय समाज में नारी शक्ति के योगदान और सशक्तिकरण को समर्पित है।

इस अंक का महिला विशेषांक के रूप में प्रकाशन, भारतीय समाज में महिलाओं के योगदान और सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित करना एक प्रशंसनीय पहल है, जो सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देती है।

वाणी के इस अंक ने हमारे माननीय प्रबंध निदेशक व मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अजय कुमार श्रीवास्तव के प्रेरणादायक संदेश के माध्यम से बैंक के भविष्य की दिशा को रेखांकित किया है। साथ ही कार्यपालक निदेशकों श्री जयदीप दत्ता रॉय तथा श्री धनराज टी के दृष्टिकोण और महा प्रबंधक के विचारों ने भी नई प्रेरणा प्रदान की है।

बैंक के 89वें स्थापना दिवस पर संस्थापक श्री एम. सी. टी. एम. चिदंबरम चेट्टियार को श्रद्धांजलि, बैंक के इतिहास और मूल्यों के प्रति सम्मान को प्रतिबिंबित करती है।

सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ और सम्पादकीय टीम को इस उत्कृष्ट अंक के लिए बधाई। हम आशा करते हैं कि "वाणी" भविष्य में भी इसी उत्साह और गुणवत्ता के साथ पाठकों को प्रेरित करती रहेगी।

भवदीय

बिनोद कुमार रजक
मुख्य क्षेत्रीय प्रबन्धक, पटना क्षेत्र

आपके बैंक की हिंदी गृह पत्रिका "वाणी (महिला विशेषांक-2025) का 144वां अंक" प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद!

महिला शक्ति को समर्पित पत्रिका का आवरण पृष्ठ विषयानुरूप है एवं इस विशेषांक को पूर्णतः परिभाषित करता है। पत्रिक की साज-सज्जा एवं कलेवर भी अत्यंत आकर्षक एवं मनोरम है।

पत्रिका में संकलित समस्त रचनाएं विषयानुकूल, ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर "महिला सशक्तिकरणः विकसित भारत 2047 की आधारशिला", "भाषा और पहचानः बांग्ला भाषा आंदोलन की विरासत", "बैंकिंग में साइबर सुरक्षा का महत्व", "सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में ईएसजी का महत्व", "तमन्नाएँ बाकी रह गई" एवं "श्रद्धांजलि" आदि रचनाएँ अत्यंत प्रासंगिक एवं मर्मस्पर्शी हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं आगामी अंक हेतु अशेष शुभकामनाएं।

सादर धन्यवाद!

राजेश कुमार सिंह
सहायक महा प्रबन्धक (राजभाषा), कॉर्पोरेट कार्यालय, इंडियन बैंक

आपके बैंक की हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका 'वाणी' का 144वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद!

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के माह में महिला सशक्तिकरण को समर्पित यह अंक अत्यंत सारगर्भित एवं समसामयिक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख ज्ञानवर्धक हैं एवं आवरण सज्जा अत्यंत आकर्षक है।

श्री राजेन्द्र सिंह, मुख्य क्षेलीय प्रबंधक का आलेख महिलाओं के उन्नयन की गति को दर्शाता है। सुनीता विलियन्स को केंद्र में रखकर सुश्री मुकुल व्यास द्वारा लिखा गया विशेष आलेख भी महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। अन्य दो भाषा आधारित आलेख यथा हिंदी मेरी त्वचा और बांग्ला भाषाः आंदोलन की विरासत हमें हर भाषा का सम्मान करने की सीख देते हैं।

सभी रचनाकारों को उनकी सराहनीय रचना हेतु बधाई तथा संपादक मण्डल को आगामी अंक हेतु अग्रिम शुभकामनाएं।

डॉ हेमलता
मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा), प्रधान कार्यालय, यूको बैंक

गतिविधियाँ

वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यन्वयन हेतु बैंक को वित्तीय सेवाएँ विभाग, भारत सरकार द्वारा प्रदत्त प्रथम पुरस्कार प्राप्त करते हुए **श्री नितेश कुमार सिन्हा**, महा प्रबन्धक (राजभाषा)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योगाभ्यास करते हुए कार्यपालक गण

आइओबी
आपकी प्रगति का सच्चा साथी

आइए एक स्वच्छ भविष्य का निर्माण करें

आइ बी

हरित क्रांति

किसानों के लिए कम लागत वाले ऋण
भारत के लिए स्वस्थ मृदा

- ☑ 2 लाख तक शून्य मार्जिन
- ☑ वैयक्तिकों के लिए 50 लाख तक
- ☑ एफपीओ/एफपीसी के लिए 5 करोड़ तक
- ☑ सबसे कम ब्याज दर
- ☑ रियायती प्रोसेसिंग शुल्क

*नियम एवं शर्तें लागू